नवम्बर 2024 ■ वर्ष : 70 ■ अंक : 02 ■ पृष्ठ : 60 ■ मूल्य : ₹ 70

अहिंसक - नैतिक चेतना का प्रवर प्रतिनिधि

अणुव्रत

बढ़ें...
अणुव्रत-शतक की ओर!

अणुव्रत अनुशास्ता का
अणुव्रत कार्यकर्ताओं को दिशा-दर्शन

अणुव्रत जीवन में है, छोटे-छोटे नियम, त्याग, संकल्प जीवन में हैं, तो मानो आध्यात्मिकता किसी अंश में जीवन में आयी है। अणुव्रत का 75वाँ वर्ष सम्पन्न हो गया। अणुव्रत का काम अब तो और आगे बढ़ रहा है। अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी अणुव्रत के कार्य के लिए एक निर्धारित संस्था है, अणुव्रत न्यास भी है। नशामुक्ति, नैतिकता, संयम, चुनावशुद्धि आदि अणुव्रत के कार्य हैं। ये जैन-अजैन सबके लिए काम के हैं। स्कूलों में, कॉलेजों में, जेलों में, जहाँ अवसर लगे, वहाँ अणुव्रत को ले जाओ। अणुव्रत केवल तेरापंथ भवन में ही नहीं रहे, अणुव्रत को तो चौराहे पर भी जाना चाहिए, अणुव्रत को तो बाजार में रहना चाहिए, अणुव्रत को जेलों में जाना चाहिए। अणुव्रत व्यापक है। न्यायालयों में, दुकानों में, ऑफिसों में, घरों में, परिवारों में, अणुव्रत कहीं भी जा सकता है। अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी एक दायित्व वाली संस्था है। अणुव्रत का जितना प्रचार-प्रसार हो सके, करें। कार्यकर्ता अपने जीवन का कुछ अंश इसी की खातिर लगा दें। अणुव्रत के काम को आगे बढ़ाना है। गुरुदेव तुलसी ने जो कार्य शुरू किया और वह आज भी जीवित है, चल रहा है, यह अच्छी बात है। 75 वर्षों के बाद भी अणुव्रत चल रहा है। अणुव्रत का कार्य आगे बढ़ता रहे।

29 अगस्त 2024 के मुख्य प्रवचन से

■ ■ ■

अखंड भारतीय संस्कृति के आरोहण हेतु हमें अपने आचरण की शुद्धता और आत्मविमर्श की अतीव आवश्यकता है। आज के जीवन में राष्ट्र संत आचार्य तुलसी जी द्वारा प्रशस्त सन्मार्गों के माध्यम से धार्मिक मूल्यों के प्रोत्साहन और संवर्धन के प्रयास प्रशंसनीय हैं। चारित्रिक उन्नयन एवं सम्यक् अभिप्रेरणा हेतु आदर्श लक्ष्यों को सदैव सराहना चाहिए।

-एम. वेंकैया नायडू

■ ■ ■

वर्ष 70 • अंक 02 • कुल पृष्ठ 60 • नवम्बर, 2024

सम्पादक
संचय जैन

सह-सम्पादक
मोहन मंगलम

■ ■ ■

टाइपसेटिंग व लेआउट
मनीष सोनी

क्रिएटिव्स
आशुतोष रॉय

चित्रांकन
मनोज त्रिवेदी

अविनाश नाहर
अध्यक्ष

भीखम सुराणा
महामंत्री

राकेश बरड़िया
कोषाध्यक्ष

सुरेन्द्र नाहटा
संयोजक, पत्रिका प्रसार

:: सदस्यता शुल्क विवरण ::

एक अंक	-	₹ 70
एक वर्षीय	-	₹ 750
त्रैवर्षीय	-	₹ 1800
पंचवर्षीय	-	₹ 3000
दसवर्षीय	-	₹ 6000
योगक्षेमी (15 yrs)	-	₹ 15000

:: बैंक विवरण ::

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी
केनरा बैंक
A/c No. 0158101120312
IFSC : CNRB0000158

:: ऑनलाइन भुगतान के लिए ::

इस क्यूआर कोड को स्कैन करें

अणुविभा

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी
अणुव्रत भवन, 210 दीनदयाल उपाध्याय मार्ग,
नई दिल्ली-110002
anuvrat.patrika@anuvibha.org
www.anuvibha.org
दूरभाष : 011-23233345, मोबाइल : 9116634512

अनुक्रमणिका

प्रेरणा पाथेय

- अणुव्रत का संदेश 07
  आचार्य तुलसी
- नैतिकता की कसौटी 11
  आचार्य महाप्रज्ञ
- श्रेष्ठता का विकास हो 15
  आचार्य महाश्रमण

आलेख

- पहचान अच्छे इंसान की 17
  साध्वीवर्या संबुद्धयशा
- अणुव्रत और नैतिक पुनरुत्थान 21
  विष्णु प्रभाकर
- भारतमाता घट-घट वासिनी 24
  पंडित जवाहरलाल नेहरू
- सफलता का सूत्र... 26
  प्रो. डॉ. आई. एम. खीचा

कहानी

- ...हार नहीं होती 28
  डॉ. पूनम गुजरानी

लघुकथा

- शो पीस 20
  नमिता सिंह 'आराधना'
- सुहाना सफर 27
  राजेश अरोड़ा

काव्य

- डिगें नहीं संकल्प से 20
  भगवती प्रसाद गौतम

अणुव्रत समाचार

- अणुव्रत उद्‌बोधन सप्ताह 37
  अणुव्रत अनुशास्ता की सन्निधि में
- अणुव्रत उद्‌बोधन सप्ताह : एक रिपोर्ट 41
- अणुव्रत बालोदय किडजोन 46
- पर्यावरण जागरुकता अभियान 47
- अणुव्रत बालोदय शिविर 50
- समितियों के समाचार 52
- अणुव्रत संरक्षक 53

विविध

- सम्पादकीय 05
- परिचर्चा 31
- अणुव्रत की बात 51
- पाठक परख 54

- अणुव्रत सिद्धांत, स्वास्थ्य, जीवन–मूल्य एवं अभिप्रेरणा विषयक सामग्री का उपयोग किया जा सकेगा।
- anuvrat.patrika@anuvibha.org पर ही सामग्री प्रेषित करें।
- ईमेल द्वारा संप्रेषित कम्पोज की गयी प्रकाशन सामग्री की Open Word File को प्राथमिकता दी जायेगी।
- फोटो की गुणवत्ता कम होने पर उसे प्रकाशित करने में असमर्थता रहेगी। व्हाटसएप पर फोटो न भेजें।
- अनिमंत्रित सामग्री को लौटाने हेतु बाध्यता नहीं रहेगी।
- प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखकों का निजी चिंतन है। प्रकाशक एवं सम्पादक इसके लिए जवाबदेह नहीं है।
- इस प्रकाशन से सम्बन्धित किसी भी विवाद का न्याय क्षेत्र दिल्ली रहेगा।

75वाँ अणुव्रत अधिवेशन

वर्ष 2024 अणुव्रत आंदोलन के गौरवशाली 75 वर्षों की सफल सम्पूर्ति का वर्ष है। आंदोलन के स्वर्णिम इतिहास का यह एक महत्वपूर्ण पड़ाव है। इसी वर्ष अणुव्रत का 75वाँ वार्षिक अधिवेशन भी आयोजित हो रहा है। अतीत के सिंहावलोकन और भावी योजना निर्माण के साथ ही आंदोलन की दशा और दिशा के निर्धारण में अणुव्रत अधिवेशनों की अहम भूमिका रहती आयी है।

दुनिया में इंसान बढ़ रहे हैं, इंसानियत भी बढ़नी चाहिए, लेकिन घट रही है!

दुनिया में धार्मिक बढ़ रहे हैं, धार्मिकता भी बढ़नी चाहिए, लेकिन घट रही है!

दुनिया में अर्थ बढ़ रहा है अर्थवत्ता भी बढ़नी चाहिए, लेकिन घट रही है!

सामान्य ज्ञान यहाँ धोखा खाता है, गणित की यह पहेली मेरा दिल भी समझ नहीं पाता है!

इंसान का इंसानियत से, धार्मिक का धार्मिकता से और अर्थ का अर्थवत्ता से क्या छत्तीस का नाता है?

अणुव्रत संस्थाओं व अणुव्रत कार्यकर्ताओं को अणुव्रत अनुशास्ता का दिशादर्शन अणुव्रत अधिवेशन का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष रहा है। अब तक के लगभग सभी अधिवेशन अणुव्रत अनुशास्ता की सन्निधि में ही आयोजित हुए हैं। इन अधिवेशनों में लगभग 5 दशक तक आंदोलन के प्रवर्तक परम पूज्य आचार्य श्री तुलसी का पावन सान्निध्य और मार्गदर्शन आंदोलन की सबसे बड़ी ताकत रहा है। परम पूज्य आचार्य श्री महाप्रज्ञ और आचार्य श्री महाश्रमण ने अणुव्रत अनुशास्ता की परम्परा को और भी समृद्ध किया है।

मेरी दृष्टि से, जमीनी स्तर पर काम करने वाले अणुव्रत कार्यकर्ताओं के लिए अणुव्रत अधिवेशन की सबसे अधिक उपादेयता होती है। अधिवेशन में सहभागिता के लिए देश के कोने-कोने से कार्यकर्ता आते हैं और एक नयी ऊर्जा के साथ पुनः अपने-अपने क्षेत्र में लौट कर अणुव्रत की गूँज को फैलाने का प्रयास करते हैं। मैं स्वयं लगभग 35 वर्षों से इन अधिवेशनों का साक्षी रहा हूँ। यहाँ हर कार्यकर्ता को अपनी बात कहने का मौका मिलता है और अन्य कार्यकर्ताओं की बात सुन कर, उनकी कार्यशैली जान-समझ कर वे समृद्ध होते हैं।

आयोजकों के लिए भी ये अधिवेशन अपने लक्ष्य और उद्देश्यों को तथा उनकी पूर्ति के लिए स्थानीय संगठन से अपेक्षाओं को स्पष्ट करने का सहज अवसर होते हैं। स्थानीय मुद्दों व समस्याओं को समझने व उनका समाधान करने का भी यह एक सटीक मंच होता है। साझा अनुभव, साझा चिंतन और साझा भविष्य - यही तो सार तत्त्व है अणुव्रत अधिवेशन का। 8 से 10 नवम्बर 2024 तक आयोजित 75वाँ अणुव्रत अधिवेशन अणुव्रत अधिवेशनों की सुदीर्घ शृंखला में एक मील का पत्थर साबित होगा, यह अपेक्षा सहज ही की जा सकती है।

इस महत्वपूर्ण अधिवेशन का ध्येय वाक्य है - बढ़ें, अणुव्रत-शतक की ओर! यह एक समीचीन विषय है। अधिवेशन के संभागी आने वाले 25 वर्षों को चिंतन में रखते हुए एक नयी दिशा, नयी प्रेरणा और नयी शक्ति प्राप्त करेंगे तो इस अधिवेशन की प्रासंगिकता और ऐतिहासिकता में श्रीवृद्धि ही होगी। अणुव्रत दर्शन के प्रति अणुव्रत अनुशास्ता परम पूज्य आचार्य श्री महाश्रमण द्वारा अनवरत प्रदत्त प्राथम्य और माहात्म्य से यह विश्वास और भी दृढ़तर हो जाता है।

अणुव्रत का दर्शन विश्वजनीन दर्शन है। मानवीयता के मूलभूत मूल्य इस दर्शन की आधारभूमि हैं। यही विशिष्टता अणुव्रत दर्शन को युगानुरूप समाधान प्रस्तुत करने में सक्षम बनाती है। समस्याओं का स्वरूप युगीन परिस्थितियों के बरक्स परिवर्तनशील हो सकता है लेकिन समाधान का स्रोत सदैव स्थायी होता है। यह प्रकृति जन्य होता है, मूल्याधारित होता है। अपेक्षा है कि हम अणुव्रत को वर्तमान व भावी परिप्रेक्ष्य में देखें, समझें और प्रस्तुत करें ताकि इसकी सार्वजनीनता का लाभ हर व्यक्ति को मिल सके।

अणुव्रत अधिवेशन से जुड़ा प्रत्येक कार्यकर्ता इस आयोजन की महत्ता को समझ कर अपना श्रेष्ठतम योगदान देने के प्रति कटिबद्ध हो, अधिवेशन में अणुव्रत जीवनशैली का दिग्दर्शन हो तथा अणुव्रत आंदोलन का भविष्य और भी अधिक उज्ज्वल बने, इसी मंगलकामना के साथ...

सं. जै.
sanchay_avb@yahoo.com

आइए, आप भी इस वैश्विक शृंखला का हिस्सा बनिए। एक जवाबदेह विश्व नागरिक बनने की दिशा में आपका यह दृढ़ संकल्पित कदम मील का पत्थर सिद्ध होगा।

अणुव्रत संकल्प शृंखला

अणुव्रत आचार संहिता

मैं किसी भी निरपराध प्राणी का संकल्पपूर्वक वध नहीं करूँगा।

मैं आत्म-हत्या नहीं करूँगा।

मैं भ्रूण-हत्या नहीं करूँगा।

मैं आक्रमण नहीं करूँगा।

आक्रामक नीति का समर्थन नहीं करूँगा।

विश्व-शान्ति तथा निःशस्त्रीकरण के लिए प्रयास करूँगा।

मैं हिंसात्मक एवं तोड़-फोड़ मूलक प्रवृत्तियों में भाग नहीं लूँगा।

मैं मानवीय एकता में विश्वास करूँगा।

जाति, रंग आदि के आधार पर किसी को ऊँच-नीच नहीं मानूँगा।

अस्पृश्य नहीं मानूँगा।

मैं धार्मिक सहिष्णुता रखूँगा।

साम्प्रदायिक उत्तेजना नहीं फैलाऊँगा।

मैं व्यवसाय और व्यवहार में प्रामाणिक रहूँगा।

अपने लाभ के लिए दूसरों को हानि नहीं पहुँचाऊँगा।

छलनापूर्ण व्यवहार नहीं करूँगा।

मैं ब्रह्मचर्य की साधना और संग्रह की सीमा का निर्धारण करूँगा।

मैं चुनाव के संदर्भ में अनैतिक आचरण नहीं करूँगा।

मैं सामाजिक रूढ़ियों को प्रश्रय नहीं दूँगा।

मैं व्यसन-मुक्त जीवन जीऊँगा।

मादक तथा नशीले पदार्थों - शराब, गांजा, चरस, हेरोइन, भांग, तम्बाकू आदि का सेवन नहीं करूँगा।

मैं पर्यावरण की समस्या के प्रति जागरूक रहूँगा।

हरे-भरे वृक्ष नहीं काटूँगा।

पानी, बिजली आदि का अपव्यय नहीं करूँगा।

अणुविभा

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी

ऑनलाइन जुड़ने के लिए स्कैन करें।

चिल्ड्रन्स पीस पैलेस, राजसमन्द (राजस्थान)
head.office@anuvibha.org ☎ +91 91166 34515, +91 91166 34512

www.anuvibha.org/pledge

आचार्य तुलसी

अणुव्रत का संदेश

अणुव्रत ने उपासना का पक्ष गौण करके आचार-पक्ष को प्रमुखता दी। उसने सर्वधर्म-समन्वय को साकार कर दिया। आज विभिन्न संप्रदायों के लोग समान रूप से अणुव्रती हैं। किसी भी जाति, वर्ण, वर्ग के व्यक्ति के लिए अणुव्रत का द्वार खुला है। बस, शर्त एक है कि जीवन की पवित्रता, सदाचार, मानवता और नैतिकता में उसका विश्वास हो।

अणुव्रत आंदोलन एक संप्रदायनिरपेक्ष आंदोलन है। किसी भी संप्रदाय से संबद्ध व्यक्ति इस आंदोलन के साथ जुड़ सकता है, जीवन-निर्माणकारी इसकी आचार संहिता स्वीकार कर सकता है। यानी किसी संप्रदाय विशेष की उपासना पद्धति में आस्था रखता हुआ व्यक्ति अणुव्रती बन सकता है। एक जैन अणुव्रती बन सकता है तो एक अजैन भी अणुव्रती बन सकता है। एक हिंदू अणुव्रती बन सकता है तो एक मुसलमान भी अणुव्रती बन सकता है। इसी प्रकार एक ईसाई अणुव्रती बन सकता है, एक बौद्ध भी अणुव्रती बन सकता है।

मूलतः विभिन्न संप्रदायों की उपासना पद्धतियों में एकरूपता नहीं है, अनेक भेद-प्रभेद हैं। इसलिए किसी भी एक संप्रदाय विशेष की उपासना को सर्वसम्मत बनाना असंभव है। पर जहाँ आचार का प्रश्न है, वहाँ सभी धर्म-संप्रदाय एकमत हैं। उसमें कोई विवाद जैसी बात नहीं है। अहिंसा, सत्य, अचौर्य, मैत्री, करुणा आदि तत्त्वों को कौन-सा धर्म-संप्रदाय मान्य नहीं करता? सभी करते हैं। और जो इन्हें मान्य नहीं करता, वह धर्म-संप्रदाय हो ही नहीं सकता। मैं नहीं समझता कि इन सबको अस्वीकार करने के बाद धर्म कहाँ बच पाता है।

यह बात ध्यान में रखते हुए अणुव्रत ने उपासना का पक्ष गौण करके आचार-पक्ष को प्रमुखता दी। कहना चाहिए, एक अपेक्षा से उसने सर्वधर्म-समन्वय को साकार कर दिया। आज विभिन्न संप्रदायों के लोग समान रूप से अणुव्रती हैं। संप्रदाय की तरह ही अणुव्रत जाति, वर्ण, वर्ग आदि से भी निरपेक्ष है। किसी भी जाति, वर्ण, वर्ग के व्यक्ति के लिए अणुव्रत का द्वार खुला है। बस, शर्त एक है कि जीवन की पवित्रता, सदाचार, मानवता और नैतिकता में उसका विश्वास हो।

स्वहित में अंतर्निहित है परहित

अणुव्रत व्यक्ति-व्यक्ति से स्वहित का कार्य करने की बात कहता है। आप कहेंगे, यह तो नितांत स्वार्थी मनोवृत्ति जाग्रत करने और उसे प्रोत्साहन देने वाली बात हुई। स्थूल दृष्टि से यह बात ठीक जान पड़ती है, पर जब हम थोड़ी गहराई से ध्यान देते हैं तो यह बात बहुत स्पष्ट रूप में दिखायी देती है कि वस्तुतः स्वहित की प्रवृत्ति में ही परहित अंतर्निहित है। स्वहित का तात्पर्य है - आत्मा का हित।

कोई भी आत्महितगवेषी व्यक्ति हिंसा, चोरी, असत्य, दंभ, धोखा जैसी कोई प्रवृत्ति कैसे कर सकेगा? यदि वह छलना से ऐसी कोई भी प्रवृत्ति करता है तो वास्तव में वह आत्महितगवेषी या आत्मार्थी नहीं है, क्योंकि ऐसा करना तो आत्महित में एकांततः बाधक है। इसलिए सच्चा आत्मार्थी व्यक्ति ऐसा करना तो दूर, ऐसा करने की कोई बात सोच भी नहीं सकता। यदि कदाचित किसी मजबूरी में उसे कोई ऐसी प्रवृत्ति करनी भी पड़ती है तो उसके लिए उसके मन में गहरा अनुताप का भाव होगा, उसे करके वह किंचित भी प्रसन्न नहीं होगा, उसे सही सिद्ध करने का जरा भी प्रयत्न नहीं करेगा।

जब समाज के विभिन्न वर्गों के लोग स्वहित में प्रामाणिकता, नैतिकता, सदाचार का जीवन जीने के लिए संकल्पित हो जाएंगे तो समाज-सुधार और राष्ट्र-सुधार का उद्देश्य स्वयं फलित हो जाएगा। इस अपेक्षा से अणुव्रत की स्वहित में कार्य करने की बात छोटी-सी लगने पर भी परिणाम की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है।

जब कोई आत्महितगवेषी व्यक्ति किसी का अहित नहीं करेगा, तब परहित तो अपने-आप सध जाएगा। उसे अलग से करने की बात ही कहाँ रहती है? यदि एक न्यायाधीश न्यायाधीश की कुर्सी पर बैठकर अन्याय नहीं करता है तो क्या अनायास ही सबको न्याय प्राप्त नहीं होगा? वह तो प्राप्त होगा ही। इसी प्रकार अध्यापक, विद्यार्थी, व्यापारी, राज्यकर्मचारी आदि विभिन्न वर्गों के लोग यदि स्वहित में अप्रामाणिकता, अनैतिकता, भ्रष्टाचार से बचते रहे तो समाज का व्यापक हित स्वयं सध जाएगा।

इस बात का दूसरा महत्वपूर्ण पहलू यह है कि जब समाज के विभिन्न वर्गों के लोग स्वहित में प्रामाणिकता, नैतिकता, सदाचार का जीवन जीने के लिए संकल्पित हो जाएंगे तो समाज-सुधार और राष्ट्र-सुधार का उद्देश्य स्वयं फलित हो जाएगा। इस अपेक्षा से अणुव्रत की स्वहित में कार्य करने की बात छोटी-सी लगने पर भी परिणाम की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है।

वर्ग-संघर्ष क्यों

आज समाज में वर्ग-संघर्ष व्यापक रूप में पनप रहा है। एक वर्ग के मन में दूसरे वर्ग के प्रति घृणा और आक्रोश के भाव पैदा हो रहे हैं। इसका मूलभूत कारण यही तो है कि समाज में स्वहित में प्रवृत्ति करने की भावना का अभाव है। इसके चलते जब एक वर्ग के लोग दूसरे वर्ग के लोगों का शोषण करते हैं, उनके अधिकारों का हनन करते हैं, तब दूसरे वर्ग के लोगों में प्रतिक्रियास्वरूप उस वर्ग के प्रति घृणा और आक्रोश के भाव पैदा होते हैं।

झालावाड़ क्षेत्र की यात्रा के दौरान एक दिन मेरा प्रवास मकाड़देव में हुआ। संतों का आगमन सुनकर वहाँ आदिवासी भाई-बहनों की टोलियां की टोलियां आयीं। मैंने उन्हें सामूहिक रूप में संबोधित किया। उन्हें धूम्रपान, मद्यपान, मांस-भक्षण आदि बुराइयों के दुष्परिणामों से परिचित करवाते हुए उनसे मुक्त होने की प्रेरणा दी। प्रेरणा करने की देर थी। एक-एक करके व्यक्ति खड़े होते गये और समझ-बूझपूर्वक प्रतिज्ञाएं करते गये। इस प्रकार उनमें से अनेक व्यक्तियों ने विभिन्न दुष्प्रवृत्तियों से मुक्ति प्राप्त की।

इस क्रम में उनमें से एक आदिवासी भाई खड़ा हुआ और बोला - "आप एक-एक व्यक्ति को क्या प्रतिज्ञा कराते हैं! मैं आपके समक्ष दृढ़ प्रतिज्ञा करता हूँ कि मेरी पूरी जाति को आप द्वारा बतायी गयी बुराइयों से मुक्त बनाऊँगा।" फिर उसने अपने अंतर की पीड़ा प्रकट करते हुए कहा - "महाजनों के कारण हम अत्यंत दु:खी हैं। ये महाजन हमें ब्याज पर रुपये देते हैं और फिर हमसे डेढ़े-दुगुने लेते हैं। यदि वर्षा के अभाव में किसी समय फसल नहीं होती तो ये लोग हमारी भैंसें, घर आदि जीवनयापन की आवश्यक वस्तुएं नीलाम करवा देते हैं। बाबा! मैं सच कहता हूँ कि हमारी नीयत शुद्ध है। पर फसल न होने की स्थिति में आखिर हम इन्हें देने के लिए रुपये लाएं कहां से? इस प्रकार मूल रकम से कई गुनी ज्यादा रकम चुकाकर भी हम कर्जदार के कर्जदार बने रहते हैं। शोषण का यह क्रम जीवन भर भी बंद नहीं होता। अब आप पधार गये हैं तो शोषण का यह चक्र रोककर हमारा दु:ख दूर करें।"

जब एक वर्ग का दूसरे वर्ग के साथ इस प्रकार का अमानवीय और क्रूरतापूर्ण व्यवहार होगा तो दूसरे वर्ग में उसके प्रति घृणा और आक्रोश के भाव कैसे नहीं पैदा होंगे? और घृणा तथा आक्रोश के ये भाव ही आगे जाकर वर्ग-संघर्ष जैसी स्थितियां पैदा करते हैं। इसलिए यदि समाज को वर्ग-संघर्ष जैसी विकट स्थितियों से बचना है तो जन-जन को अणुव्रत के स्वहित में कार्य करने का सूत्र अपनाना होगा।

जीवन प्राकृतिक सौंदर्य से संपन्न बने

जिस प्रकार प्राकृतिक दृश्यों का सहज सौंदर्य मन को आकर्षित करने वाला होता है, उसी प्रकार यदि व्यक्ति का जीवन भी प्राकृतिक रूप से सुंदर हो तो वह जन-जन को सहज रूप से आकर्षित करने वाला हो सकता है। सहज, सरल और शीलसंपन्न जीवन प्राकृतिक रूप से सुंदर जीवन होता है। उसमें चरित्रनिष्ठा और आचारनिष्ठा की महक होती है।

अणुव्रत आंदोलन जीवन को इस प्राकृतिक सौंदर्य से संपन्न बनाने का कार्य करता है। आप इस आंदोलन की आचार संहिता संकल्प के स्तर पर स्वीकार करें। मैं विश्वास के साथ कह सकता हूँ कि आपका जीवन सहज, सरल और शीलसंपन्न बन जाएगा। आप अनायास रूप में जन-जन के लिए आकर्षण के केंद्र बन जाएंगे।

रोग जितना व्यापक होता है, उसकी चिकित्सा भी उतने ही व्यापक स्तर पर करनी पड़ती है। वर्तमान युग की स्थिति की जब मैं समीक्षा करता हूँ तो एक बात बहुत स्पष्ट रूप से समझ में आती है कि आज चरित्रहीनता का रोग बहुत व्यापक बन गया है। इस रोग का प्रतिकार तभी संभव है, जब इसकी व्यापक और सघन चिकित्सा करने का प्रयत्न किया जाये।

अणुव्रत आंदोलन

यह एक सामान्य-सी बात है कि रोग जितना व्यापक होता है, उसकी चिकित्सा भी उतने ही व्यापक स्तर पर करनी पड़ती है। वर्तमान युग की स्थिति की जब मैं समीक्षा करता हूँ तो एक बात बहुत स्पष्ट रूप से समझ में आती है कि आज चरित्रहीनता का रोग बहुत व्यापक बन गया है। इस रोग का प्रतिकार तभी संभव है, जब इसकी व्यापक और सघन चिकित्सा करने का प्रयत्न किया जाये। अणुव्रत आंदोलन इसी स्तर पर इस रोग की चिकित्सा कर जन-जन को स्वस्थ बनाना चाहता है।

हम यह बात गहराई से समझें कि रोग उन्हें ही सताते हैं, जो सुषुप्त हैं। जागृति का जीवन जीने वालों को रोग नहीं सता सकते, पर मैं यहाँ ऊपरी सुषुप्ति और जागृति की बात नहीं कर रहा हूँ। वह तो शरीर के स्तर की बात है। यहाँ मेरा अभिप्राय आंतरिक सुषुप्ति और जागृति से है। इस अर्थ में असंयमी सुषुप्त है और संयमी जाग्रत। प्रकारांतर से ऐसा कहा जा सकता है कि नैतिक जीवन जीने वाला जाग्रत है और अनैतिकतापूर्ण जीवन जीने वाला सुषुप्त।

अणुव्रत आंदोलन संयम की चेतना तथा नैतिक मूल्यों के प्रति आस्था जगाकर व्यक्ति-व्यक्ति के अंतर में जागृति लाना चाहता है। यह एक अनुभूत सच्चाई है कि आचरण से पूर्व उसके प्रति आस्था की जागृति आवश्यक है, परम आवश्यक है। क्यों? यह इसलिए कि जागरूक व्यक्ति प्रतिकूल परिस्थितियों में भी अपना जीवन सही दिशा में आगे बढ़ाने के लिए चिंतन एवं प्रयत्न करता रहेगा। आज नैतिक आचरण की बात तो बहुत दूर, उसके प्रति निष्ठा भी कहाँ है? यह बात ध्यान में रखते हुए अणुव्रत आंदोलन नैतिक मूल्यों, संयम एवं चारित्र के प्रति जन-आस्था जगाकर समाज और राष्ट्र में आंतरिक जागृति लाने का प्रयास कर रहा है।

शाश्वत आंदोलन

कुछ व्यक्ति अणुव्रत आंदोलन का सामयिक महत्व तो स्वीकार करते हैं, पर इसकी शाश्वतता के प्रति संदेहशील हैं। एक सीमा तक उनका संदेह गलत भी नहीं है, क्योंकि अणुव्रत आंदोलन सामयिक बुराइयों पर प्रहार करके वार्तमानिक स्थितियों का भी परिष्कार करता है, पर यह आंदोलन का गौण रूप है। इससे भी अधिक सशक्त है इसका शाश्वत रूप। बुराई भले सामयिक हो अथवा शाश्वत, वह होगी शाश्वत मूल्यों की विध्वंसक ही। अतः शाश्वत सिद्धांतों के आधार पर ही सामयिक बुराइयों पर प्रहार किया जाता है। पूर्व में अणुव्रत आंदोलन के एक नियम की एक धारा थी – 'मैं जाली राशन कार्ड नहीं बनाऊँगा।' किंतु आज की बदली हुई परिस्थिति में जबकि धान्य पर भी नियंत्रण नहीं रहा, इस धारा की कोई अपेक्षा नहीं है। इसलिए यह धारा निरस्त कर दी गयी है। पर इसके बावजूद आंदोलन के मूल नियम – 'मैं वंचनापूर्ण व्यवहार नहीं करूँगा' की शाश्वतता में कोई परिवर्तन नहीं किया गया है। अतः ज्यों-ज्यों बुराइयों का व्यावहारिक रूप बदलता है, त्यों-त्यों अणुव्रत आंदोलन की आचार संहिता में भी अपेक्षित परिवर्तन होता रहता है। बावजूद इसके, शाश्वत रूप ज्यों-का-त्यों रहता है। भविष्य में भी शाश्वत रूप बदलेगा नहीं। इससे यह बिल्कुल स्पष्ट है कि अणुव्रत आंदोलन शाश्वत है।

आध्यात्मिक आंदोलन

यदि अणुव्रत आंदोलन के मौलिक स्वरूप पर ध्यान दिया जाये तो यह तथ्य सामने आएगा कि यह एक आध्यात्मिक आंदोलन है, धार्मिक आंदोलन है। ऐसा भी कहा जा सकता है कि अणुव्रत जीवन-धर्म है। धर्म को अस्वीकार करने का अर्थ है जीवन को अस्वीकार करना। जो अनात्मवादी हैं, वे आत्मा, परमात्मा, मुक्ति आदि को मानने से इनकार कर सकते हैं, पर अध्यात्म एवं धर्म से मिलने वाली शांति, नवजीवन-शक्ति एवं पवित्रता से नहीं। पर कठिनाई यह है कि कृत्रिमता का आज इतना प्रभाव है कि धर्म जैसा सहज और स्वाभाविक तत्त्व भी असहज और अनावश्यक प्रतीत होता है। अणुव्रत आंदोलन इस बात के लिए सलक्ष्य प्रयत्नशील है कि कृत्रिमता का प्रभाव समाप्त हो तथा सहज जीवन-धर्म का पुनः प्रतिष्ठापन हो।

कठिन है आंदोलन

कुछ लोग अणुव्रत का दर्शन समझते हैं, उसे अच्छा भी मानते हैं, पर उसकी आचार संहिता स्वीकार करने में कठिनाई का अनुभव करते हैं। मैं भी मानता हूँ कि एक अपेक्षा से अणुव्रत आंदोलन कठिन है। और यह मात्र एक अणुव्रत आंदोलन की बात नहीं है, अपितु व्रतों के किसी भी आंदोलन के लिए यह बात लागू होती है। पर साथ ही मैं यह भी मानता हूँ कि व्रत को स्वीकार किये बिना समस्याओं का पार नहीं पाया जा सकता। इसलिए कठिनाई से घबराने की जरूरत नहीं है। जरूरत है संकल्प-चेतना जगाने की। जब व्यक्ति की यह चेतना जाग जाती है, तब व्रतों के स्वीकरण एवं उनकी सम्यक् पालना में उसे एक नयी स्फुरणा और शक्ति का अनुभव होता है। उसके फलस्वरूप व्रतों की पालना के बीच आने वाली कठिनाइयां उसे पराभूत नहीं कर पातीं।

कथनी-करनी में सामंजस्य

अणुव्रत आंदोलन जन-जन में व्याप्त कथनी-करनी की दूरी कम करने के लिए प्रयत्नशील है। उसके छोटे-छोटे संकल्प इसी

अणुव्रत जीवन में संशोधन लाने वाला तत्त्व है। वह हर वर्ग, हर जाति को झकझोर देना चाहता है। यह एक निर्विवाद तथ्य है कि अणुव्रत से हुआ तो हित ही है, अहित तो नहीं हुआ। अणुबमों से तो अहित ही हुआ, हित क्या हुआ? अणुव्रत हर व्यक्ति को समाधान देता है। कुछ ने समाधान पाया भी है। आज लोगों को एक तत्त्व में समाधान चाहिए। अणुव्रत के इन चार अक्षरों में सारे समाधान हैं। अलबत्ता अणुव्रत समाधान तभी देगा, जब आप लेना चाहेंगे।

बात को लक्ष्य करके बनाये गये हैं कि व्यक्ति एक सीमा तक अपनी कथनी और करनी में सामंजस्य स्थापित कर सके। उनकी दूरी क्रमशः पटती चली जाये। इस आंदोलन की उल्लेखनीय विशेषता यह है कि यह नितांत असांप्रदायिक दृष्टिकोण से कार्य कर रहा है। किसी भी संप्रदाय, वर्ग, जाति से संबद्ध व्यक्ति इसकी आचार संहिता स्वीकार कर इसके साथ जुड़ सकता है। इसके इस असांप्रदायिक/सार्वजनीन रूप ने विभिन्न धर्म-संप्रदायों, वर्गों, जातियों के हजारों-हजारों लोगों को अपनी ओर आकृष्ट किया है। इसकी जीवन-निर्माणकारी आचार संहिता को स्वीकार कर वे कथनी-करनी की समानता की दिशा में गति कर रहे हैं। आप भी इसकी आचार संहिता को संकल्प के स्तर पर स्वीकार करें। इससे कथनी-करनी की समानता की दिशा में आपकी गति प्रारंभ हो जाएगी, आप प्रशस्त जीवन जीने का आस्वाद ले सकेंगे।

अणुव्रत युगधर्म है

आज अणुव्रत युगधर्म है। क्यों? यह इसलिए कि वह किसी संप्रदाय-विशेष से जुड़ा हुआ नहीं है। अगर यह भी जुड़ा हुआ होता तो युगधर्म नहीं होता। आप अगर महाव्रती नहीं बन सकते, व्रती भी नहीं बन सकते तो कम से कम अणुव्रती तो बनिए। यदि आप तटस्थ दृष्टि से समीक्षा करें तो पाएंगे कि अणुव्रत के नियम स्वीकार किये बिना मानव, मानव नहीं रहता। आखिर मानवता का कुछ मापदंड तो होना चाहिए। व्यक्ति अगर ब्रह्मचारी न बन सके तो कम से कम व्यभिचारी तो न बने। रक्षक न बन सके तो कम से कम भक्षक तो न बने। अणुव्रत जीवन में संशोधन लाने वाला तत्त्व है। वह हर वर्ग, हर जाति को झकझोर देना चाहता है। यह एक निर्विवाद तथ्य है कि अणुव्रत से हुआ तो हित ही है, अहित तो नहीं हुआ। अणुबमों से तो अहित ही हुआ, हित क्या हुआ? अणुव्रत हर व्यक्ति को समाधान देता है। कुछ ने समाधान पाया भी है। आज लोगों को एक तत्त्व में समाधान चाहिए। अणुव्रत के इन चार अक्षरों में सारे समाधान हैं। अलबत्ता अणुव्रत समाधान तभी देगा, जब आप लेना चाहेंगे।

तुलसी उवाच

शिक्षा का लक्ष्य और जीवन विज्ञान

विद्यार्थी शिक्षा पाने के लिए विद्यालय, महाविद्यालय में जाता है। आगे पढ़ना हो तो विश्वविद्यालय में भी जाता है। उससे पूछा जाये कि वह क्यों पढ़ रहा है? उसकी शिक्षा का लक्ष्य क्या है? उसका संभावित उत्तर होगा - मुझे इंजीनियर, डॉक्टर, वकील, व्यापारी, शिक्षक, वैज्ञानिक इत्यादि बनना है। किसी भी विद्यार्थी का यह उत्तर शायद ही होगा कि उसे मनुष्य बनना है। हो भी नहीं सकता।

किसी भी शिक्षा-संस्थान में ऐसा कोई विभाग है ही नहीं, जिसमें मनुष्यता की सीख दी जाती हो। आज अपेक्षा इस बात की है कि मनुष्य कुछ भी करे और कुछ भी बने, मनुष्यता के आधार को न भूले। वह पढ़े, लिखे, व्यवसाय करे या नौकरी करे, पर मानवीय मूल्यों को विस्मृत न करे।

बड़ी-बड़ी पुस्तकें पढ़कर, परीक्षाएं देकर व्यक्ति डिग्रियां बटोर सकता है, पंडित नहीं हो सकता। पंडित वह होता है, जो प्रेम की लिपि पढ़ता है और प्रेम की भाषा बोलता है। विद्वत्तापूर्ण भाषण देनेवाला व्यक्ति किसी श्रोता पर अपना प्रभाव छोड़ पाये या नहीं, प्रेम के दो आखर बोलकर व्यक्ति संसार को वश में कर लेता है। इस दृष्टि से पुस्तकीय ज्ञान और उपाधियों से भी अधिक मूल्य है प्रायोगिक जीवन का। जिस व्यक्ति का विश्वास प्रायोगिक जीवन में होता है, वही जीवन विज्ञान पढ़ सकता है। जिन लोगों ने जीवन विज्ञान को सुना नहीं, पढ़ा नहीं, समझा नहीं, उनकी उसमें आस्था कैसे हो सकती है। किसी तत्त्व को देखने और अनुभव करने के बाद ही उसमें आस्था का अंकुरण संभव है।

आचार्य महाप्रज्ञ

नैतिकता की कसौटी

सुख से भावित ज्ञान दुःख आने पर समाप्त हो जाता है। दुःख से प्राप्त ज्ञान, दुःख से भावित ज्ञान दुःख आने पर नष्ट नहीं होता। हमारी यह जनभाषा है कि सीधी पूँजी किसी को हस्तगत होती है तो वह खतरा पैदा करती है। वह बहुत सताती है। आज जो अनैतिकता की समस्या है, उसका एक कारण यह भी है।

सामाजिक जीवन जीने वाला व्यक्ति अकेला नहीं जीता, दूसरों के साथ जीता है। दूसरों के साथ सबसे अधिक प्रसंग आता है व्यवहार का। आदमी के व्यवहार का मूल्यांकन करते समय यह प्रश्न आता है कि किस व्यवहार को अच्छा मानें और किसे बुरा मानें? किस व्यवहार को शुभ मानें और किसको अशुभ मानें? किस व्यवहार को सत् और पुण्य मानें और किसको असत् और पाप मानें?

भारतीय चिंतन में व्यवहार की चर्चा पुण्य-पाप, सत्-असत् के आधार पर की गयी है। पश्चिमी आचार-शास्त्र में व्यवहार की चर्चा शुभ और अशुभ के आधार पर हुई है। मूल प्रश्न एक ही है कि अच्छे और बुरे व्यवहार की कसौटी क्या है? क्या हम व्यक्ति की इच्छा को कसौटी मानें या कोई ऐसा मानदंड है जो सार्वभौम कसौटी बन सके? इस कसौटी के प्रश्न पर अनेक शाखाओं ने चिंतन किया है। अनेक मनोवैज्ञानिक और नीतिशास्त्रीय कसौटियां हैं। उनमें एक कसौटी है सुखवाद। आचारशास्त्र में इसको दो भागों में विभक्त किया गया- मनोवैज्ञानिक सुखवाद और नीतिशास्त्रीय सुखवाद। मनोवैज्ञानिक सुखवाद का मूल प्रतिपाद्य यह है कि जिस आचरण से व्यक्ति को सुख मिले, जो सुखद हो, वह नैतिक है। जिस आचरण से दुःख की अनुभूति हो, दुःख मिले, जो दुःखद हो, वह अनैतिक है। स्वभाव से ही सभी प्राणी सुख चाहते हैं, दुःख नहीं चाहते। इस स्वाभाविकता को मनोविज्ञान ने सुख का आधार माना।

आचारांग सूत्र का वाक्यांश है- **'सुहसाया दुहपडिकूला'** सभी सुख चाहते हैं, दुःख किसी को प्रिय नहीं है। सुख प्रिय है, दुःख अप्रिय है। प्रत्येक प्राणी अनुकूल वेदना चाहता है, प्रतिकूल वेदना कोई नहीं चाहता। यह एक स्वभाव है। इस स्वभाव को आचार की, नैतिकता की और व्यवहार की कसौटी बना लिया गया है। इसके आधार पर जो सुखद है, अनुकूल है, वह नैतिकता है और जो दुःखद है, प्रतिकूल है, वह अनैतिकता है।

प्रारम्भिक निष्कर्ष में यह बात बहुत अच्छी लगती है कि वह व्यक्ति नैतिक है जो सुख पहुँचाता है। दुःख देने वाला कभी नैतिक नहीं हो सकता, किन्तु विमर्श करने पर यह कसौटी ठीक नहीं बैठती। यदि हम यह मान लेते हैं कि जो सुखद है, जो सुख देने वाला है, जिससे सुख होता है, वह नैतिक है तो अनेक उलझनें पैदा हो जाती हैं। उससे समाज की व्यवस्था गड़बड़ा जाती है। शराबी को शराब पीने में जैसी अनुभूति होती है, वैसी और किसी बात में

दुःख से आदमी घबराता है। दुःख कोई बुरी बात नहीं है। वह नयी चेतना को जगाने के लिए आता है। नया संकट आता है, आदमी दुःखी बन जाता है और उस दुःख के कारण उसमें नयी जागृति आती है। दुःख में सारे भगवान याद आ जाते हैं। जब सुख आता है तब भक्त भगवानों को सुला देता है, भूल जाता है। इस दृष्टि से दुःख बुरा नहीं होता।

नहीं होती। तो क्या हम मान लें कि शराब सुखद है, सुख देती है, इसीलिए शराब पीने का व्यवहार नैतिक है? यदि इसे नैतिक व्यवहार मान लेते हैं तो फिर अनैतिक कर्म कोई बचेगा ही नहीं।

एक नहीं है सुख की परिभाषा

सुख की परिभाषा एक नहीं है, अनेक हैं। यह भिन्न-भिन्न रुचियों और इच्छाओं पर आधारित है। इसे एक घेरे में बाँधा नहीं जा सकता। हजार व्यक्तियों की सुखानुभूति के हजार प्रकार हो सकते हैं। किसी को क्रोध करने में सुख की अनुभूति होती है तो किसी को दूसरों को छेड़ने में आनन्द और सुख मिलता है तो किसी को गाली देने में, चैलेंज देने में सुख की अनुभूति होती है।

खलील जिब्रान ने एक सुन्दर कथा लिखी है। एक आदमी जा रहा था। उसने एक खेत में हड़प्पा (घास की पुरुषाकृति) देखा। वह उसके पास गया, पूछा - "अरे। तुम रात-दिन यहाँ खड़े रहते हो, क्या थक नहीं जाते? क्या परेशान नहीं होते?"

हड़प्पा बोला- "थकान का अनुभव ही नहीं होता, क्योंकि मुझे पशु-पक्षियों को डराने में बड़ा मजा आता है, सुख मिलता है।"

उस आदमी ने कहा-"अरे! दूसरों को डराने में तो मुझे भी आनंद आता है।"

हड़प्पा बोला - "लगता है, तुम भी मेरी तरह बनावटी आदमी हो।"

सुख की अनुभूति के अनेक निमित्त हैं। किसी को डराने में, किसी को पीटने में, किसी को छेड़ने में, किसी को हँसने में, किसी को रोने में सुख का आस्वाद आता है। यदि इस सुख की अनुभूति के आधार पर नैतिक और अनैतिक व्यवहार की व्याख्या करें, उसे सार्वभौम कसौटी मान लें तो नैतिकता और अनैतिकता के विभाग की आवश्यकता ही नहीं रहेगी। फिर जो भी करें, जैसा भी करें, जिससे सुख मिलता है, वह नैतिकता है। बुरे-भले का विभाग मिट जाएगा। बुरा काम करने वाला भी कहेगा - तुम कौन होते हो मुझे इस काम से रोकने वाले। यह नैतिक काम है, मुझे इससे सुख मिलता है। फिर कोई काम बुरा नहीं होगा। सभी आदमी सुख की दुहाई देकर कुछ भी करते हुए नहीं हिचकिचाएंगे।

जागृति का सूत्र : दुःख

दुःख से आदमी घबराता है। दुःख कोई बुरी बात नहीं है। वह नयी चेतना को जगाने के लिए आता है। नया संकट आता है, आदमी दुःखी बन जाता है और उस दुःख के कारण उसमें नयी जागृति आती है। अनेक भक्त साधकों के प्रार्थना के स्वर हैं - "भगवान! यदि आप मुझे वर देना चाहें तो मेरी मनोकामना पूरी करें कि मुझे दुःख आता रहे।" कुंती ने भगवान से प्रार्थना की कि मुझे दुःख मिले। पूछा गया - "क्यों?" उसने कहा कि दुःख आता है तो आपकी स्मृति होती है। सुख में आपकी विस्मृति हो जाती है। यह दोहा भी इसी का प्रतीक है-

दुःख में सुमिरण सब करे, सुख में करे न कोय।
जो सुख में सुमिरण करे, तो दुःख काहे का होय।।

यह अनुभूति का स्वर है। दुःख में सारे भगवान याद आ जाते हैं। जब सुख आता है तब भक्त भगवानों को सुला देता है, भूल जाता है। इस दृष्टि से दुःख बुरा नहीं होता। पहाड़ पर चढ़ना कठिन होता है, पर ऊपर जाने के पश्चात् सुख की जो अनुभूति होती है, वह नीचे खड़े व्यक्ति को नहीं होती। चढ़ते समय कष्ट होता है, दुःख होता है पर शिखर का स्पर्श करते ही वह भुला दिया जाता है।

स्थायी होता है दुःख से प्राप्त ज्ञान

कुछ लोग कहते हैं - जैन मुनि बहुत कष्ट सहते हैं, दुःख झेलते हैं। ऐसे कष्टमय या दुःखमय जीवन से क्या होना जाना है? जीवन में सुख होना चाहिए। यह एक यथार्थ है कि जिस व्यक्ति ने सुख से जो पाया, वह थोड़ा-सा दुःख आने पर चला जाएगा। एक आचार्य ने लिखा है - **सुहेण भावितं नाणं, दुहे जादे विणस्सति।**

आचार्य कुंदकुंद और उत्तरवर्ती आचार्यों ने इस गाथा का अनुसरण किया है। कहते हैं - सुख से भावित ज्ञान दुःख आने पर समाप्त हो जाता है। दुःख से प्राप्त ज्ञान, दुःख से भावित ज्ञान दुःख आने पर नष्ट नहीं होता। हमारी यह जनभाषा है कि सीधी पूँजी किसी को हस्तगत होती है तो वह खतरा पैदा करती है। वह बहुत सताती है। आज जो अनैतिकता की समस्या है, उसका एक कारण

सीधा धन मिलना भी समस्या पैदा करता है। व्यक्ति को आलसी और विलासी बनाता है। जिस व्यक्ति ने स्वयं धन नहीं कमाया, पसीना नहीं बहाया, पुरुषार्थ नहीं किया, बाप-दादों की कमाई जिसे सीधी मिल गयी, वह यदि बुराइयों से बचे तो विलक्षण बात है और न बचे तो स्वाभाविक बात है, क्योंकि वह धन प्रमाद से मिला है, इसलिए उसे प्रमत्त बनाएगा ही।

यह भी है। बाप का धन बेटे को मिल जाता है। यह वास्तव में एक समस्या है। साम्यवादी शासन प्रणाली में स्वामित्व की सीमा की गयी और उत्तराधिकार की बात समाप्त की गयी कि बाप का धन बेटे को नहीं मिलेगा। यह बात एक सीमा तक उचित है और अनैतिकता के लिए अवरोधक है।

दो भ्रांतियां भारतीय जीवन में

दो भ्रांतियां भारतीय जीवन में चल रही हैं। एक है सात पीढ़ी की चिंता करना और दूसरी है बपौती पर स्वयं का अधिकार होना। जो व्यक्ति सात पीढ़ी को सुखी बनाने की कल्पना से चलता है वह अनैतिक व्यवहार क्यों नहीं करेगा? जब व्यक्ति अपने जीवन की चिंता करता है कि मुझे 50, 60, 90 वर्ष तक जीना है, उस जीवन को कैसे जीऊं, जिससे शांति बनी रहे, इस चिंतन के परिप्रेक्ष्य में दूसरे प्रकार का व्यवहार और आचरण होगा। जो बेटे-पोते को सुखी बनाने की चिंता में जीता है, उसका व्यवहार भिन्न होगा, आचरण भिन्न होगा।

सीधा धन मिलना भी समस्या पैदा करता है। व्यक्ति को आलसी और विलासी बनाता है। जिस व्यक्ति ने स्वयं धन नहीं कमाया, पसीना नहीं बहाया, पुरुषार्थ नहीं किया, बाप-दादों की कमाई जिसे सीधी मिल गयी, वह यदि बुराइयों से बचे तो विलक्षण बात है और न बचे तो स्वाभाविक बात है, क्योंकि वह धन प्रमाद से मिला है, इसलिए उसे प्रमत्त बनाएगा ही। उसे यह अनुभव ही नहीं है कि पैसा कैसे कमाया जाता है, इसीलिए वह पैसे को पानी की तरह बहाने में नहीं हिचकिचाता। यह प्रवृत्ति उसे बुराइयों में ढकेलती है।

जरूरी है सुखवादी चिंतन का बदलना

इन समस्याओं के संदर्भ में जब हम नैतिकता की बात करते हैं तो सुखवादी और सुविधावादी चिंतन को भी बदलना जरूरी होता है। सीधा मिला हुआ या सुख से मिला हुआ धन पग-पग पर खतरा उपस्थित करता है। जो व्यक्ति अपने पुरुषार्थ के द्वारा कष्ट सहकर कमाता है, उसका धन दु:ख पड़ने पर भी नष्ट नहीं होता और सुख से प्राप्त धन शीघ्र खत्म हो जाता है। इसलिए यह अनुभव वाणी है कि सुख से भावित ज्ञान या सुख से भावित प्राप्ति दु:ख आने पर चली जाएगी। दु:ख से भावित ज्ञान या प्राप्ति दु:ख-काल में जाती नहीं, साथ देती है। जो सैनिक सदा आराम-तलबी का जीवन बिताते हैं, वे युद्ध की वेला में विजयी नहीं बन सकते। जिन सैनिकों ने कष्ट सहा है, अपने आपको कष्टों में खपाया है, वे विकट स्थिति में भी विजय पा लेते हैं। जर्मनी ने अफ्रीका पर आक्रमण किया। सैनिक लड़खड़ा गये, क्योंकि वे वहाँ की गर्मी को बर्दाश्त नहीं कर सके। वे ठंडे मुल्क के वासी थे। उन सैनिकों को उस गर्मी में रखा गया, उस गर्मी से अभ्यस्त किया गया और फिर सफलता मिल गयी।

सुविधा और मूर्च्छा

एक संन्यासी, तपस्वी, साधक या मुनि को कष्ट सहने पड़ते हैं, दु:ख सहने पड़ते हैं, कठोर जीवन जीना होता है, अभाव का जीवन जीना होता है। यह तथ्य है। जब तक ऐसा जीवन नहीं जिया जाता तब तक मूर्च्छा भंग नहीं होती और मूर्च्छा-भंग के बिना सफलता नहीं मिलती। मूर्च्छा को तोड़ने के लिए कठोर जीवन जीना एक अनिवार्यता है। सुविधा मूर्च्छा को पुष्ट करती है, उसे बढ़ाती है। जिस व्यक्ति ने सुविधा का जीवन जिया है, उसकी मूर्च्छा बहुत सघन हो जाती है।

सुविधा दो प्रकार की होती है - शारीरिक सुविधा और मानसिक सुविधा। ये दोनों मूर्च्छा को बढ़ाती हैं। इस सघन मूर्च्छा को तोड़ना फिर कठिन हो जाता है। जब तक कष्ट और दु:ख को सहने की क्षमता, प्रतिकूल परिस्थिति को झेलने का साहस नहीं आता, तब तक मूर्च्छा भंग नहीं हो सकती।

इस समीक्षा के आधार पर यह कसौटी ठीक नहीं बैठती कि जो सुखद है, वह नैतिक है और जो दु:खद है, वह अनैतिक है। हमारे ऐसे अनेक व्यवहार हैं, जो दु:ख देने वाले होकर भी नैतिक हैं और बहुत सारे ऐसे व्यवहार भी हैं जो सुखद होने पर भी नैतिक नहीं हैं। इसलिए मनोवैज्ञानिक सुखवाद की कसौटी उचित नहीं लगती। यह कहा जा सकता है कि प्रत्येक प्राणी सुख चाहता है, यह स्वाभाविकता है किन्तु यह कसौटी नहीं बन सकती नैतिकता की।

बाधा है इच्छा

एक बार एक विद्वान ने तेरापंथ के आद्य प्रवर्तक आचार्य भिक्षु द्वारा मान्य अहिंसा की समीक्षा करते हुए लिखा - "भगवान महावीर ने कहा है कि सभी प्राणी सुख चाहते हैं, दु:ख कोई नहीं चाहता, इसलिए सबको सुख दो और आचार्य भिक्षु कहते हैं कि सुख देना धर्म नहीं है।" मेरा मानना है कि भगवान के कथन का तात्पर्य ठीक से नहीं समझा गया। जीव सुख चाहते हैं, दु:ख नहीं चाहते, यह स्वाभाविकता का निरूपण है। इसका अर्थ यह नहीं है कि सुख दो, दु:ख मत दो। भगवान ने केवल परिस्थिति का निरूपण किया है, मानसिकता का निरूपण किया है। किन्तु प्रत्येक प्राणी की सुख पाने और दु:ख न पाने की इच्छा निम्नस्तरीय इच्छा है। उच्चस्तरीय विकास होने पर यह इच्छा नहीं होती, समाप्त हो जाती है। इच्छा का इतना परिष्कार हो जाता है कि मोक्ष की

यह आदमी की शाश्वत इच्छा है कि वह नरक नहीं चाहता, स्वर्ग चाहता है। नरक का अर्थ है दुःख। स्वर्ग का अर्थ है सुख। यह इच्छा निरंतर बनी रहती है, किन्तु जिस व्यक्ति ने नैतिकता और अध्यात्म को समझा है, चेतना के परिष्कार को समझा है, वह स्वर्ग के लिए भी लालायित नहीं रहता। उसमें एक नयी चेतना जाग जाती है।

इच्छा भी समाप्त हो जाती है। साधना की उच्च भूमिका पर पहुँचा हुआ साधक इच्छा-मुक्त हो जाता है। उसमें मोक्ष की इच्छा भी शेष नहीं रहती। वास्तव में मोक्ष की प्राप्ति तभी होती है जब यह इच्छा भी समाप्त हो जाती है। मोक्ष की इच्छा भी एक बाधा है। इच्छा करना बाधा है। जो व्यक्ति स्वयं में लीन होता है, अपने आप में लीन होता है, उसमें इच्छा की बात समाप्त हो जाती है। उस व्यक्ति में सुख की भावना भी समाप्त हो जाती है। सामान्य आदमी कहता है, मैं धर्म करूँगा तो मुझे स्वर्ग मिलेगा। एक भाई ने कहा, "महाराज! मैं साठ वर्ष का हो रहा हूँ। मुझे ऐसा कोई गुर बता दें जिससे नरक न मिले, स्वर्ग मिले।"

यह आदमी की शाश्वत इच्छा है कि वह नरक नहीं चाहता, स्वर्ग चाहता है। नरक का अर्थ है दुःख। स्वर्ग का अर्थ है सुख। यह इच्छा निरंतर बनी रहती है, किन्तु जिस व्यक्ति ने नैतिकता और अध्यात्म को समझा है, चेतना के परिष्कार को समझा है, वह स्वर्ग के लिए भी लालायित नहीं रहता। उसमें एक नयी चेतना जाग जाती है।

क्या है नैतिकता की कसौटी?

प्रश्न होता है कि नैतिकता की कसौटी क्या होगी? हम किस व्यवहार को अच्छा मानें? सुख या दुःख के आधार पर किसी व्यवहार को अच्छा या बुरा न मानें तो फिर और उपाय ही क्या है? सत्-असत, भला-बुरा, शुभ-अशुभ की कसौटी क्या होगी?

इस विषय में दो चिंतन प्रस्तुत होते हैं। पहला चिंतन तो यह है कि जिस देश और काल में जिस कर्म या व्यवहार को समाज के द्वारा या बड़े जन-समूह के द्वारा वांछनीय मान लिया गया, वह नैतिक है और जो व्यवहार अवांछनीय माना गया, वह अनैतिक है। यह लौकिक स्वीकृति है। यह नितांत व्यावहारिक कसौटी है, सार्वभौम कसौटी नहीं है। इसे यथार्थ नहीं कहा जा सकता। चार-पाँच हजार वर्षों के इतिहास में नैतिकता की अनेक परिभाषाएं हुई हैं और वे परस्पर बहुत टकराती हैं। वे बदलती रहती हैं, एकरूप नहीं रहतीं। एक देश और काल में एक कर्म को नैतिक माना गया और वही कर्म दूसरे देश काल में अनैतिक मान लिया गया, यह सारा व्यवहार के धरातल पर होता है। इसलिए ये सारी व्यावहारिक कसौटियां हैं।

नैतिकता की वास्तविक कसौटी

हम नैतिकता की वास्तविक कसौटी की चर्चा करें जो सार्वभौम है, देशातीत और कालातीत है, वह कसौटी है - **जे निज्जिण्णे से सुहे।** यह वास्तविक कसौटी है। जिस आचरण के द्वारा बन्धे हुए संस्कार क्षीण होते हैं, निर्जीर्ण होते हैं, वह आचरण है नैतिक। जिस आचरण से संस्कार बँधते हैं, सघन होते हैं, वह है अनैतिक। जो निर्जरा है, वह सुख है और जो बंध है, वह दुःख है। सुख और दुःख की यह वास्तविकता ही नैतिकता की कसौटी बन सकती है, किन्तु सुख और दुःख की स्वीकृति में बहुत अन्तर आ गया।

सुख और दुःख मान लिया गया वैयक्तिक इच्छा के अनुसार या सामूहिक इच्छा के आधार पर। इच्छा आधारित सुख और दुःख नैतिकता या अनैतिकता की वास्तविक कसौटी नहीं बन सकता। जो सुख कर्म-विलय से और जो दुःख कर्म-बंध से होता है, वह नैतिकता-अनैतिकता का आधार बनता है। निर्जरण सुख है, बंधन दुःख है।

निवृत्ति से अनुस्यूत प्रवृत्ति नैतिक

प्रवृत्ति के तीन विभाग हैं - सत् प्रवृत्ति, असत् प्रवृत्ति और निवृत्ति या अप्रवृत्ति। विवेक कैसे हो कि अमुक रुचि सत् है और अमुक रुचि असत् है। एक नियम बना कि जिस प्रवृत्ति के साथ गुप्ति होती है, वह प्रवृत्ति सम्यक् है, वह व्यवहार सत् है। जिस प्रवृत्ति के पीछे गुप्ति नहीं होती, वह व्यवहार असत् है। गुप्ति का अर्थ है - संयम, निवृत्ति। हमारी जिस प्रवृत्ति के साथ मन, वाणी और शरीर की गुप्ति होती है, वह प्रवृत्ति सम्यक् होती है, वह व्यवहार और आचरण नैतिक बन जाता है। जिस प्रवृत्ति के पीछे गुप्ति नहीं होती, असंयम होता है, वह मन, वाणी और काया का व्यवहार अनैतिक बन जाता है, असत् बन जाता है। यह वास्तविक कसौटी है। निवृत्ति से अनुस्यूत या अनुप्राणित प्रवृत्ति नैतिक होती है और निवृत्ति से शून्य प्रवृत्ति अनैतिक होती है।

यही शुभ-अशुभ, सत्-असत, अच्छे-बुरे व्यवहार की कसौटी बनती है। यह सार्वभौम है, व्यापक है, देशातीत और कालातीत है। इसमें न व्यक्ति का भेद है, न देश और काल का भेद है, न किसी धर्म और सम्प्रदाय का भेद है। यदि इस कसौटी के आधार पर हम व्यवहार की समस्या को सुलझाएं, व्यवहार का मूल्यांकन करें तो नैतिकता की धारणा को स्पष्ट करने में बड़ी सुविधा होती है।

यदि हम व्यापक दृष्टिकोण से चिन्तन करें तो नैतिकता की हमारी यह कसौटी व्यवहार के मूल्यांकन में बहुत सहयोगी होगी। यह सुचिंतित और सुपरीक्षित भी होगी। इसके आधार पर सारे व्यवहार की समस्या को सुलझाया जा सकेगा।

श्रेष्ठता का विकास हो

श्रेष्ठ आदमी जैसा आचरण करता है, उसे देखकर दूसरे भी वैसा आचरण करने लगते हैं। सामान्य आदमी उसे प्रमाण मानकर वैसा आचरण करने का प्रयास करता है। इसलिए जो श्रेष्ठ हैं उनका फर्ज होता है कि वे अपनी श्रेष्ठता को बनाये रखें, वर्द्धमान रखें और दूसरे लोग उनकी श्रेष्ठता को आदर्श मानकर अपनी श्रेष्ठता का विकास करें।

हमारी दुनिया में कुछ श्रेष्ठ लोग होते हैं, कुछ मध्यम या सामान्य स्थिति के लोग होते हैं और कुछ अधम स्थिति के लोग भी मिल जाते हैं। यह दुनिया बहुरंगी है। बहुरत्ना वसुंधरा धरती में अनेक प्रकार के रत्न हैं तो कुछ कंकर भी हैं। एक समूह या समाज जहाँ होता है वहाँ कुछ व्यक्ति बहुत अच्छे मिल सकते हैं तो कुछ व्यक्ति सामान्य की रेखा से नीचे भी मिल सकते हैं। सामान्य की रेखा से नीचे का मतलब है जिनमें स्थिरता की कमी है, शालीनता की कमी है, सभ्यता की कमी है, विनयशीलता भी नहीं है, जिनमें ज्ञान या समझ का भी अभाव है और जिनकी वृत्तियों में उत्तेजना का प्राबल्य है। जिस प्रकार समुद्र में अच्छी चीजें मिलती हैं तो अवांछनीय और अनपेक्षित चीजें भी मिल सकती हैं। उसी प्रकार एक समूह में सब कुछ समान नहीं होता, कुछ बातों में समानता हो सकती है तो कुछ बातों में असमानता भी देखने को मिलती है। परन्तु श्रेष्ठ व्यक्तियों को देखकर मध्यम स्थिति वाले व्यक्ति स्वयं में श्रेष्ठता का विकास कर सकते हैं। श्रीमद्भगवद्गीता में कहा गया -

यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जनः।
स यत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते।।

श्रेष्ठ आदमी जैसा आचरण करता है, उसे देखकर दूसरे भी वैसा आचरण करने लगते हैं। सामान्य आदमी उसे प्रमाण मानकर वैसा आचरण करने का प्रयास करता है। इसलिए जो श्रेष्ठ हैं उनका फर्ज होता है कि वे अपनी श्रेष्ठता को बनाये रखें, वर्द्धमान रखें और दूसरे लोग उनकी श्रेष्ठता को आदर्श मानकर अपनी श्रेष्ठता का विकास करें। श्रेष्ठ व्यक्ति अगर गलतियां करता है तो दूसरों को भी फिर गलत सीखने का मौका मिल सकता है।

गणित का एक अध्यापक था। वह थोड़ा नाक से बोलता था। एक दिन स्कूल में इंस्पेक्टर आया और उसने प्रथम कक्षा के विद्यार्थी से कहा - "हिन्दी में गिनती बोलो।" एक लड़का खड़ा हुआ, उसने थोड़ा अन्य प्रकार का उच्चारण किया- "एंक, दों, तींन।" इंस्पेक्टर ने सोचा, इसने उच्चारण गलत किया है। दूसरे विद्यार्थी से पूछा तो उसने भी वैसा ही उच्चारण किया। तीसरे, चौथे आदि सब विद्यार्थियों का एक समान उच्चारण था। सब नाक से बोल रहे थे। तब इंस्पेक्टर ने प्रधानाध्यापक से कहा- "क्या बात है मास्टर साहब! सारे विद्यार्थी गलत उच्चारण कैसे कर रहे हैं?" तब प्रधानाध्यापक ने धीरे से कहा - "महोदय! यह मेरी भूल है। हमने गणित का अध्यापक अभी नियुक्त किया है। उसे नाक से बोलने की आदत है। वह जैसा उच्चारण करता है, वैसा ही उच्चारण इन विद्यार्थियों ने सीख लिया।"

यानी जो आदर्श है, जो प्रशिक्षक है, श्रेष्ठ है, वह गलतियां करेगा तो दूसरे भी गलतियां सीख लेंगे। वह किसी को गलत बात

श्रेष्ठ व्यक्ति को परिष्कृत होना चाहिए क्योंकि उसका अनुवर्तन दूसरे करते हैं। श्रेष्ठ कई तरह के होते हैं। एक संस्था/संगठन में जो प्रमुख लोग हैं, वे वहाँ के लिए श्रेष्ठ हैं। एक समाज में जो मुख्य लोग हैं, वे समाज के लिए श्रेष्ठ हैं। वे जैसा कार्य करते हैं, उसका प्रभाव दूसरों पर पड़ता है।

बता देता है तो कितनों के दिमाग में गलत धारणा बन जाती है। इसलिए श्रेष्ठ व्यक्ति को परिष्कृत होना चाहिए क्योंकि उसका अनुवर्तन दूसरे करते हैं। श्रेष्ठ कई तरह के होते हैं। एक संस्था/संगठन में जो प्रमुख लोग हैं, वे वहाँ के लिए श्रेष्ठ हैं। एक समाज में जो मुख्य लोग हैं, वे समाज के लिए श्रेष्ठ हैं। वे जैसा कार्य करते हैं, उसका प्रभाव दूसरों पर पड़ता है। इसलिए गीताकार ने कहा है - श्रेष्ठ व्यक्तियों का जीवन इतना अच्छा होना चाहिए कि वास्तव में वह प्रमाण बन जाये और दूसरे उनके जीवन से सीखकर अपना जीवन भी अच्छा बना सकें।

तेरापंथ धर्मसंघ के आद्य संस्थापक आचार्य भिक्षु एक क्रांतिकारी व्यक्ति थे। उनकी साधना दिव्य थी, पुनीत थी। आगम साहित्य में बताया गया है कि जिसकी माँ सिंह का स्वप्न देखती है, वह बच्चा मांडलिक राजा या भावितात्मा अणगार बनता है। आचार्य भिक्षु की संसारपक्षीया माँ को भी गर्भागमन के समय सिंह का स्वप्न आया था। जब भीखणजी दीक्षा के लिए तैयार हुए तो उनकी माँ ने दीक्षा की अनुमति नहीं दी। भीखणजी बड़े बुद्धिमान थे। वे अपने गुरु रघुनाथजी महाराज को घर लेकर आये।

आचार्य रघुनाथजी - "दीपांबाई ! भीखण की दीक्षा लेने की भावना है। तुम्हारी क्या इच्छा है?"

दीपां बाई - "बापजी महाराज। मैं दीक्षा की आज्ञा नहीं दूँगी।"

आचार्य रघुनाथजी - "क्यों बाईजी! क्या बात है?"

दीपां बाई - "जब यह गर्भ में आया था तब मुझे सिंह का सपना आया था और मैंने सुना है जिसकी माँ सिंह का स्वप्न देखती है वह बच्चा राजा बनता है। मैं तो राजमाता बनने वाली हूँ। मैं इसको दीक्षा की आज्ञा कैसे दूं?"

आचार्य रघुनाथजी - "दीपां बाई! जिसकी माँ शेर का स्वप्न देखती है, उसका बेटा या तो राजा बनता है अथवा भावितात्मा अणगार बनता है। मुझे लगता है तुम्हारा बेटा साधु बनकर शेर की तरह दहाड़ेगा।"

यह बात आचार्यश्री के मुख से सुनकर दीपां बाई बोल उठी - "गुरुदेव ! मैं तैयार हूँ, आप इसे दीक्षा देने की कृपा करें।"

ऐसा प्रतीत होता है आचार्य भिक्षु भावितात्मा अणगार थे। उनकी चेतना साधना से भावित थी। उनके पास उत्कृष्ट कोटि का ज्ञानबल और तर्कबल था। दिन-रात उनका मस्तिष्क आगम स्वाध्याय करने, साधना करने, व्याख्यान देने, लोगों को समझाने और ग्रन्थों की रचना करने में लगा रहता था। उनकी आत्मा साधना से, शास्त्रीय ज्ञान से और तार्किक ज्ञान से भावित हो चुकी थी। ऐसे भावितात्मा अणगार आचार्य भिक्षु तेरापंथ संघ के संस्थापक बने। प्रारंभ में तो उनको आशा भी नहीं थी कि कोई समुदाय चलेगा। उन्होंने सोचा था हमें अपनी साधना करनी है और अपनी आत्मा का कल्याण करना है। फिर जब लगा कि एक संगठन बन रहा है, समुदाय आगे चलने वाला है तो फिर भीखणजी ने संगठन की चिरायुष्कता की दृष्टि से, संगठन की निर्मलता और मजबूती की दृष्टि से कुछ मर्यादाओं का भी निर्माण किया। हम लोग चतुर्दशी के दिन बहुधा उन मर्यादाओं का वाचन करते हैं, मर्यादा-पत्र पढ़ते हैं। यह मर्यादा पत्र भी मानो आर्षवाणी जैसा बना हुआ है। हम सभी साधना में आगे बढ़ें, मर्यादाओं के प्रति जागरुकता रखें, यह हमारे लिए श्रेयस्कर होगा।

तुलसी उवाच

सुख-दु:ख

एक भिखारी सड़क पर भीख माँग रहा था। अचानक वह हँसने लगा। उसके निकट से गुजरने वाले एक व्यक्ति ने पूछा- "तुम हँसने का रिहर्सल कर रहे हो या भीख माँग रहे हो?" भिखारी बोला- "भाई ! मैं एक घण्टे से रो-रोकर भीख माँग रहा था, पर किसी ने मेरी ओर देखा ही नहीं। जब से हँसने लगा, मेरे चारों ओर भीड़ इकट्ठी हो गयी। आप भी तो अब ही मेरे पास पहुँचे हैं। क्यों? मुझे अनुभव हो रहा है कि दु:ख में हाथ बँटाने वाला कोई नहीं है। सुख में अपने और पराये सभी निकट हो जाते हैं।"

साध्वीवर्या संबुद्धयशा

पहचान अच्छे इंसान की

हमें यह अनमोल मानव जीवन मिला है। इस मनुष्य जीवन को सार्थक और सफल बनाने पर भी चिन्तन करना चाहिए। इसके लिए लक्ष्य का निर्धारण करना चाहिए। लक्ष्य ऐसा होना चाहिए जो जीवन को सुलझाने वाला हो, जो मानव जीवन को कोई मुकाम दे सके। लक्ष्य ऐसा होना चाहिए जो इस जीवन को ही नहीं, भावी जीवन को भी उन्नत बनाये।

अपने जीवन के प्रारंभिक वर्षों में स्वामी रामतीर्थ लाहौर में रहते थे। उनका झुकाव अध्यात्म की ओर था, परंतु उनके मन में अंतर्द्वंद्व चल रहा था कि गृहस्थाश्रम में रहकर आध्यात्मिक साधना करूं या संन्यास मार्ग अपनाकर। एक दिन सुबह नदी किनारे स्नान कर स्वामीजी घर की ओर लौट रहे थे। मन में उसी बात का चिन्तन चल रहा था और इसी दौरान वे कभी सड़क की दायीं ओर तो कभी बायीं ओर चल रहे थे। सड़क पर एक सफाई कर्मी झाड़ू लगा रही थी। स्वामी जी के कभी इधर, कभी उधर चलने से उस सफाई कर्मी के कार्य में बाधा आ रही थी।

वह परेशान होकर बोली - "अरे! अजीब आदमी हो तुम! कभी इधर, कभी उधर। दोनों तरफ चलने का प्रयत्न क्यों करते हो? कोई एक दिशा क्यों नहीं पकड़ लेते। एक ही दिशा में चलने से आप भी अपनी निश्चित मंजिल पर अच्छे से पहुँच पाएंगे और मेरे कार्य में भी बाधा नहीं आएगी।" उस सफाई कर्मी ने बात दूसरे सन्दर्भ में कही थी परन्तु स्वामी रामतीर्थ के भीतर चल रहे अंतर्द्वंद्व का समाधान मिल गया। उन्होंने उस सफाई कर्मी से कहा - "बहना! तुम ठीक कह रही हो। मुझे एक दिशा पकड़ लेनी चाहिए जो मुझे मेरी मंजिल तक पहुँचा दे।" जीवन में सही दिशा का यानी सही लक्ष्य का चयन करना आवश्यक है।

हमें यह अनमोल मानव जीवन मिला है। इस मनुष्य जीवन को सार्थक और सफल बनाने पर भी चिन्तन करना चाहिए। इसके लिए जीवन में लक्ष्य का निर्धारण करना चाहिए। लक्ष्य हमारा ऊँचा होना चाहिए। कोई सोचे कि मुझे दुनिया का नम्बर वन का Businessman, Doctor, Engineer बनना है तो यह ऊँचा लक्ष्य नहीं है।

लक्ष्य ऐसा होना चाहिए जो जीवन को सुलझाने वाला हो, जो मानव जीवन को कोई मुकाम दे सके। लक्ष्य ऐसा होना चाहिए जो इस जीवन को ही नहीं, भावी जीवन को भी उन्नत बनाये। मनुष्य की यह सहज प्रवृत्ति है कि वह आसान रास्ता खोजता है। वह लक्ष्य भी बनाता है तो धनी होने का, रोब-रुतबे वाली हैसियत पाने का, नाम-यश पाने का। दुनिया में अधिकांश लोग अपना goal उसी दिशा में बनाते हैं जहाँ More Comfort or More Earning हो। इस प्रकार का Goal आदमी को पथ से बार-बार भटका सकता है।

फिर मन में प्रश्न उठता है कि ऊँचा लक्ष्य कौन-सा है? व्यावहारिक स्तर पर बात करें तो हर व्यक्ति का यह लक्ष्य होना चाहिए कि मैं अच्छा इंसान बनूं। यदि अच्छा इंसान बनने का लक्ष्य है तो वह अच्छा डॉक्टर, अच्छा वकील, अच्छा इंजीनियर और

मानव में मानवता होनी चाहिए। हृदय मानवीय गुणों से युक्त होना चाहिए। यदि मानवता नहीं है तो वह इंसान कहने मात्र के लिए इंसान है। वास्तव में मानव वह होता है जिसके हृदय में दूसरों के लिए करुणा हो, संवेदना हो, सहानुभूति हो। जो अपने सुख-सुविधा से भी अधिक दूसरों के हित को महत्व देता हो।

अच्छा व्यापारी भी बन सकता है। जीवन के किसी भी क्षेत्र में शीर्ष पर पहुँचने की पहली शर्त है- 'अच्छा इंसान बनना।'

अच्छा इंसान बने बिना बड़े व्यापारी, बड़े डॉक्टर, बड़े वकील आदि बन जाये तो इंसानियत जीवन से धीरे-धीरे समाप्त होने की संभावना रहती है। व्यक्ति को उचित-अनुचित का ध्यान भी पूर्णरूपेण नहीं रह पाता है। वर्तमान में कोई भी क्षेत्र देख लीजिए, चाहे वह Medical का Field हो, Education का या Business का Field हो। प्रायः सब जगह भ्रष्टाचार, अत्याचार, अन्याय, अपराध बढ़ रहे हैं। इसका कारण बड़ा आदमी बनने का लक्ष्य तो बनाया परन्तु अच्छा इंसान बनने का लक्ष्य नहीं बनाया। अच्छा इंसान बनने के लिए हमें अपने जीवन में Triple 'H' का Formula अपनाना चाहिए।

पहला H है - Humanity अर्थात् मानवता। अच्छा इंसान बनने की पहली शर्त है - मानव में मानवता होनी चाहिए। हृदय मानवीय गुणों से युक्त होना चाहिए। यदि मानवता नहीं है तो वह इंसान कहने मात्र के लिए इंसान है। इंसान को Human Being कहा जाता है। Human Being तो हम हैं ही परंतु हमारा फोकस Being Human पर होना चाहिए। वास्तव में मानव वह होता है जिसके हृदय में दूसरों के लिए करुणा हो, संवेदना हो, सहानुभूति हो। इससे भी आगे की बात सोचें तो श्रेष्ठ मानव वह होता है जो अपने सुख-सुविधा से भी अधिक दूसरों के हित को महत्व देता है। बहुत सुन्दर कहा गया है- "True humanity is not thinking less of yourself. It is thinking of yourself less."

प्राचीन काल में काशी और कोसल दो राज्य थे। एक बहुत मार्मिक घटना आती है। एक आदमी नदी के किनारे रहता हुआ किसी को ढूंढ़ रहा था। तभी उसको दूर एक झोपड़ी दिखायी दी। वहाँ जाकर देखा तो एक संन्यासी ध्यानमग्न बैठा था। उसने संन्यासी से कोसल देश का रास्ता पूछा।

संन्यासी ने कहा, " क्या करोगे उस अभागे देश का रास्ता पूछकर? वह राज्य तो अब दूसरे शासक के नियंत्रण में है।"

उस अपरिचित व्यक्ति ने कहा, "कोसल नरेश होते तो आज उनसे मदद करने का आग्रह करता।"

साधु ने पूछा - "भाई! तुम्हें कैसी मदद चाहिए?"

उस व्यक्ति ने कहा - "नदी पार करते समय पोत पर लदा मेरा सामान और हजारों स्वर्ण मुद्राएं पानी में डूब गयीं। ऐसी स्थिति में एक कोसल नरेश से ही आशा थी कि वे मेरी सहायता करेंगे किंतु...खैर कोई बात नहीं, सब समय का खेल है।"

ऐसा कहकर वह बहुत निराश हो गया। संन्यासी ने कहा - "तुम मेरे साथ काशी चलो। वहाँ के राजा से मैं कुछ सहायता दिला सकता हूँ।" वह आदमी संन्यासी के साथ काशी चल पड़ा। चलते-चलते वे काशी पहुँचे। काशी राजा के दरबार में उपस्थित हुए। राजा ने पूछा - "कहिए महात्मन् ! आप कैसे आये हैं?" संन्यासी ने कहा - "क्षमा करें राजन् ! मैं कोसल देश का पूर्व शासक हूँ। आपने कोसल नरेश को जीवित या मृत लाने वाले को एक हजार स्वर्ण मुद्राएं देने की घोषणा की है। मैं आपके समक्ष उपस्थित हूँ। घोषणानुसार आप एक हजार स्वर्ण मुद्राएं मेरे साथ आये इस व्यक्ति को दे दें।"

काशी नरेश यह सुनकर अवाक् रह गये। कुछ क्षण तक वे बोल नहीं सके। अपने सिंहासन से उठकर कोसल नरेश के पास आये और बोले - "अपने स्वार्थ के लिए मैं जीवन भर दूसरों का सिर काटने के लिए उद्यत रहा, लेकिन दूसरों के लिए अपना सिर कटाने वाला तो इस धरती पर एकमात्र कोसल नरेश ही है। मैं तुम्हारे इस उच्च मानवीय गुण पर मुग्ध हूँ। कोसल नरेश! तुम्हारा राज्य तुम्हारे हवाले।"

किसी ने ठीक ही कहा है- "Kindness is the best form of humanity." सामान्यतया इतनी उच्च स्तरीय निःस्वार्थ चेतना, परोपकार की भावना का होना कठिन हो सकता है। परन्तु जिनके साथ हम जी रहे हैं, जो हमसे जुड़े हुए हैं, उनके प्रति संवेदना, करुणा और निष्पक्षता होनी चाहिए। उनकी अच्छी और बुरी परिस्थिति को समझ सकें, इतनी विवेक चेतना होनी चाहिए।

अच्छा इंसान बनने के लिए दूसरा H है - Honesty अर्थात् ईमानदारी। अच्छे इंसान का ईमानदार बनना जरूरी है। प्रामाणिकता अच्छे इंसान की महत्वपूर्ण कसौटी है। प्रामाणिकता-अप्रामाणिकता के सन्दर्भ में कई प्रश्न मन में उठते हैं। अप्रामाणिकता क्या है? व्यक्ति अप्रामाणिक कब, कहाँ और क्यों बन जाता है? अप्रामाणिकता को अलग-अलग संदर्भों के माध्यम से समझ सकते हैं। जैसे -

- अप्रामाणिकता का अर्थ है - कहना कुछ, करना कुछ और ही। दिखाना कुछ, देना कुछ और ही। समझना कुछ, समझाना कुछ और ही।

- अप्रामाणिकता का अर्थ है - अपने वचनों से मुकर जाना। अपने कर्त्तव्य को जानते हुए पूरा न करना। देश के कानून को भंग करना। संघ की मर्यादा का उल्लंघन करना।

- अप्रामाणिकता का अर्थ है - अपनी जिम्मेदारी का भार दूसरों पर डालकर Credit खुद लेना। अपनी गलती दूसरों पर मढ़ देना। विश्वास के साथ किसी की बताई हुई गुप्त बात (Secret) को फैला देना।

अप्रामाणिकता का व्यवहार वहाँ होता है जहाँ स्वार्थ होता है। प्रामाणिकता का संबंध है - सत्य व्रत से और अचौर्य व्रत से। जहाँ इन व्रतों का पालन है, वहाँ प्रामाणिकता स्वतः ही व्यवहार में आ जाती है। प्रश्न उठ सकता है कि संसार में रहते हुए हम इतनी ईमानदारी के साथ कैसे जी सकते हैं? यह असंभव वाली बात नहीं है। हमारे धर्मसंघ में अनेक ऐसे श्रावक हुए जिनकी पहचान थी उनकी प्रामाणिकता। रूपचंदजी सेठिया ईमानदार श्रावकों में एक विशिष्ट श्रावक थे। पुराने श्रावकों की ही बात नहीं, आज भी ऐसे कई युवा व्यक्ति हैं जिनके व्यक्तित्व में प्रामाणिकता का गुण अस्थिमज्जा तक रमा हुआ है।

अच्छा इंसान बनने के लिए तीसरा H है- Humility अर्थात् विनम्रता। विनम्रता के गुण के विकास के लिए जरूरी है हर मनुष्य के प्रति हमारे मन में सम्मान के भाव हों। मनुष्य ही नहीं, हर प्राणी के प्रति सम्मान हो। जहाँ सम्मान के भाव हैं, वहाँ परस्परता बढ़ेगी, एक-दूसरे के प्रति आत्मीयता बढ़ेगी। सेवा और सहयोग के गुण विकसित होंगे। एक-दूसरे के प्रति विनम्रता का अर्थ है - एक-दूसरे के लिए सेवा और सहयोग की तत्परता। जिस इंसान में सेवा व सहयोग की भावना है, विनम्रता के संस्कार हैं, उसका व्यक्तित्व अच्छे इंसान का परिचायक है।

परम पूज्य आचार्य श्री तुलसी का अवदान अणुव्रत आन्दोलन हर व्यक्ति को अच्छा इंसान बनने के लिए प्रेरित करता है। वर्तमान में अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति - इन संकल्पों के माध्यम से मानवोत्थान में अपने श्रम, समय और शक्ति का सम्यक् नियोजन कर रहे हैं। यह प्रयास अच्छा इंसान बनाने में कारगर सिद्ध हो रहा है।

प्रेरक दृष्टांत

अमरत्व का विज्ञान

एक बुढ़िया थी। उसके एक पुत्र था। बुढ़िया के जीवन का आधार वही था। अचानक पुत्र की मृत्यु हो गयी। पुत्र-वियोग में बुढ़िया पागल हो गयी। दिन-रात, सोते-उठते, खाते-पीते उसके सामने पुत्र का चेहरा रहता। वह विलाप करती। गहरे दुःख में अपने दिन बिताती।

गाँव में सन्त का आगमन हुआ। बुढ़िया वहाँ गयी और बोली - "महाराज! आपने तप तपा है। आप अपनी तपस्या से मेरा दुःख दूर कर दें। मेरे इकलौते बेटे को जीवित कर दें।"

सन्त ने बुढ़िया को देखा। वह मोह के कारण व्याकुल थी। सन्त ने उसका मोह तोड़ने के लिए एक उपाय सोचा और उससे कहा - "माँ! तुम दुःख क्यों करती हो? तुम्हारा बेटा जीवित हो सकता है। तुम चिन्ता मत करो। बस एक चीज की जरूरत है, वह मुझे ला दो।"

बुढ़िया उत्साहित होकर बोली - "एक क्यों, चार चीज मँगा लो, मेरा बेटा पुनः जी उठे तो मैं सब कुछ कर सकती हूँ।"

सन्त ने बुढ़िया से कहा - "मुझे एक अंगरखा चाहिए। उसे पहनाते ही तुम्हारा पुत्र जी उठेगा। शर्त एक ही है कि वह अंगरखा अमर घर का होना चाहिए। अमर घर अर्थात् जिस घर में कभी किसी की मृत्यु नहीं हुई हो।"

बुढ़िया तेज गति से चली। पूरे गाँव में घूमी। उसे अंगरखा नहीं मिला। वह जहाँ भी जाती, उस घर की महिलाएं उसे एक के स्थान पर चार अंगरखे देने के लिए तैयार हो जातीं, किन्तु अमरता की बात सामने आते ही सब जगह सन्नाटा छा जाता। किसी का पिता, किसी का दादा, किसी का बेटा, किसी का पति, किसी की बहन, किसी की माँ और किसी का भाई। हर घर में मौत का साया उतर चुका था। बुढ़िया समझ गयी कि सन्त ने उसे प्रतिबोध देने के लिए अंगरखा मँगाया है। वह संसार के शाश्वत नियम को समझ गयी और पुत्र के पुनः जीवित होने की आशा छोड़कर रहने लगी।

(आचार्य श्री तुलसी की पुस्तक 'बूँद भी : लहर भी' से)

लघुकथा

शो पीस

नमिता सिंह 'आराधना' - अहमदाबाद

मिस्टर और मिसेज वर्मा की शादी की सालगिरह की पार्टी अपने पूरे शबाब पर थी। दोनों एक-दूसरे की आँखों में झाँकते हुए बड़े प्यार से एक-दूसरे को केक खिला रहे थे। तभी मिसेज वर्मा के हाथ से टकराकर शरबत का एक कीमती गिलास गिरकर टूट गया। यह देखते ही मिस्टर वर्मा ने घबरा कर मिसेज वर्मा का हाथ पकड़ लिया और पूछा, "तुम्हें लगी तो नहीं?"

विजय को लगा कि मिस्टर वर्मा सबके सामने ढोंग कर रहे हैं। मिसेज वर्मा के गिलास तोड़ने पर उन्हें गुस्सा तो बहुत आया होगा लेकिन सबके सामने उन्होंने जज्ब कर लिया होगा। इसलिए मौका पाकर अकेले में उसने मिस्टर वर्मा से कहा, "शरबत का इतना कीमती सेट आज आपकी शादी की सालगिरह के दिन ही बर्बाद हो गया। मिसेज वर्मा को तो पता ही होगा कि यह कितना कीमती सेट था। ध्यान रखना चाहिए था उनको।" कहते हुए उसने मिस्टर वर्मा की आँखों में झाँका कि शायद अब मिस्टर वर्मा की भड़ास बाहर आएगी।

लेकिन उसकी आशा के विपरीत मिस्टर वर्मा ने कहा, "वह तो शरबत का एक मामूली गिलास ही था। कितना भी कीमती हो पर मेरी पत्नी से ज्यादा कीमती तो नहीं। और फिर किस इंसान से गलती नहीं हो सकती। हो सकता है वह गिलास मेरे ही हाथ से गिरकर टूट जाता। तब?"

विजय की पत्नी तनुजा पास ही खड़ी दोनों की बातें सुन रही थी और मेकअप से छुपाये गये अपने चेहरे पर विजय की अँगुलियों के निशान सहला रही थी, जो कल रात गलती से उसके हाथ से एक शो पीस टूट जाने की वजह से उसे उपहार स्वरूप मिले थे।

काव्य

डिगें नहीं संकल्प से

भगवती प्रसाद गौतम - कोटा

समता-ममता के धनी, निर्मल निश्छल संत।
अभिनंदन कैसे करें, गुरु की ज्योति अनंत।।

विचलित बाती देखकर, मुखरित मुख से बैन।
इस मायावी दौर में, दीपक भी बेचैन।।

कंठी, माला, जप नहीं, अगणित शब्द न छंद।
बस, मन-मठ की सादगी, प्रभु की परम पसंद।।

बड़े-बड़े पर्वत डिगे, उखड़े बरगद-नीम।
किंतु न रीती आज तक, गुरु की कृपा असीम।।

किया पुत्र ने शान से, माँ का वो सत्कार।
जबरन जा छोड़ा उसे, वृद्धाश्रम के द्वार।।

घाट-घाट घूमे उधर, दरसे चारों धाम।
इधर पखेरू उड़ गया, रट-रट सुत का नाम।।

शापित शब्द जुड़ाव के, हुए देह-दिल काठ।
जीवन में जब से जुड़े, मोबाइल के पाठ।।

बस्तों से पीठें छिलीं, हुआ दफन सब प्रेम।
क्यों न कहीं मिलती कभी, मम्मी जैसी मेम।।

जीना जग में शान से, यदि अपनों के साथ।
डिगें नहीं संकल्प से, सदा धुले हों हाथ।।

नए चलन संदेश के, हावी अब सर्वत्र।
दफन हुए तारीख संग, डाक-लिफाफे-पत्र।।

विष्णु प्रभाकर

समाज सुधार के लिए शुरू किये गये किसी भी आंदोलन की सफलता का सूत्र है उसकी उपादेयता, प्रासंगिकता और स्वीकार्यता। समाज के सर्वमान्य व्यक्ति यदि उस सुधारवादी आंदोलन की उपादेयता और प्रासंगिकता को मुक्त कण्ठ से स्वीकार कर लेते हैं तो आमजन भी उस आंदोलन के दर्शन का अनुसरण करने की दिशा में अग्रसर होते हैं। अणुव्रत आंदोलन के प्रारंभिक काल से ही तत्कालीन समाज के गणमान्य महानुभावों ने इसकी महत्ता को स्वीकार किया तथा इसे अभिव्यक्ति भी दी। इस माह प्रस्तुत हैं **प्रख्यात साहित्यकार विष्णु प्रभाकर** के विचार:

अणुव्रत और नैतिक पुनरुत्थान

व्रत बाहरी शक्ति द्वारा आरोपित नहीं किये जा सकते। वे तभी कल्याणकारी हो सकते हैं जब वे स्वतः स्फूर्त हों, क्योंकि तब वे आत्म-मन्थन में से उपजेंगे। आत्म-मन्थन आत्म-ज्ञान से ही सम्भव हो सकता है। इसलिए आत्म-ज्ञान के बिना कुछ नहीं है। विज्ञान भी उसके बिना पंगु है।

आज के विज्ञान के युग में नैतिकता सापेक्ष है और वह इसलिए कि विज्ञान स्वयं निरपेक्ष नहीं है। विज्ञान गति दे सकता है, लेकिन दिशा नहीं। उसमें शक्ति है, लेकिन विवेक नहीं। शक्ति की, गति की जीवन में अनिवार्यता है, पर उसकी सत्ता स्वतंत्र नहीं है। उसकी अनिवार्यता किसी के सहारे है और वह सहारा है आत्मबल का। यह एक अद्भुत व्यापार है। स्वतंत्र यहाँ कुछ भी नहीं है। स्वयं स्वतंत्रता नहीं।

उस नारी की कहानी सब जानते हैं जिसने कहा था कि वह सड़क पर खाट बिछाकर सोने को स्वतंत्र है। उत्तर देने वाले ने उत्तर दिया था कि बेशक वह ऐसा करने के लिए स्वतंत्र है, लेकिन जिस तरह वह स्वतंत्र है, उसी तरह मोटर वाला भी उस सड़क पर मोटर चलाने को स्वतंत्र है, भले ही उसके इस व्यापार से नारी के प्राण संकट में पड़ जाएं।

यहीं से स्वतंत्रता की निरपेक्षता समाप्त हो गयी, लेकिन उसकी अनिवार्यता पर कोई आँच आयी हो तो कोई बात नहीं। कहें तो इसी स्थिति को अहिंसा भी कहा जा सकता है क्योंकि स्वच्छन्दता, आकांक्षा को खुला छोड़ना हिंसा है और संयम अर्थात् सावधानी, दूसरे का ध्यान रखना, अहिंसा है। व्रत इसी भावना में से उपजता है। व्रत के बिना संयम, सावधानी और दूसरे का ध्यान रखने की बात सम्भव ही नहीं हो सकती है। यह दूसरी बात है कि ये व्रत बाहरी शक्ति द्वारा आरोपित नहीं किये जा सकते। वे तभी कल्याणकारी हो सकते हैं जब वे स्वतः स्फूर्त हों, क्योंकि तब वे आत्म-मन्थन में से उपजेंगे। आत्म-मन्थन आत्म-ज्ञान से ही सम्भव हो सकता है। इसलिए आत्म-ज्ञान के बिना कुछ नहीं है। विज्ञान भी उसके बिना पंगु है।

यही बात राजनीति के बारे में कही जा सकती है। उसमें नियम है, पर उसके पीछे जो शक्ति है और वह स्पर्धा की शक्ति है अर्थात् शुद्ध हिंसा है क्योंकि जहाँ स्पर्धा है, वहाँ संयम नहीं है। संयम नहीं तो आत्म-ज्ञान कैसा? आत्म-ज्ञान नहीं तो दिशा कौन देगा? फिर तो भटकना ही पड़ेगा। सो विज्ञान और राजनीति आज

आचार की श्रेष्ठता की पुकार नयी नहीं है। युग-युग में नैतिकता और अनैतिकता में संघर्ष हुआ है। यही संघर्ष आज भी है और इस बात की घोषणा करता है कि मनुष्य ने इस भावना को ग्रहण नहीं किया। इसलिए अणुव्रत आन्दोलन के संचालकों का भार और भी बढ़ जाता है कि नैतिकता जड़ न बन जाये, चेतनता उसकी जाग्रत रहे।

भटक ही रहे हैं। और चूँकि शक्ति दोनों के पास है, इसलिए दिशाहीन शक्ति अर्थात् असंयत शक्ति जो कुछ कर सकती है, वही आज हो रहा है। नैतिक अराजकता, स्पर्धा, हिंसा; कुछ भी कहिए, खुलकर खेल रहे हैं।

दूसरे के लिए अपनी स्वतंत्रता का आंशिक विसर्जन त्याग है। राजनीति का जन्म इसी त्याग के आधार पर हुआ था। लेकिन आज वही राजनीति विशुद्ध हिंसा बन गयी है क्योंकि उसमें स्पर्धा का उदय हो गया है और वह इसलिए सम्भव हुआ है कि हमने त्याग को दूसरे के लिए मान लिया है, जबकि वह असल में अपने ही लिए है। क्योंकि अन्ततः जितना कुछ अच्छा-बुरा हम करते हैं, उसकी क्रिया के पीछे जो शक्ति होती है, वह अपनी ही सुरक्षा की भावना में से उपजती है। बेशक उसके परिणाम का प्रभाव दूसरों पर भी पड़ता है। यह स्वार्थ है, लेकिन यही स्वार्थ जब व्यापक बनता है, तब परमार्थ बन जाता है।

स्वार्थ और परमार्थ की विभाजन-रेखा बहुत गहरी नहीं है, क्योंकि स्वार्थ से व्यक्ति कहीं मुक्त नहीं है। लेकिन जब वह अपने स्व को दूसरों के स्व में समा लेता है तो स्व और पर का एकीकरण हो जाता है। यह स्थिति तभी सम्भव हो सकती है, जब आत्म-ज्ञान और विज्ञान दोनों का समन्वय हो। प्रगति के लिए गति और दिशा दोनों की शर्त है।

लेकिन यह प्रश्न का अन्त नहीं है। विज्ञान और राजनीति और कहें तो अर्थनीति क्योंकि आज की राजनीति अन्ततः अर्थनीति ही है, इस हल को स्वीकार नहीं करते। उनका कहना है कि आज जो असदाचार और अनैतिकता है, उसका मूल अभाव - भूख है। बात ठीक जान भी पड़ती है, क्योंकि हिंसा में मोह तो है ही, भले ही वह पैसे से हो या किसी और प्रकार की सत्ता से। पैसे में बड़ी शक्ति है। विज्ञान ने उसकी शक्ति को और भी बढ़ाया है और मोह के कारण वह कुछ के हाथों में जाकर केन्द्रित हो गया है। इस मोह के पीछे विज्ञान अर्थात् बुद्धि की शक्ति है। इस कारण कुछ सर्व सम्पन्न हैं और कुछ सर्वहारा। जब ऐसा है तो विशुद्ध हिंसा है, क्योंकि इसमें एक घोर घृणा है, मोह है, लोभ है और दूसरी ओर ईर्ष्या, प्रतिशोध तथा क्रोध। विरोध यहाँ तक नहीं है, वह आगे है और इसके निराकरण में है। यह स्थिति कैसे मिटे?

निरन्तर स्पर्धा से तो यह मिटेगी नहीं। सर्व सम्पन्न के नाश से भी इसका निराकरण नहीं होगा। इसके लिए तो जो सर्व सम्पन्न हैं, उन्हें केवल गति का ध्यान छोड़कर दिशा का सहारा लेना होगा। अर्थात् उन्हें स्वार्थ के लिए त्याग करना होगा। परमार्थ और त्याग में कुछ को दम्भ की भावना दिखायी देती है। उसका कारण जैसा कि पहले बता चुके हैं केवल यही है कि वह दूसरों के लिए समझ लिया जाता है। जब व्यक्ति यह समझ लेगा कि त्याग में उसी का भला है तो उसमें न दम्भ शेष रहेगा और न पीड़ा। क्योंकि तब न मोह रहेगा, न स्व की सुरक्षा का प्रश्न।

नैतिकता इस प्रकार 'स्व' अर्थात् 'मैं' के रूपान्तर पर निर्भर करती है। 'मैं' अलग कुछ नहीं है, जो कुछ है, वह मानव है। अणुव्रत आन्दोलन का मुख्य आधार भी जहाँ तक हम समझ पाये हैं, यही रूपान्तर है। वह आज के समाज में फैले भ्रष्टाचार को मनुष्य की बुद्धि को जाग्रत करके मिटाना चाहता है। वह बुद्धि को सही दिशा देने के लिए कुछ व्रतों का विधान करता है। स्वयं पर नियंत्रण रखने की भावना जाग्रत करता है। व्रत क्या है, अलग-अलग उनका क्या मूल्य है, यह कुछ बहुत अर्थ नहीं रखता। तत्त्व की बात तो आत्म-ज्ञान द्वारा अपने पर नियंत्रण रखने की है। वह भावना इस आन्दोलन के पीछे है, इसीलिए उसकी उपादेयता असंदिग्ध है।

लेकिन शर्त इस भावना को ग्रहण करने की है। इसके बिना हृदय-परिवर्तन एक स्वप्न, एक दम्भ बनकर रह जाएगा। आचार की श्रेष्ठता की पुकार नयी नहीं है। युग-युग में नैतिकता और अनैतिकता में संघर्ष हुआ है। यही संघर्ष आज भी है और इस बात की घोषणा करता है कि मनुष्य ने इस भावना को ग्रहण नहीं किया। इसलिए अणुव्रत आन्दोलन के संचालकों का भार और भी बढ़ जाता है कि नैतिकता जड़ न बन जाये, चेतनता उसकी जाग्रत रहे। वह पकड़ समझने की शक्ति दे, गला घोंटने की नहीं। क्योंकि विधि-विधानों का बाहुल्य और जटिलता उसी उद्देश्य की हत्या कर देते हैं, जिसके लिए उनका जन्म होता है।

ऐसा होगा तभी जब इसके संचालक आचार्य श्री तुलसी के शब्दों में "अणुव्रती संघ मानव की अन्तर-वृत्तियों को मांजने में बद्ध लक्ष्य हो सकेगा।" उनका यह स्वप्न कि 'अणुव्रत की नींव पर अहिंसक समाज की रचना तो बहुत सम्भव है' निश्चय ही पूरा हो सकता है, पर तभी जब यह शर्त पूरी हो। व्रत साध्य नहीं है, साधन है। समाज-व्यवस्था का परिवर्तन अनिवार्य न हो, आवश्यक अवश्य है।

आज के भ्रष्टाचार से पीड़ित युग में अणुव्रत आन्दोलन का स्वर मरणासन्न मानव के मुख में अमृत डालने जैसा है। एक ओर जहाँ अणुबम के पीछे मनुष्य की बुद्धि विश्व को समूल नष्ट कर देने की धमकी दे रही है, वहीं अणुव्रत आन्दोलन के पीछे मनुष्य का विवेक मानवता की रक्षा के लिए सन्नद्ध हो उठा है। भले ही विवेक का यह स्वर अभी क्षीण हो, पर उसका होना ही आशाप्रद भविष्य का सूचक है।

हेल्थ इंश्योरेंस का सबसे ज़बरदस्त ऑफर !

सिर्फ ₹ 31 प्रतिदिन में 10 लाख का कवर !

5 साल में 50 लाख, 10 साल में 1 करोड़ !

क्लेम आए या न आए, आपका कवर बढ़ता रहेगा !

: सबसे अच्छे फीचर्स :

- सिंगल रूम में वीआईपी ट्रीटमेंट
- कोई ट्रीटमेंट लिमिट नहीं
- कैशलेस हॉस्पिटल से टेंशन-फ्री
- कंस्यूमेबल्स जैसे सभी खर्च कवर
- महंगाई को पीछे छोड़े
- जल्दी क्लेम सेटलमेंट की गारंटी
- यह प्लान 0-80 आयु के लिए उपलब्ध है

: विशेष सूचना :

अपनी पुरानी पॉलिसी को अपग्रेड करने का मौका !
पोर्टेबिलिटी सुविधा से आप पुरानी पॉलिसी के बेनिफिट्स,
पॉलिसी स्टार्ट डेट, और बोनस के साथ इस स्कीम में ट्रांसफर कर सकते हैं।
2 साल पुरानी पॉलिसी वालों के लिए वेटिंग पीरियड नहीं !
अगले दिन से ही क्लेम करने की सुविधा।

बेस्ट पैकेज

फैमिली की उम्र	प्रिमियम
(पति, पत्नी और 2 बच्चे)	10 lakh
35 / 34 / 08 / 02	28000

प्रिमियम GST सहित

6 करोड के कैशलैस क्लेम सेटल : 2023 - 2024

41 लाख
प्रकाश शिशोदिया
दाणी-ना बाजार

35 लाख
महेंद्र बलाई
पाली

32 लाख
इंदरमल धाकड़
बी.पी. रोड

25 लाख
ख्यालीलाल कोठारी
भिवंडी

23 लाख
अर्जुनलाल सांखला
गोरेगांव

22 लाख
सुशील बडाला
ठाणे

15 लाख
दिनेश कछारा
घाटकोपर

13 लाख
रोशन मेहता
उल्हास

11 लाख
मोडीलाल मेहता
उधना

10 लाख
मुकेश सिंघवी
अंधेरी

और भी सैकड़ों क्लेम लिस्ट में...

Ganpat Dagliya
Gold Medalist
TQT - USA

NICE™
INSURANCE LANDMARK
One Stop Insurance Solution in India !

Since 40 Years | 30000+ Happy Clients | 12000+ Claims Solved
Policies : Health | Jewellers | Factory | Building | Life | Travel

हमारी सेवाएँ पूरे भारत में ऑनलाईन द्वारा ले सकते है।

Chirag Dagliya
M.B.A & Harvard Cert.
TQT - USA

300 से अधिक एवार्ड विजेता | क्लेम सर्विस 100% गारंटी पुरे भारत में

A 801/802/803, Shreepati Aradhana, 8th floor, Dr. A. M. Road, Kabutar Khana, Nr. Kalbadevi, Marine Lines (E), Mumbai - 400 002.
Email : info@niceinsure.com | www.niceinsure.com ☎ 022 - 49090022/23/24 Intercom: 5050
+91 98692 30444 | 98690 50031

(प्रथम प्रधानमंत्री की जयंती 14 नवम्बर पर विशेष)

पंडित जवाहरलाल नेहरू

भारतमाता घट-घट वासिनी

हमारे देश की जनता में विविधता दिखायी देती है, अनगिनत बहुलता है हमारे देश में, पर सब तरफ एकत्व की छाप भी है, जिसने हमें युगों से एक रखा हुआ है, भले ही कैसे भी राजनीतिक संकट या दुर्भाग्य हमें झेलने पड़े हों। भारत की स्वाभाविक एकता इतनी ताकतवर है कि कोई भी राजनीतिक विभाजन, कोई भी संकट इस एकता को नहीं मिटा पाया है।

अपने असीम आकर्षण और विविधता के कारण भारत मुझे लगातार मोहित करता रहा है। जितना मैंने भारत को देखा, उतना ही मुझे यह लगा कि किसी के लिए भी भारत को सम्पूर्णता में समझना कितना मुश्किल है। भारत की विशालता ने ही मुझे आकर्षित नहीं किया, उसकी विविधता मात्र से ही मैं नहीं रीझा, बल्कि उसकी आत्मा की गहराई भी मैं कभी नहीं नाप पाया।

हालाँकि कभी-कभी इस गहराई की झांकियां जरूर मुझे ललचाती रहीं। यह एक ऐसी प्राचीन शिला या फलक की तरह था, जिस पर विचारों की एक के ऊपर एक कई इबारतें लिखी थीं, कई दिवास्वप्न उकेरे हुए थे, पर खासियत यह है कि पहले लिखी कोई भी इबारत पूरी तरह न तो गायब हुई थी, न मिटी थी।

यह सब हमारे चेतन अथवा अवचेतन स्व में बना रहा है, भले ही हमें इसका एहसास न होता हो, और इसी से भारत का जटिल और रहस्यमय व्यक्तित्व बना है। आसानी से समझ में न आने वाली और कभी-कभी उपहास करती मुस्कान वाला यह स्फिन्क्स-सा चेहरा सारे भारत में देखा जा सकता है। हालाँकि ऊपरी तौर पर हमारे देश की जनता में विविधता दिखायी देती है, अनगिनत बहुलता है हमारे देश में, पर सब तरफ एकत्व की छाप भी है, जिसने हमें युगों से एक रखा हुआ है, भले ही कैसे भी राजनीतिक संकट या दुर्भाग्य हमें झेलने पड़े हों। भारत की स्वाभाविक एकता इतनी ताकतवर है कि कोई भी राजनीतिक विभाजन, कोई भी संकट इस एकता को नहीं मिटा पाया है।

भारत को, या किसी भी मुल्क को किसी प्रकार की मानव जाति के रूप में देखना असंगत है। मैं ऐसे नहीं देखता। मैं भारतीय जीवन की विभिन्नता और विभेदों से पूरी तरह परिचित हूँ। ये भेद विभिन्न वर्गों, जातियों, धर्मों, वर्णों के हैं, सांस्कृतिक विकास के अलग-अलग स्तरों के हैं। फिर भी, मैं सोचता हूँ एक लम्बी सांस्कृतिक पृष्ठभूमि और जीवन के प्रति एक साफ दृष्टिकोण वाला देश एक ऐसी भावना को विकसित करता है जो अनोखी होती है। और जो उसके सब बच्चों को प्रभावित करती है, भले ही वे आपस में कितने ही अलग-अलग दिखते हों।

भारत की यही बात मैं समझना चाहता हूँ, सिर्फ जिज्ञासा वश नहीं, हालाँकि जिज्ञासा है, लेकिन इसलिए कि मुझे लगता था कि इससे मुझे अपने देश को, अपने लोगों को समझने के लिए एक कुंजी मिलेगी, मेरे विचारों और कार्यों को कोई राह सूझेगी। राजनीति और चुनाव रोजमर्रा की चीजें हैं और इन्हें लेकर हम बेकार की बातों पर उत्तेजित होते रहते हैं, लेकिन यदि हमें भारत

भारत माता का मतलब बहुत बड़ा है। भारत के पहाड़, भारत की नदियां, भारत के जंगल, हमें अनाज देने वाले भारत के खेत, सब हमें प्यारे हैं। पर अंततः जिस बात का कुछ अर्थ है, वे भारत के लोग हैं। यही लाखों-करोड़ों लोग भारत माता हैं, और भारत माता की जय का मतलब, इन सब लोगों की जय है।

के भविष्य का भवन सुरक्षित, मजबूत और खूबसूरत बनाना है तो हमें बुनियाद के लिए गहरे खोदना होगा।

अक्सर अपनी सभाओं में मैं अपने श्रोताओं को अपने इस मुल्क हिंदुस्तान के बारे में बताता हूँ, जिसका नाम भारत भी है। यह पुराना संस्कृत नाम हमारे समाज के पौराणिक पूर्वज के नाम पर रखा गया है। शहरों में मैं शायद ही ऐसा करता हूँ, क्योंकि शहरों के लोग कुछ ज्यादा पढ़े-लिखे होते हैं और ज्यादा तर्कसंगत बातें सुनना पसंद करते हैं, पर हमारी ग्रामीण जनता का दृष्टिकोण कुछ संकुचित होता है। उन्हें मैं अपने इस महान देश के बारे में, जिसकी स्वतंत्रता के लिए हम लड़ रहे हैं, बताता हूँ। यह बताता हूँ कि कैसे इसका हर हिस्सा अलग है, फिर भी यह सारा भारत है। पूर्व से पश्चिम तक, उत्तर से दक्षिण तक यहाँ के किसानों की समस्याएं एक जैसी हैं। उन्हें उस स्वराज की बात बताता हूँ, जो सबके लिए होगा, हर हिस्से के लिए होगा।

मैं उन्हें बताता हूँ कि खैबर दर्रे से लेकर कन्याकुमारी तक की यात्राओं में हमारे किसान मुझसे एक जैसे सवाल पूछते हैं। उनकी परेशानियां एक जैसी हैं। गरीबी, कर्जे, निहित स्वार्थ, जमींदार, सूदखोर, भारी किराया और करों की दरें, पुलिस की ज्यादती। यह सब उस ढांचे में समाया हुआ है जो विदेशी सत्ता ने

ग्रामीण क्षेत्र के लोग हमारे प्राचीन महाकाव्यों, हमारी पौराणिक कथाओं और किंवदंतियों से भली-भाँति परिचित हैं और इसके माध्यम से वे अपने देश को जानते-समझते हैं। हर जगह मुझे ऐसे लोग मिले जो तीर्थयात्रा के लिए देश के चारों कोनों तक जा चुके थे।

हमारे ऊपर थोपा है और इससे छुटकारा सबको मिलना चाहिए। मैं कोशिश करता हूँ कि वे भारत को सम्पूर्णता में समझें- कुछ अंशों में सारी दुनिया को भी, जिसका हम हिस्सा हैं। मैं चीन, स्पेन, अबीसीनिया, मध्य यूरोप, मिस्र और पश्चिम एशिया के मुल्कों में चल रहे संघर्षों की बात करता हूँ। मैं उन्हें रूस और अमेरिका में हुए परिवर्तन की बात बताता हूँ। यह काम आसान नहीं है, पर इतना मुश्किल भी नहीं है जितना मुश्किल मैं समझ रहा था। हमारे प्राचीन महाकाव्यों, हमारी पौराणिक कथाओं और किंवदंतियों से वे भली-भाँति परिचित हैं और इसके माध्यम से वे अपने देश को जानते-समझते हैं। हर जगह मुझे ऐसे लोग मिले जो तीर्थयात्रा के लिए देश के चारों कोनों तक जा चुके थे।

कभी-कभी जब मैं किसी सभा में पहुँचता हूँ तो भारत माता की जय के नारे के साथ मेरा स्वागत किया जाता है। मैं अचानक उनसे पूछ बैठता हूँ कि इस नारे का मतलब क्या है, यह भारत माता कौन है, जिसकी वे जय चाहते हैं, मेरे इस सवाल से लोग हैरान होते हैं। जब उन्हें कोई जवाब नहीं सूझता तो एक-दूसरे को देखते हैं, मुझे देखते हैं। मैं सवाल दुहराता हूँ। तब जाकर इस धरती से युगों से जुड़ा कोई किसान कहता है, भारत माता हमारी धरती है। कौन-सी धरती? उनके गाँव की जमीन या उनके जिले की या सारे भारत की? सवाल-जवाब चलते रहते हैं। फिर वे परेशान होकर मुझसे ही पूछते हैं कि मैं उन्हें भारत माता का मतलब बताऊं।

मैं उन्हें मतलब बताने की कोशिश करता हूँ, कहता हूँ कि भारत माता का मतलब वह सब तो है ही जो वे बता रहे हैं, पर यही सब नहीं है। भारत माता का मतलब बहुत बड़ा है। भारत के पहाड़, भारत की नदियां, भारत के जंगल, हमें अनाज देने वाले भारत के खेत, सब हमें प्यारे हैं। पर अंततः जिस बात का कुछ अर्थ है, वे भारत के लोग हैं। इस विशाल देश में फैले उनके और मेरे जैसे लोग। यही लाखों-करोड़ों लोग भारत माता हैं, और भारत माता की जय का मतलब, इन सब लोगों की जय है। मैं उन्हें बताता हूँ कि आप इस भारत माता का हिस्सा हैं। जैसे-जैसे यह बात उनकी समझ में आती जाती है, उनकी आँखें ऐसे चमकने लगती हैं, जैसे उन्होंने कोई बहुत बड़ी खोज कर ली हो।

प्रो. डॉ. आई. एम. खीवा

सफलता का सूत्र समय प्रबंधन

समय प्रबंधन जीवन को कुशलता से तथा विवेक संगत तरीके से जीने का अनिवार्य अंग है जिसकी अनदेखी निश्चित रूप से प्रतिगामी प्रभाव डालती है। प्रभावी समय प्रबंधन हमें शरीर, मन, बुद्धि व विवेक से सक्षम बनाता है तथा हमारे जीवन-पथ को प्रभावी रूप से प्रशस्त करता है।

समय का संबंध मात्र व्यावसायिक हितों से ही नहीं है अपितु यह हम सभी के साथ अविच्छिन्न रूप से संबद्ध है। जो समय की महत्ता को जानते हैं, वे ही जीवन में सफलता का वरण कर पाते हैं। व्यक्ति का जीवन क्षणभंगुर है - पानी के बुलबुले की भाँति है - पता नहीं कब वह लुप्त हो जाये। ऐसे में व्यक्ति को कल की प्रतीक्षा न कर आज व अभी सद्कार्यों में सक्रियता से जुड़ जाना चाहिए। जो श्रेष्ठ है, उससे अप्रमत्त भाव से जुड़ जाये और जो हेय है, उससे तत्क्षण दूर हो जाये। ऐसा करके ही व्यक्ति अपनी जीवन यात्रा को प्रगति के पथ पर अग्रसर कर पाएगा। आज के इस प्रतिस्पर्द्धी युग में 'समय' स्वयं में एक निर्णायक तत्त्व है तथा इसका समुचित ढंग से यथासमय प्रबंधन करने वाला व्यक्ति ही श्रेष्ठ लाभ उठा पाता है।

प्रबंधन अत्यंत ही सारगर्भित कार्य है। हमारे जीवन के सभी क्षेत्र भले ही वे सांसारिक हों अथवा आध्यात्मिक, सामाजिक हों अथवा व्यक्तिगत, सांस्कृतिक हों अथवा आर्थिक, प्रबंधन से प्रभावित होते हैं। यही कारण है कि प्रबंधन की महत्ता को सार्वभौमिक व सार्वकालिक माना गया है। जो देश व व्यक्ति प्रबंधन में दक्षता अर्जित कर लेते हैं, वे प्रगति के मार्ग पर तीव्र गति से गतिमान हो जाते हैं। हमारे पिछड़ेपन के कारणों में प्रभावी प्रबंधन की कमी भी एक प्रमुख कारण रहा है। व्यावहारिक क्षेत्रों में प्रबंधन का संबंध वित्त, वस्तु व व्यक्ति (Money, Material & Men) से तो है ही किन्तु अब समय तत्त्व (Time Factor) भी इसमें जुड़ गया है। किसी भी कार्य को निर्धारित व उपयुक्त समय में कुशलता से पूरा करना ही समय प्रबंधन कहलाता है। परीक्षार्थी को निर्धारित समय सीमा में अपना पर्चा लिखना होता है। समय सीमा की समाप्ति पर वह कितना भी योग्य क्यों न हो, कुछ नहीं कर सकता। जब हम समय की दृष्टि से पूर्ण रूपेण सजग, सतर्क व सक्रिय होते हैं, तभी किसी भी कार्य में हमें सफलता मिल पाती है। आज के प्रतिस्पर्द्धी युग में समय प्रबंधन के पंखों पर बैठकर ही ऊँची व लंबी उड़ान भरी जा सकती है।

समय का सही नियोजन सफलता प्राप्ति का मूल मंत्र है। समय का सही नियोजन तथा उपयोग न होने पर संसाधनों के अंबार भी कोई सार्थक परिणाम नहीं दे पाते। कहा जाता है - समय रूपी घोड़ा अपनी तेज रफ्तार से दौड़ता है। उसे यदि अपने अधिकार में लेना है तो उसे सामने से पकड़ना होगा। जैसे लव-कुश ने अश्वमेध यज्ञ का घोड़ा सामने से रोका था। समय के पीछे दौड़ने से लक्ष्य प्राप्त नहीं हो पाएगा। कहावत भी है - 'समय एवं ज्वार किसी की प्रतीक्षा नहीं करते।' जो व्यक्ति आलसी और प्रमादी होते हैं, वे समय का

जो व्यक्ति आलसी और प्रमादी होते हैं, वे समय का मूल्य नहीं पहचानते। इसी कारण समय का सदुपयोग नहीं कर पाते। जो नैतिक मूल्यों को अपनाकर जीवन मूल्यों व मानदण्डों की अनदेखी न करते हुए समय के अनुरूप अपना कार्य करते हैं, वे नित नूतन सफलता के सोपान पर अग्रसर होते हैं।

मूल्य नहीं पहचानते। इसी कारण समय का सदुपयोग नहीं कर पाते। जो नैतिक मूल्यों को अपनाकर जीवन मूल्यों व मानदण्डों की अनदेखी न करते हुए समय के अनुरूप अपना कार्य करते हैं, वे नित नूतन सफलता के सोपान पर अग्रसर होते हैं।

समय की पहचान व्यक्ति का विशिष्ट गुण है। यह पहचान ज्ञान, अनुभव तथा उत्तम मार्गदर्शन से विकसित होती है। समय की पहचान के अभाव में व्यक्ति अज्ञानतावश उपयुक्त समय का विवेकसंगत उपयोग नहीं कर पाता। जो व्यक्ति समय को पहचानने की क्षमता रखते हैं, वे ही जीवन मूल्यों को सही अर्थों में जान सकते हैं। यह बात आध्यात्मिक व व्यावहारिक दोनों क्षेत्रों में समान रूप से लागू होती है। समय के कुशल प्रबंधन के लिए कुछ बिन्दुओं पर विशेष रूप से ध्यान देना आवश्यक है -

- किसी भी लक्ष्य की प्राप्ति के लिए कदम बढ़ाने के पहले लक्ष्य के संदर्भ में अग्रिम नियोजन (Advance Planning) करना होगा।

- किसी भी लक्ष्य की प्राप्ति जैसे समय सापेक्ष है, वैसे ही कार्य के प्रमुख घटकों को क्रमबद्ध रूप में निष्पादित करने से भी है। इसे घटक क्रियान्वयन (Phase Performance) कहते हैं। प्रत्येक घटक का निष्पादन, मूल्यांकन, कुशलता व समय सीमा के आधार पर किया जाना चाहिए।

- किसी भी कार्य के निष्पादन की सफलता व्यक्ति विशेष की योग्यता, निष्ठा, कर्मठता, ईमानदारी व उच्च कोटि की कुशलता से भी न्यूनाधिक रूप से प्रभावित होती है।

- कार्य निष्पादन में समय का क्षय (Wastage) एक स्वाभाविक बात है। किन्तु यह देखना भी आवश्यक है कि यह क्षय कहीं अस्वाभाविक तो नहीं है। यदि समय का अस्वाभाविक क्षय हो रहा है तो उसे रोकने के उपाय करना आवश्यक है।

इस प्रकार समय प्रबंधन जीवन को कुशलता से तथा विवेक संगत तरीके से जीने का अनिवार्य अंग है जिसकी अनदेखी निश्चित रूप से प्रतिगामी प्रभाव डालती है चाहे कार्यक्षेत्र घर हो अथवा बाहर, व्यवसाय हो अथवा अध्यात्म। प्रभावी समय प्रबंधन हमें शरीर, मन, बुद्धि व विवेक से सक्षम बनाता है तथा हमारे जीवन-पथ को प्रभावी रूप से प्रशस्त करता है। अध्यात्म-साधना में भी यह तथ्य उतना ही उपादेय व आचरण में उतारने लायक है।

व्यावर निवासी लेखक राजस्थान सरकार के शिक्षा विभाग से सेवानिवृत्ति के पश्चात् लेखन के माध्यम से समाज में सकारात्मकता के संचार में संलग्न हैं।

लघुकथा

सुहाना सफर

राजेश अरोड़ा- श्रीगंगानगर

ट्रेन अपनी मंजिल की ओर भागी जा रही थी। उसमें एक महात्मा भी सफर कर रहे थे। यात्री घुल-मिल कर आपस में बड़े प्रेम से बातें कर रहे थे। यह देख, महात्मा यात्रियों से बोले, "भाइयो! इस सफर की तरह इंसान का जीवन भी आनंद से भरा सफर है जन्म और मृत्यु का। शुरुआत का स्टेशन यानी जन्म और मंजिल का स्टेशन यानी मृत्यु। इंसान को चाहिए कि वह इन दो स्टेशनों के बीच अपनी जीवन-यात्रा को उपयोगी और सुहावनी बनाये।"

एक यात्री ने पूछा,"महात्मन्! इसके लिए इंसान को क्या करना पड़ेगा?"

महात्मा बोले, "वत्स! इंसान अपने इस सफर में ऐसे यात्रियों का चुनाव करे जो सच्चे, भले और सरल हों।"

यात्री ने फिर सवाल किया,"महात्मन्! आखिर इससे क्या फर्क पड़ेगा?"

महात्मा बोले, "वत्स! इंसान सच से सच्चाई, भलाई से पर-सेवा और सरलता से प्रेरित होकर अपनी अपेक्षाएं कमतर करते-करते एक दिन अपेक्षा शून्य अवस्था तक पहुँच जाएगा जहाँ मिलेगा उसे जीवन उपयोगी और सफर सुहाना।"

दोगुना आनंद लिये यात्री अपने-अपने स्टेशन पर उतर रहे थे।

...हार नहीं होती

■ डॉ. पूनम गुजरानी ■

अणुव्रत एक जीवन पद्धति है जिसे हर किसी को अपनाना चाहिए। सीधे-सरल ये अणुव्रत सभी गंभीर मसलों का हल निकाल सकते हैं। प्रतिज्ञा, सच्ची लगन और साधना की त्रिवेणी से गुजर कर हम बदलाव की पृष्ठभूमि बनाते हैं और एक बार पृष्ठभूमि बन जाने के बाद काम आसान हो जाता है।

विक्रम! क्या बात है? कॉलेज से बहुत जल्दी आ गया?" अखबार से नजरें हटाकर घड़ी देखते हुए सुभाष बाबू ने पूछा।

"हाँ दादाजी, कॉलेज बंद हो गया।" विक्रम ने अपनी किताबों को डाइनिंग टेबल पर रखा और वहीं दादाजी के पास बैठ गया।

"बंद हो गया...मतलब? तीन-चार दिनों से यही हो रहा है। रोज तुम जल्दी आ जाते हो और यही बहाना बनाते हो कि कॉलेज बंद हो गया। आखिर माजरा क्या है?" दादाजी अब चहलकदमी करने लगे थे।

"मैं कोई बहाना नहीं बना रहा दादाजी, कॉलेज बंद हो जाता है तो मैं क्या कर सकता हूँ। रोज कॉलेज खुलता है, पर छात्रसंघ वाले नारेबाजी करते हुए आते हैं, हल्ला मचाया जाता है, तोड़फोड़ होती है, नारे लगते हैं, पुलिस आती है और फिर कॉलेज बंद...। दादाजी, कॉलेज में आधे से ज्यादा विद्यार्थी तो बस टाइम पास करने, किसी भी तरह जुगाड़ करके डिग्री पाने के लिए आते हैं। बस दस-पंद्रह प्रतिशत विद्यार्थी सच में पढ़ने आते हैं, पर उन्हें भी ये लोग ढंग से पढ़ने नहीं देते।" विक्रम ने अपने मन की पीड़ा एक ही साँस में दादाजी के सामने रख दी। "हूं...तो ये बात है। बेमतलब की ये हड़ताल, छुट्टियां भला किसका भला कर पाएंगी? ये बता

कि आखिर हुआ क्या...?" दादाजी के चेहरे पर अब गंभीरता उतर आयी थी।

"कुछ खास नहीं...। आपसी समझ की कमी, आवेश, एक-दूसरे की अनदेखी और अहंकार...कुल मिलाकर परिस्थितियों ने कॉलेज की साख पर बट्टा लगा रखा है। यूनिवर्सिटी के सारे कायदे-कानून यूनियन और छात्रसंघ के क्रियाकलापों की भेंट चढ़ रहे हैं। कुलपति अपनी बात पर अड़े हुए हैं और छात्र अपनी बात पर...समझ में नहीं आता कि यह सिलसिला कब तक चलेगा?" विक्रम अपनी किताबें उठाते हुए बोला।

"बैठ तो सही, कुछ सोचते हैं इस बारे में... ।" दादाजी ने विक्रम के कंधे पर हाथ रखते हुए बैठने का इशारा किया।

"हम सोचकर क्या कर सकते हैं दादाजी? हमारे हाथ में है ही क्या? बेहतर है कि मैं लाइब्रेरी जाकर पढ़ाई करूं।"

"हाँ...हाँ...जरूर चले जाना, पर पहले कुछ खा-पी ले। तेरी पसंद के गरमा-गरम राजमा-चावल बनाये हैं।" मम्मी ने आवाज लगायी।

"बिल्कुल सही, आ जाओ, खाना खाते हैं।" दादाजी ने डाइनिंग टेबल की कुर्सी सरकाते हुए कहा।

"अच्छा, ये बता विक्रम कि कॉलेज में किस मुद्दे को लेकर हड़ताल हो रही है?" दादाजी ने फुलके का कौर तोड़ते हुए पूछा।

"एक नहीं, कई मुद्दों को लेकर छात्रसंघ नाराज है कुलपति से...इसी कारण प्रदर्शन हो रहे हैं। नकल...फर्जी डिग्रियां...छात्रों की विभिन्न गतिविधियों के लिए आये हुए सरकारी बजट को गलत जगह पर खर्च करना...जैसे कितने ही मुद्दे हैं। उधर कुलपति भी छात्रों से नाराज हैं, कम अटेंडेंस, शिक्षकों से बदतमीजी, हॉस्टल के नियमों का पालन न करना आदि। बातचीत भी होती है, पर हर बार निष्फल रहती है।" विक्रम ने बताया।

"ओह...ऐसा करो तुम्हारे कुलपति का नम्बर मुझे देना, मैं बात करके देखता हूँ। कोई न कोई समाधान निकल ही आएगा।" दादाजी ने कहा।

"आप भला हमारे कॉलेज की समस्या का क्या समाधान निकालेंगे?" विक्रम ने असमंजस के भाव से पूछा।

"अरे भाई! मैं भी अपने समय में शहर के जाने-माने स्कूल का प्रिंसिपल और कुछ साल कॉलेज का लेक्चरार रह चुका हूँ। जानता हूँ कि इस तरह की समस्याओं से कैसे निपटना चाहिए। तुम मुझे नम्बर दो, मैं देख लूँगा।"

करीब एक वर्ष बाद विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह से पहले कुलपति कक्ष में राज्यपाल से चर्चा करते हुए कुलपति ने कहा-"पिछला पूरा वर्ष उथल-पुथल से भरा रहा। छात्रसंघ, हड़ताल, तोड़-फोड़ हमारी यूनिवर्सिटी के पर्याय बन चुके थे। हम अखबारों की हेडलाइन बन रहे थे, पर वो पूरी तरह नकारात्मक थी। आपसी बातचीत विफल हो रही थी। शिक्षकों और विद्यार्थियों के मनमुटाव हद से ज्यादा बढ़ चुके थे, पर आदरणीय महामहिम, आज मैं आपको बताना चाहता हूँ कि हमारे यहाँ स्थितियां अब पूर्ण रूप से सामान्य हो चुकी हैं। विद्यार्थियों और शिक्षकों में अच्छा तालमेल बन चुका है। जो विद्यार्थी मुझे देखते ही पत्थर उठाकर सिर फोड़ना चाहते थे, आज सिर झुकाकर अदब से नमस्कार करते हैं। कल तक जिन विद्यार्थियों को मैं निकम्मा और अनुशासनहीन समझता था, आज मेरे मन में भी प्यार है उनके लिए। सच कहूं तो ऐसा लगता है कि जैसे कोई जादू...पर आपकी जानकारी के लिए बता देना चाहता हूँ महामहिम कि यह सब जादू नहीं, संकल्पशक्ति का परिणाम है।"

"संकल्पशक्ति...कैसी संकल्पशक्ति? मैं समझा नहीं...!" राज्यपाल महोदय ने यूनिवर्सिटी के कुलपति ठक्कर साहब से पूछा।

"इनसे मिलिए सर, ये हैं सुभाष बाबू...जिन्होंने कॉलेज की समस्याओं को जाना, समझा तथा विद्यार्थियों और शिक्षकों के मध्य तालमेल की एक बेहतरीन कोशिश की, अलग-अलग तरह की वर्कशॉप ली , प्रयोग करवाये, दिमाग में जमी हुई नकारात्मक बातों को हटाकर सकारात्मक बातों की पौध लगायी और रिजल्ट आपके सामने है सर...। अब तो सुभाष बाबू हमारी यूनिवर्सिटी का एक अभिन्न हिस्सा हैं। सप्ताह में तीन वर्कशॉप ये आयोजित करते हैं ताकि जो पौध इन्होंने लगायी है, उसे खाद, पानी और धूप मिलती रहे। मैं भी इनकी वर्कशॉप अटेंड करता हूँ।" कहते हुए कुलपति ने सुभाष बाबू को इशारा किया तो वे तुरंत आगे आ गये और नमस्कार की मुद्रा में हाथ जोड़ दिये।

महामहिम ने गर्मजोशी से हाथ बढ़ाया और अपने पास की खाली कुर्सी पर बैठने के लिए कहा तो सुभाष बाबू उनके पास ही बैठ गये।

"अरे ये तो बहुत अच्छी बात है। आप नसीब वाले हैं कि सही समय पर सही व्यक्ति आपको मिल गया।" सुभाष बाबू की ओर इशारा करते हुए राज्यपाल महोदय ने चाय का कप उठा लिया।

"बिल्कुल सर, मैं भी मानता हूँ यह बात...रिटायर होने से पहले एक अच्छी उपलब्धि मेरे खाते में आयी, इसकी मुझे बेहद खुशी है।" कहते हुए कुलपति के चेहरे पर मुस्कुराहट तैर गयी।

"बिल्कुल, आपने अच्छा कार्य किया तो सेहरा तो बँधेगा ही। विपरीत परिस्थितियों को अपने प्रयासों से आपने सम्भाल लिया। आप बधाई के पात्र हैं।" राज्यपाल ने उठते हुए कहा।

"सर, जैसा कि मैंने पहले ही कहा, बधाई का हकदार मैं नहीं, सुभाष बाबू हैं। इस काम के पीछे सारी योजना और मेहनत इनकी ही है। बिना किसी स्वार्थ के इन्होंने जो काम किया, उसकी जितनी तारीफ की जाये, कम है। मैं चाहता हूँ कि आप इनका सम्मान करें।"

"अरे हाँ, क्यों नहीं! हम आज के कार्यक्रम में ही इनका भी सम्मान करेंगे। ये हकदार हैं सम्मान के...। और हाँ, आपने किस तरह से काम किया? जरा हमें भी तो बताइए सुभाष बाबू।" राज्यपाल महोदय ने वापस कुर्सी सरका कर बैठते हुए कहा।

"सर, आपने अणुव्रत आंदोलन और आचार्य तुलसी का नाम तो सुना ही होगा?"

"हाँ, सुना है, एक बार गया भी था उनके कार्यक्रम में, पर कुछ खास नहीं जानता। जहाँ तक मुझे याद है, वे तो एक सम्प्रदाय विशेष के आचार्य थे न...!"

"हाँ, वे थे तो धर्माचार्य, पर काम उन्होंने संपूर्ण मानवता के लिए किया। उन्होंने अणुव्रत की आचार संहिता बनायी जो सबके लिए समान रूप से उपयोगी है। अणुव्रत के बहुत आसान से नियम हैं जिनका पालन हर कोई कर सकता है, पर इसके परिणाम बेहद सटीक होते हैं। जीवन जीने का बहुत सुंदर सलीका है अणुव्रत।"

"एक बात बताइए...यह अणुव्रत आंदोलन तो जैनियों का है न और आप तो मेरे जैसे जनेऊधारी ब्राह्मण हैं। भला आप इसे इतनी तवज्जो क्यों देते हैं?" राज्यपाल ने अपना जनेऊ दिखाते हुए पूछा।

" बस...सर, बुरा मत मानना, यहीं तो मात खा जाता है हमारा भारत। ये तेरा...ये मेरा...,ये हिन्दू...ये मुसलमान...,ये सिख...ये ईसाई... इससे आगे हम सोच ही नहीं पाते। सही मायने में ये सब फिजूल की बातें हैं। अलग- अलग पंथ-सम्प्रदाय होने के बावजूद भी एक मानव धर्म भी है जो सबके लिए समान रूप से लागू होता है और अणुव्रत वही मानव धर्म है। मानव पहले मानव बने यह बहुत जरूरी है। मैंने आचार्य तुलसी को देखा है, उनसे विचार-विमर्श किया है, उनसे ही अणुव्रत के नियमों को समझा, फिर अणुव्रत को अपनाया और अणुव्रत प्रचारक भी बना। आचार्य तुलसी स्वयं एक संप्रदाय विशेष के आचार्य थे, पर वे कहते थे- पहले इंसान, इंसान...फिर हिंदू या मुसलमान....सच मानो तो अणुव्रत एक जीवन पद्धति है जिसे हर किसी को अपनाना चाहिए। सीधे-सरल ये अणुव्रत सभी गंभीर मसलों का हल निकाल सकते हैं। यही कारण था कि मैं ब्राह्मण होकर भी अणुव्रती बन गया। प्रतिज्ञा, सच्ची लगन और साधना की त्रिवेणी से गुजर कर हम बदलाव की पृष्ठभूमि बनाते हैं और एक बार पृष्ठभूमि बन जाने के बाद काम आसान हो जाता है और बस यही काम हम लोग कर रहे हैं बाकी सब प्रभु इच्छा...।" कहते हुए सुभाष ने राज्यपाल की ओर देखते हुए हाथ जोड़ दिये।

"सर, अगर आप बुरा न मानें तो एक बात कहूं...।" कुलपति महोदय ने कहा।

"अरे, आपकी बात का बुरा क्या मानना...आप कहिए...।" महामहिम मुस्कुराये।

"सर, एक बार आपको भी अणुव्रत के नियम समझकर इस आंदोलन से जुड़ना चाहिए।" कुलपति ने धीरे-से कहा।

"ये...लो...तो बात यहाँ तक पहुँच गयी। वैसे प्रस्ताव बुरा भी नहीं है, पर फिलहाल कुछ नहीं कह सकता।" कहते हुए राज्यपाल उठ गये।

दीक्षांत समारोह के पश्चात् कुलपति ने कुछ साहित्य एवं दो सीडी यह कहते हुए राज्यपाल की ओर बढ़ा दिये -"सर, एक मिनट, ये आपके लिए...।"

"स्माइल प्लीज...।" कहते हुए महामहिम के साथ आये अधिकारी ने एक फोटो क्लिक की।

गाड़ी में बैठते ही राज्यपाल ने सेक्रेटरी से कहकर सीडी प्लेयर पर सीडी चलवायी। हवा में बोल तैरने लगे..."संयममय जीवन हो...।" राज्यपाल महोदय आँखें बंद किये किसी गहन चिंतन में डूबे हुए थे। उनका कारवां धीरे-धीरे आगे बढ़ रहा था। इधर सुभाष बाबू आगे की योजना बनाते हुए सोच रहे थे, "कोशिश करने वालों की हार नहीं होती।"

सूरत निवासी लेखिका मोटिवेशनल स्पीकर होने के साथ ही साहित्य सृजन में संलग्न हैं। इनकी कई पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं।

परिचर्चा

"बढ़ें... अणुव्रत-शतक की ओर"

परिचर्चा के इस विषय पर पाठकों से प्राप्त चिंतन बिंदु -

अणुव्रत से होगा स्वर्णिम भविष्य का निर्माण

स्वतंत्रता प्राप्ति के शुरुआती दौर में शुरू हुआ अणुव्रत आंदोलन पूरे देश में नैतिकता के भावों के प्रचार-प्रसार, जन-जन को नशामुक्त बनाने, अस्पृश्यता के कीटाणुओं का विनाश जैसी युगीन अपेक्षाओं को पूरा करने की दिशा में प्रयास करते हुए 'अमृत महोत्सव' मना चुका है। इन सुधारक प्रवृत्तियों के पूर्ण रूपेण फलीभूत होने की वर्तमान में ज्यादा अपेक्षा है। अनगिनत समस्याओं के मध्य अगले 25 वर्षों में कुछ मुख्य ज्वलन्त प्रश्नों पर ध्यान केन्द्रित करते हुए इसे सिरमौर संस्था के रूप में स्वयं को प्रमाणित करना है। इसके लिए कुछ कदम उठाने होंगे -

देश नशामुक्त हो - अनेक प्रयासों के बावजूद युवा वर्ग में विशेषतः नशीले पदार्थों का बढ़ता चलन अनेक दूषित समस्याओं को जन्म देने के अलावा देश की कार्यक्षमता घटा देगा जिसके दूरगामी दुष्परिणाम होंगे।

नैतिकता का प्रसार - सार्वजनिक जीवन में बढ़ता भ्रष्ट आचरण, खाद्य वस्तुओं में मिलावट, देश की शक्ति एवं आस्था को लील जाएगा। महिलाओं के साथ रेप व अन्य दुर्व्यवहार की अनेकानेक घटनाएं महिलाओं में असुरक्षा का भाव बढ़ाकर देश की नींव खोखली कर देंगी। हम यदि व्यक्ति-परिवर्तन से समाज-सुधार की मुहिम के साथ आगे बढ़ेंगे तो अणुव्रत आंदोलन हमारे देश के स्वर्णिम भविष्य का निर्माता बनेगा।

-विजयराज सुराणा, गाजियाबाद

मेरा अणुव्रत - अनैतिक आचरणों पर नियंत्रण

व्रत अपने आप में शांति और प्रकाश प्राप्त करने का मार्ग है, स्वयं के पुरुषार्थ पर विश्वास करने का मार्ग है। व्रत के साथ रहने से शक्तियों का जागरण होता है और संयममय जीवन जीने का लाभ प्राप्त होता है। अनैतिक आचरण को छोड़ना ही मेरा अणुव्रत है। जब-जब मैं अपने अनैतिक आचरणों पर नियंत्रण करता हूँ, तब-तब अपने आपको अणुव्रती समझता हूँ।

अणुव्रत आंदोलन मनुष्य की शुद्ध बुद्धि पर ही टिका है। जरूरत है, स्वयं अपनी बुद्धि को शुद्ध रखा जाये और उस शुद्ध बुद्धि के सहारे अपनी वासनाओं पर नियंत्रण रखने के साथ ही ऐसा ही प्रशिक्षण औरों को भी दिया जाये। अणुव्रत आंदोलन की सफलता का सूत्र यही है - बुद्धि... शुद्ध बुद्धि ... प्रशिक्षण।

-छत्तर खटेड़, लाडनूं

'शुभ भविष्य है सामने' अणुव्रत का आलोक पथ

देश की स्वतंत्रता के पश्चात् नैतिक और चारित्रिक उत्थान हेतु प्रारंभ हुए अनेक आंदोलनों में से मात्र अणुव्रत आंदोलन ही आज भी जीवंत है एवं सामाजिक- शैक्षणिक प्रगति में योगदान दे रहा है। अणुव्रत साहित्य, प्रचार सामग्री, सोशल मीडिया आदि के माध्यमों से अणुव्रत की प्रभावी गूँज हो रही है, साथ में व्यक्तिगत संपर्क और जहाँ जरूरत है, उस समाज के मध्य जाकर अणुव्रत की पहुँच बढ़ाने के लिए और अधिक प्रयास किये जाने चाहिए।

आज विश्व के समक्ष हिंसा एवं वैमनस्यता का भाव अपनी चरम सीमा पर पहुँच गया है। ऐसे में अणुव्रत ही शांति प्रदान करने का अमोघ अस्त्र है। अणुव्रत आचार संहिता का पालन, चाहे किसी भी रूप या नाम से हो, आवश्यक/अनिवार्य होगा ही। भविष्य की शताब्दी के लिए आधार तैयार करने की शुरुआती जिम्मेदारी वर्तमान की है। अणुव्रत आंदोलन के प्रवर्तक आचार्य श्री तुलसी के शब्द 'शुभ भविष्य है सामने' अणुव्रत का आलोक पथ है।

-जिनेन्द्र कोठारी, अंकलेश्वर

मनोबल से प्रशस्त होगा शतक वर्ष का पथ

अणुव्रत आंदोलन ने 75 वर्षों की सुदीर्घ यात्रा में मानवीय मूल्यों को जनजीवन में प्रतिस्थापित करने के लिए अभूतपूर्व योगदान दिया है। सद्भावना, नैतिकता, व्यसनमुक्ति व जीवन विज्ञान के उपयोग से हर जाति, संप्रदाय के लोग लाभान्वित हो रहे हैं। दुनिया की वर्तमान स्थितियों पर दृष्टिपात करें तो यह स्पष्ट है कि जिस प्रकार भौतिक प्रगति हो रही है, समाज में अनेक नये स्वरूप में उससे कई गुना अधिक असहिष्णुता, असंयम आदि की बढ़ोतरी हो रही है। अणुव्रत दर्शन की खूबसूरती है कि हर युग और हर परिस्थिति में सटीक समाधान प्रस्तुत करने में यह सक्षम है। वर्तमान में अणुविभा द्वारा चलाये जा रहे एलीवेट और डिजिटल डिटॉक्स के कार्यक्रम बदलाव की दिशा में सशक्त कदम हैं।

अणुव्रत आंदोलन के साथ 20 वर्षों से अपने सक्रिय जुड़ाव से मैंने अनुभव किया है कि अणुव्रत आंदोलन के वर्तमान स्वरूप और जीवन विज्ञान के समन्वय से पूरे समाज व विशेषकर शिक्षा जगत में अणुव्रत दर्शन का प्रभाव बढ़ा है। अणुविभा के विभिन्न प्रकल्पों से संबंधित विषयों में प्रशिक्षण कार्यक्रमों के निरंतर आयोजन भविष्य में सफलताओं के नये द्वार खोलेंगे। शतक वर्ष की ओर मजबूती से अग्रसर होने के लिए लक्ष्मी, सरस्वती और दुर्गा का योग हमारा पथ सुगमता से प्रशस्त करेगा।

-**विनोद कोठारी,** मुंबई

वर्तमान दौर में बढ़ गयी है अणुव्रत की प्रासंगिकता

जब तक हम दिखावे की भावना को छोड़कर कार्य को परिणति तक पहुँचाने की भावना से आगे नहीं बढ़ेंगे, तब तक इच्छित फल प्राप्त नहीं कर पाएंगे। किसी सिद्धांत पर पहले हम खुद अमल करें, तब दूसरों को कहें। अगर हम किसी को नशामुक्त रहने के लिए प्रेरित करते हैं, तो स्वयं नशामुक्त रहने के साथ ही नशीली वस्तुओं का व्यापार भी नहीं करें, तभी हमारी बात का औचित्य होगा। आवश्यकताओं का अल्पीकरण करके हम बहुत-सी बुराइयों से स्वतः ही बच सकते हैं। वर्तमान दौर में कुछ लोग अपने निहित स्वार्थों के चलते अराजकता का माहौल बनाने में लगे हुए हैं, इसलिए आज अणुव्रत की प्रासंगिकता बहुत ज्यादा बढ़ गयी है। अणुव्रतों की पालना के लिए यथासंभव ज्यादा से ज्यादा लोगों को प्रेरित करना आज सबसे बड़ी चुनौती है।

-**शुभकरण बैद,** लाडनूं

छोटे-छोटे अणुव्रतों का संकल्प दिलाना होगा

गुरुदेव तुलसी से आचार्य महाश्रमण जी तक की अणुव्रत यात्रा, जिसके साथ में चले जन-जन और रहा सबका आत्मविश्वास अटल। एक-एक सीढ़ी पर चढ़कर की शुरुआत और पार कर गये 75वीं सीढ़ी। फिर 100वीं सीढ़ी पर भी आरूढ़ होकर अणुव्रत का झंडा फहरा देंगे। हमें करना होगा इरादा मजबूत। सबको करना होगा संकल्पित। एक-एक व्यक्ति को छोटे-छोटे अणुव्रतों का संकल्प दिलाकर। समाज परिवर्तन की बात करने से पहले परिवर्तन लाना होगा स्वयं में। संपूर्ण व्रत नहीं निभा सके तो क्या हुआ, कुछ नियमों को ही जीवन में उतारेंगे तो शायद हम गंतव्य तक पहुँच जाएंगे और अणुव्रत आंदोलन द्वारा भविष्य को प्रकाशमय कर पाने में सफल हो पाएंगे।

-**विशाखा दफ्तरी,** अहमदाबाद

अणुव्रत को घर-घर पहुँचाने की हो व्यापक पहल

अणुव्रत आंदोलन ने 75 वर्ष पूरे कर लिये हैं। यह बहुत बड़ा मील का पत्थर पार करने जैसा है। अब आवश्यकता है आंदोलन के शतक वर्ष तक पहुँचते-पहुँचते अणुव्रत को घर-घर में पहुँचाने की। अपने परिवार और आस-पड़ोस से इसकी शुरुआत की जा सकती है। जिन घरों में छोटे बच्चे हैं, वहाँ माताएं उनके जन्मदिन पर बच्चे के साथ मुखर रूप से अणुव्रत लें। जैसे, "आज से हम दोनों यह अणुव्रत लेंगे कि हम अपनी थाली में जूठा भोजन नहीं छोड़ेंगे।" ऐसा करने पर माँ के साथ मिलकर बच्चा इस अणुव्रत को पूरा कर सकेगा। धीरे-धीरे बच्चे को अणुव्रत की सफलता पर विश्वास होता जाएगा और वह बड़े अणुव्रत भी लेने लगेगा। यही बच्चा कल का जागरूक नागरिक होगा और फिर अणुव्रत आंदोलन अपने आप संपूर्ण जगत में फैल जाएगा।

-**नीलम राकेश,** लखनऊ

हम सब बनें अणुव्रत शतक के हवन की समिधा

ब्रिटिश शासन के दौरान आधुनिक शिक्षा की ऐसी घुट्टी पिलायी गयी कि लोग शिक्षित होते गये, जेंटलमैन बनते गये और हाथ के पुश्तैनी हुनर से पलायन करने लगे। जहाँ प्रातःकाल उठकर माता-पिता, घर के बड़े-बुजुर्गों के चरण स्पर्श करते थे, सूर्योदय के दर्शन कर प्रकृति की आराधना करते थे, बच्चों को नीति श्लोक, चौपाई, दोहे आदि रटवाते थे, वहाँ आधुनिकता की ऐसी आँधी चली कि हम अपनी धरोहर से विमुख होते चले गये और भिन्न-भिन्न जाति, मजहब, धर्म और संप्रदायों में बँट गये। समाज में फैला यह विषैला वातावरण ही हमारे वर्तमान और भविष्य की चुनौती बनकर सामने खड़ा हो गया है। भारतीय संस्कृति, सभ्यता, संस्कारों का ह्रास होता गया है। अब चुनौती यह है कि हम इस बिखरे हुए समाज को वापस अपनी धरा और संस्कृति से कैसे जोड़ें?

इसके लिए आवश्यकता है पालने में ही मानवीय मूल्यों को रोपने की, उसे घुट्टी में पिलाने की जिससे बच्चों के संस्कारों में

परिवार, प्रकृति और परिवर्तन की ज्योति जल उठे। इसके लिए हम सब जुड़ें आचार्य तुलसी के उस अभियान से जो "अणुव्रत" यानी छोटे-छोटे व्रतों और संकल्पों से विश्व में नैतिक क्रांति लाने की ओर अग्रसर है। इस "अणुव्रत शतक" की चिंगारी को हर घर, गली-मोहल्ले, राज्य, देश और सम्पूर्ण विश्व में सुलगाना होगा। प्रतिस्पर्धा और भौतिकतावाद के माहौल में लोगों को आध्यात्मिकता, नैतिकता, भाईचारे, पर्यावरण संरक्षण और सुकून भरी जिंदगी की ओर उन्मुख करना होगा। इसके लिए संयम, अनुशासन, त्याग, प्रेम, नैतिकता और अहिंसा को जीवन का आधार बनाना आवश्यक है। आइए, आज से ही हम अपनी संस्कृति, सभ्यता, रहन-सहन, खान-पान व दैनिक जीवनशैली को शुचितापूर्ण बनाएं और "सादा जीवन उच्च विचार" की नींव को पुनः स्थापित कर अणुव्रत शतक के हवन की समिधा बनें।

-**सुशीला शर्मा**, जयपुर

संयम ही जीवन है

आज देश में जो हिंसा का माहौल बना हुआ है, उसे किसी भी कानून से समाप्त करना आसान कार्य नहीं है। हिंसा के माहौल से निपटने के लिए स्नेह और संयम पूर्ण व्यवहार की आवश्यकता है। इसके लिए धैर्य और सहनशीलता से काम करना होगा। हम अहिंसा के माध्यम से ही हर समस्या का समाधान निकाल सकते हैं। अणुव्रत आंदोलन को और भी प्रभावी बनाने के लिए हमें अपनी जीवनशैली में बदलाव लाना होगा। सकारात्मक सोच को अपनाना होगा। संस्कारवान व चरित्रवान बनकर समाज को विकास व उत्थान की राह दिखानी होगी। देश में नैतिकता की कमी आज सबसे बड़ी चुनौती है। संयम के साथ जीवन जीना भी एक कला है। बस जरूरत है संयम के मार्ग पर चलने की। जहाँ संयम है, वहाँ नैतिकता और मानवीय मूल्यों का अपार भंडार है। हमें सदैव याद रखना होगा कि संयम ही जीवन है।

-**सुनील कुमार माथुर**, जोधपुर

छोटी-छोटी कार्यशालाओं और टॉक शो का हो आयोजन

वर्तमान में व्यक्ति में बनावटीपन का भाव पनप रहा है। चोर बाजारी, मिलावटखोरी, धोखाधड़ी समाज में सुरसा के मुख की तरह बढ़ती जा रही है, उस पर लगाम कसने की जरूरत है। इसके लिए व्यक्ति को, समाज को, अपने देश को संयमित और चरित्रवान बनाना होगा। छोटी-छोटी कार्यशालाओं का आयोजन कर मानव मन को परिवर्तित करना होगा। अणुव्रत के जितने भी सिद्धांत हैं, उन्हें क्रियान्वित करने के लिए कार्य स्थलों पर जाकर टॉक शो, नुक्कड़ नाटक करना होगा, तभी अणुव्रत आंदोलन सफलता के पायदान पर चढ़ पाएगा।

-**डॉ. राजमती पोखरना सुराना**, भीलवाड़ा

'निज पर शासन फिर अनुशासन' से मिटेगा कथनी-करनी का अंतर

अणुव्रत दर्शन अपने आचार में लाने वाला दर्शन है। अणुव्रत आंदोलन को हम अनवरत तभी चला सकते हैं और जन-जन के बीच पहुँचा सकते हैं जब हम पूरी तरह असांप्रदायिक होकर, निःस्वार्थ भाव से मानव जाति की सेवा करें। पहले अणुव्रत के दर्शन को अपने आचरण में लाएं और फिर उसकी प्रेरणा जन-जन को दें। अणुव्रत का नारा 'निज पर शासन फिर अनुशासन' तभी सफल होगा जब हमारी कथनी और करनी में अंतर नहीं होगा। दूसरी बात, युवाओं को इस आंदोलन से जोड़ा जाना चाहिए। जब वे पहले दिन से नैतिकता, प्रामाणिकता, मानवीय मूल्यों के प्रति आस्था, नशामुक्ति आदि संकल्पों से संकल्पित होगें तो इस आंदोलन की निष्पत्ति अणुव्रत शतक वर्ष में दिखेगी। तीसरा बिंदु, मौजूदा दौर में कई युवा अपने आप को नास्तिक मानने में ज्यादा खुश नजर आते हैं। अणुव्रत ऐसा विषय है जिसे अगर वैज्ञानिक और तर्कपूर्ण रूप से समझाया जाये तो हर व्यक्ति इसे अपनाएगा और शायद वह अपने आपको धार्मिक भी कहलाना पसंद करने लगेगा। इन बिंदुओं पर गौर करते हुए यदि कार्य किया जाये तो अणुव्रत आंदोलन की सारी चुनौतियां समाधान में तब्दील हो सकती हैं।

-**अभिषेक कोठारी**, भीलवाड़ा

अणुव्रत को विद्यालयों और बच्चों तक ले जाना होगा

अणुव्रत आंदोलन का अमृत महोत्सव मनाने के बाद अब हम शतकीय पारी की ओर कदम बढ़ा चुके हैं। यह हजारों लोगों के श्रम का प्रतिफल है। अब हमें आत्मचिंतन करना चाहिए कि हमारे श्रम का कितना प्रतिफल मिल रहा है, कितने लोग अणुव्रती बन पाये हैं? क्या हम सही दिशा में अग्रसर हैं? क्या हम स्वयं भी अणुव्रत को जी रहे हैं? हम जिस गति से आगे बढ़ रहे हैं, क्या वह काफी है? हमें चाहिए कि अब कुछ बिंदुओं पर चिंतन करें और उन पर अमल भी। मेरा सुझाव है कि सभी अणुव्रत समितियां अपने-अपने क्षेत्र में एक विद्यालय को गोद लें और साल भर तक अपने सारे कार्यक्रम वहीं बच्चों के बीच आयोजित करें। इस दौरान बच्चों को जीवन विज्ञान, पर्यावरण संरक्षण, अहिंसा, नशामुक्त जीवन, नैतिकता आदि के जो पाठ सिखाये जाएंगे, वे जिंदगी भर उन्हें याद रहेंगे और बच्चे उन्हीं सिद्धांतों के अनुसार जीवन भी व्यतीत करेंगे। अणुव्रत समितियां अगले वर्ष दूसरे विद्यालय को गोद लें और अपने तीन-चार कार्यकर्ताओं को पहले वाले विद्यालय में अणुव्रत के कार्यक्रमों की देखरेख का जिम्मा सौंप दें। इस तरह आगे बढ़ेंगे तो अणुव्रत आंदोलन जब शतक पूरा करेगा तो हमारे पास निश्चित रूप से युवा कार्यकर्ताओं की एक फौज तैयार रहेगी। इस प्रकार लोगों को नैतिक बनाने का गुरुदेव आचार्य श्री तुलसी का सपना पूरा हो सकेगा।

-**संजय बोथरा**, नगांव

"सुधरे व्यक्ति, समाज व्यक्ति से राष्ट्र स्वयं सुधरेगा"

आचार्य श्री तुलसी ने जन-जन में कर्त्तव्य बोध के साथ अहिंसक, नैतिक एवं मानवीय मूल्यों के प्रतिष्ठापन हेतु अणुव्रत आंदोलन का प्रवर्तन किया। इसका लक्ष्य है व्यक्ति, समाज और राष्ट्र के जीवन में पनपने वाली बुराइयों को दूर करना। आचार्यश्री ने इसके लिए छोटे-छोटे नियम बनाये जिनका हर व्यक्ति आसानी से पालन कर सके। उन्होंने कहा, "सुधरे व्यक्ति, समाज व्यक्ति से राष्ट्र स्वयं सुधरेगा।" सुधार की पहल समाज से नहीं, स्वयं से करें। संकल्प करें कि मुझे अच्छा इंसान बनना है। जीवन में नैतिक गुणों व विचारों का समावेश करना है। अणुव्रत के नियमों व आदर्शों के अनुरूप जीवन यापन करने वाला समाज आदर्श समाज की कोटि में आ सकता है।

-हेमा डागा, विजयनगरम

अगली परिचर्चा का विषय

नयी पीढ़ी के प्रति हमारा दायित्व

नयी पीढ़ी का बड़ों के प्रति, अपने अभिभावकों के प्रति क्या दायित्व है, इस पर अक्सर चर्चा होती है। युवा पीढ़ी के पथभ्रष्ट हो जाने का आरोप भी बहुधा सुनने को मिल जाता है। नये वर्ष में इस बात पर चर्चा करना अधिक समीचीन प्रतीत होता है कि वर्तमान पीढ़ी क्या भावी पीढ़ी के प्रति अपने दायित्व का भली-भाँति निर्वहन कर रही है? हम कैसा आदर्श प्रस्तुत कर रहे हैं आने वाली पीढ़ी के समक्ष? प्रामाणिक जीवन का कैसा मापदंड हम स्थापित कर रहे हैं? क्या एक न्यायप्रिय व्यवस्था सौंप पा रहे हैं हम उन्हें? क्या उन्हें दोषी ठहरा कर हम खुद को दोषमुक्त कर सकते हैं? हमें देख कर ही हमारी भावी पीढ़ी बड़ी हो रही है। हम स्वयं क्या करें ताकि आने वाली पीढ़ी को बेहतर भविष्य उपलब्ध हो सके? आइए, इन्हीं गंभीर मुद्दों पर विचार करें और एक बेहतर कल बनाने के लिए प्रतिबद्ध हों।

'अणुव्रत' पत्रिका के **जनवरी 2025** अंक में प्रकाशित होने वाली परिचर्चा हेतु इन्हीं सब मुद्दों पर आमंत्रित हैं आपके विचार। रचनात्मक, प्रयोगधर्मी और अनुभवजन्य विचारों को प्रकाशन में प्राथमिकता दी जाएगी। अपने विचार अधिकतम 200 शब्दों में हमें **10 दिसम्बर 2024** तक 9116634512 पर व्हाट्सएप के माध्यम से भेजें।

अणुविभा

अणुव्रत

बच्चों का देश

राष्ट्रीय बाल मासिक

सदस्यता फॉर्म

मैं 'अणुव्रत'/'बच्चों का देश' पत्रिका का सदस्यता शुल्क नीचे दिए विवरण के अनुसार जमा करा रहा/रही हूं -

अवधि	'अणुव्रत'	'बच्चों का देश'
1 वर्ष	₹ 750	₹ 350
3 वर्ष	₹ 1800	₹ 900
5 वर्ष	₹ 3000	₹ 1500
10 वर्ष	₹ 6000	₹ 3000
15 वर्ष (योगक्षेमी)	₹ 15000	₹ 7500

'अणुव्रत' पत्रिका हेतु बैंक विवरण
ANUVRAT VISHVA BHARATI SOCIETY
CANARA BANK
DDU MARG, NEW DELHI
A/c No. : 0158101120312
IFSC Code : CNRB0000158

'बच्चों का देश' हेतु बैंक विवरण
ANUVRAT VISHVA BHARATI SOCIETY
IDBI BANK
Branch Rajsamand
A/c No. : 104104000046914
IFSC Code : IBKL0000104

नाम ______________________

पता ______________________

______________________ पिन

मोबाइल ______________ ईमेल ______________

यह फॉर्म एवं सदस्यता शुल्क किसी एक पते पर भेजें -

'बच्चों का देश' पत्रिका
अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी (अणुविभा)
'चिल्ड्रन'स पीस पैलेस', बॉक्स सं. 28, राजसमन्द - 313324 (राजस्थान)
मोबाइल : 9414343100
bachchon_ka_desh@yahoo.co.in

'अणुव्रत' पत्रिका
अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी (अणुविभा)
अणुव्रत भवन, 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002
मोबाइल : 9116634512
anuvrat.patrika@anuvibha.org

अणुव्रत समाचार

अणुविभा
जीवन विज्ञान
प्रार्थना सभा में
जीवन विज्ञान
अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी
जीवन विज्ञान भवन, जैन विश्व भारती कैम्पस, लाडनूं-341306
+91 91166 34514
jeevan.vigyan@anuvibha.org
www.anuvibha.org

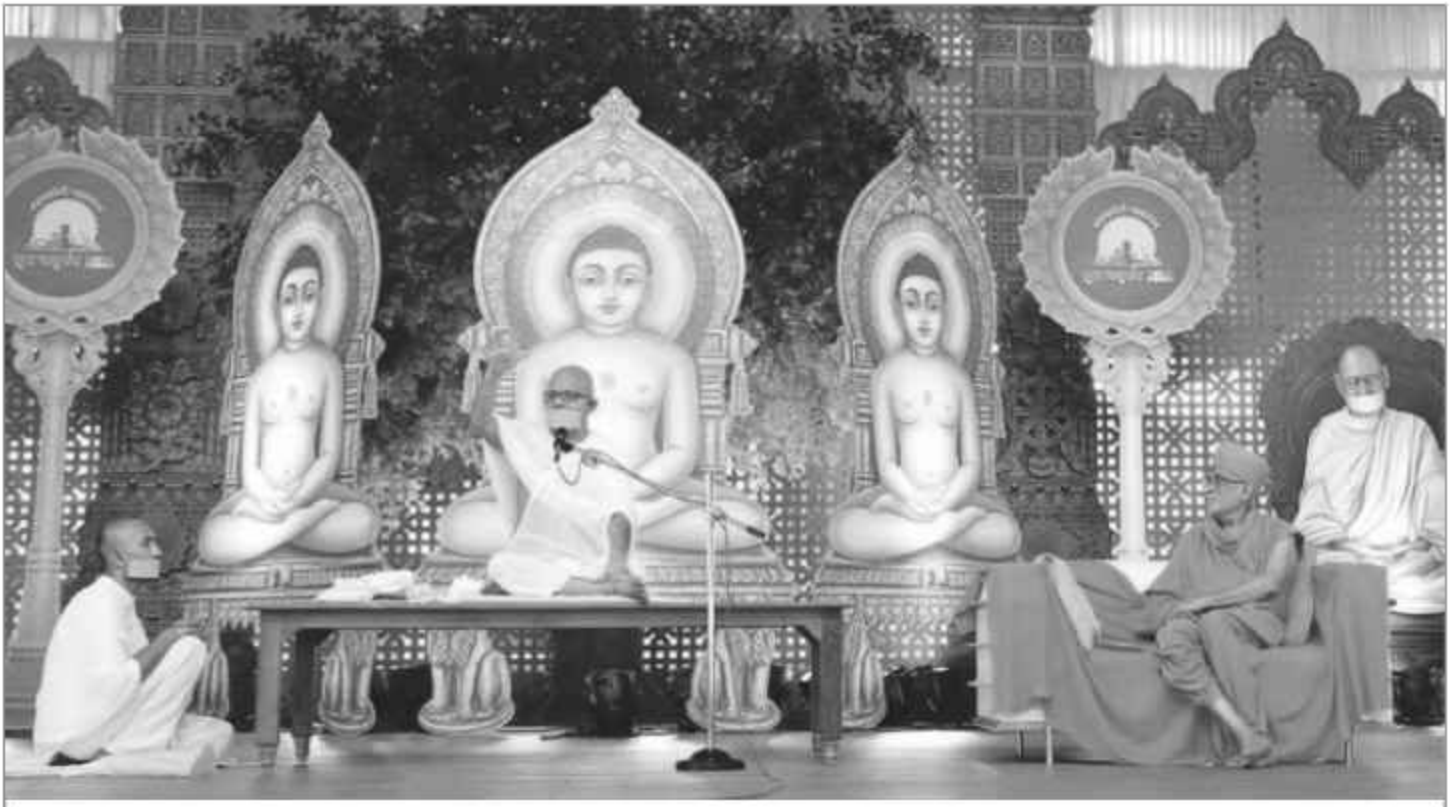

अणुव्रत है जन-जन के लिए हितकारी - आचार्य श्री महाश्रमण

अणुव्रत अनुशास्ता की सन्निधि में अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह का शुभारम्भ

वेसु, सूरत। अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण की मंगल सन्निधि में अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह का शुभारम्भ 1 अक्टूबर को हुआ। सप्ताह का **पहला दिन सांप्रदायिक सौहार्द दिवस** के रूप में समायोजित हुआ। इस कार्यक्रम में हरिधाम सोखड़ा योगी डिवाइन सोसायटी के अध्यक्ष प्रकट गुरुहरि प्रेमस्वरूप स्वामी महाराज व स्वामी त्यागवल्लभ महाराज शिष्यों के साथ आचार्यश्री की सन्निधि में पहुँचे।

इस अवसर पर अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण ने पावन पाथेय प्रदान करते हुए कहा कि मानव जीवन में संप्रदाय का भी अपना महत्व है। संप्रदाय का साया मिलता है तो अनुकंपा प्राप्त हो सकती है। कोई जैन बने या न बने, अपने धर्म में रहते हुए भी छोटे-छोटे नियमों को स्वीकार कर अपने जीवन को उन्नत बना सकता है। अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह को हर जगह स्वीकार किया जाता है। वेश-भूषा और परिवेश में कुछ अंतर अवश्य हो सकता है, किंतु जहाँ अहिंसा, संयम, सच्चाई की बात होती है, वहाँ लगभग समानता होती है। मर्यादाएं, व्यवस्थाएं, परिवेश अलग-अलग हो सकते हैं। संप्रदाय तो हमने स्वीकार कर लिया, लेकिन जीवन में धर्म नहीं आया तो फिर क्या अर्थ।

आचार्यश्री ने कहा कि आज अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह प्रारम्भ हुआ है। आचार्य श्री तुलसी ने अणुव्रत आन्दोलन चलाया और आज कितने अजैन लोग भी इससे जुड़े हुए हैं। अणुव्रत को बाजार, चौराहों, विद्यालयों और जेल में बंद कैदियों के बीच भी ले जाया जाये, ताकि उनका जीवन भी अच्छा बन सके। मैं नशा नहीं करूँगा, मैं निरपराध की हत्या नहीं करूँगा, ईमानदार रहूँगा, पर्यावरण की रक्षा करूँगा आदि छोटे-छोटे नियम आदमी के जीवन में आते हैं तो जीवन अच्छा बन सकता है। उद्बोधन सप्ताह का प्रथम दिन सांप्रदायिक सौहार्द दिवस है। आज दो संप्रदायों का मिलन हो रहा है। आपके प्रति आध्यात्मिक मंगलकामनाएं हैं।

दो आध्यात्मिक महापुरुषों का आत्मीय मिलन

हरिधाम सोखड़ा योगी डिवाइन सोसायटी के स्वामी त्यागवल्लभ ने अपने उद्बोधन में कहा कि आज बहुत सौभाग्य की बात है कि एक साथ दो महापुरुषों के दर्शन का अवसर जनता को मिला है। आचार्य श्री महाश्रमण हजारों किलोमीटर की पदयात्रा कर जन-जन को सद्भावना, नैतिकता व नशामुक्ति का

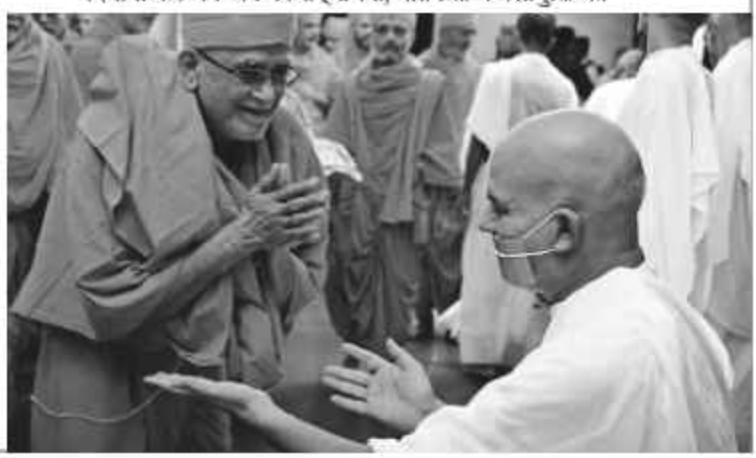

संदेश दे रहे हैं। विकृति की दिशा में आगे बढ़ रहे समाज को ऐसे महापुरुषों की मंगल प्रेरणा से अध्यात्म और साधना की ओर बढ़ाया जा सकता है। उन्होंने सांप्रदायिक सौहार्द दिवस के अवसर पर गुरुहरि प्रेमस्वरूप स्वामी द्वारा लिखित मंगल पत्र का वाचन भी किया।

इससे पहले महावीर समवसरण में अणुव्रत उद्‌बोधन सप्ताह का शुभारम्भ आचार्य श्री महाश्रमण के मंगल महामंत्रोच्चार के साथ हुआ। अणुव्रत समिति सूरत के अध्यक्ष विमल लोढ़ा और अणुविभा के उपाध्यक्ष राजेश सुराणा ने भी अपनी भावाभिव्यक्ति दी। विनोद बांठिया ने प्रेमस्वरूप स्वामी व स्वामी त्यागवल्लभ का परिचय प्रस्तुत किया।

अहिंसा सभी प्राणियों के लिए कल्याणकारी

अणुव्रत उद्‌बोधन सप्ताह का दूसरा दिन **2 अक्टूबर को अहिंसा दिवस** के रूप में समायोजित किया गया। इस अवसर पर जनमेदिनी को प्रेरणा प्रदान करते हुए अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण ने कहा कि अणुव्रत उद्‌बोधन सप्ताह के सात दिन अणुव्रत के प्रचार-प्रसार की दृष्टि से भी बहुत महत्वपूर्ण हैं। अणुव्रत से जुड़ी हुई संस्थाएं अहिंसा, नैतिकता व नशामुक्ति का यथासंभव प्रचार-प्रसार करती रहें। आदमी यह प्रयास करे कि उसके जीवन में अहिंसा का प्रभाव बना रहे। आदमी की भाषा में, विचार में, व्यवहार में अहिंसा का भाव बना रहे। आज का दिन महात्मा गांधी से भी जुड़ा हुआ है। अहिंसा एक प्रकार की भगवती है, माता है, जीवनदाता है, सभी प्राणियों के लिए कल्याणकारी है। अहिंसा मानो सभी प्राणियों को अभय बना देती है। अहिंसा शौर्य, वीर्य और बलवती हो, इसका प्रयास करना चाहिए। मंगल प्रवचन के उपरान्त आचार्यश्री ने प्रेक्षाध्यान कल्याण वर्ष के संदर्भ में उपस्थित जनता को प्रेक्षाध्यान का प्रयोग भी कराया।

जीवन में शक्ति और शांति दोनों आवश्यक

अणुव्रत उद्‌बोधन सप्ताह के तीसरे दिन **3 अक्टूबर को अणुव्रत प्रेरणा दिवस** पर अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण ने पावन पाथेय प्रदान करते हुए कहा कि परम पूज्य आचार्य श्री तुलसी ने अणुव्रत का कार्य आगे बढ़ाया था। अणुव्रत का यह मंतव्य है कि अपनी-अपनी धर्म-परंपरा में रहते हुए भी अणुव्रत नियमों के पालन कर गुडमैन बनने का प्रयास होना चाहिए। शिक्षा संस्थानों में खूब अच्छा कार्य चलता रहे।

आचार्यश्री ने कहा कि आदमी के जीवन में शक्ति की महत्ता होती है। शक्तिहीन आदमी मानो दयनीय के समान होता है। जिसमें शक्ति होती है, वह अपनी शक्ति का प्रयोग किसी को दुःख देने में नहीं, किसी का भला करने में, सेवा करने में करे। जीवन में उपालंभ मिल जाये या प्रशंसा हो जाये, दोनों में ही समता भाव में रहने का प्रयास करना चाहिए। शक्ति होने पर भी शांति में रहने का प्रयास करना चाहिए। आचार्यश्री ने प्रेक्षाध्यान का भी प्रयोग कराया।

वीर नर्मद गुजरात यूनिवर्सिटी के वाइस चांसलर किशोर चावड़ा ने अपने संबोधन में कहा कि हम लोग तो हर वर्ष हजारों बच्चों की परीक्षा लेते हैं, लेकिन उनमें से मानव कितने बनते हैं? मानव बनाने का कार्य तो आचार्य श्री महाश्रमणजी कर रहे हैं। उन्होंने आचार्यश्री को अपनी यूनिवर्सिटी में पधारने का अनुरोध भी किया।

अहिंसा और संयम हो तो पर्यावरण भी हो सकता है सुरक्षित

अणुव्रत उद्‌बोधन सप्ताह का चौथा दिन **4 अक्टूबर पर्यावरण शुद्धि दिवस** के रूप में समायोजित किया गया। इस अवसर पर अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण ने पावन पाथेय प्रदान करते हुए कहा कि आदमी के जीवन में अहिंसा और संयम - ये दो तत्त्व रहते हैं तो अनेक समस्याओं का समाधान अपने आप हो सकता है। वृक्षों को अनावश्यक न काटा जाये, इसके लिए आगम में जागरूक किया गया है। वनस्पति और मानव में समानता की बात भी बतायी गयी है। वनस्पति भी प्राणी है, उसके प्रति संयम रखने का प्रयास हो। बिजली, पानी आदि का जितना संयम किया जा सके, करने का प्रयास करना चाहिए। अहिंसा और संयम के द्वारा पर्यावरण को ही नहीं, अपनी आत्मा को भी शुद्ध बनाया जा सकता है। पर्यावरण विशेषज्ञ डॉ. सर्वेश गौतम ने भी विचार व्यक्त किये। डॉ. दयांजलि ठक्कर ने कहा कि हम सभी जितना संभव हो सके, पर्यावरण के शुद्धीकरण का प्रयास करें, पेड़-पौधे लगाने का प्रयास करें।

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के तत्त्वावधान में अणुव्रत समिति ग्रेटर सूरत एवं आचार्य श्री महाश्रमण प्रवास व्यवस्था समिति सूरत द्वारा पर्यावरण जागरुकता अभियान के तहत वॉकिथन का आयोजन किया गया। इसमें स्कूली बच्चों के साथ ही विभिन्न समाजों के लगभग 1500 सदस्यों ने भाग लिया। वॉकिथन अहिंसा द्वार, संयम विहार से प्रारंभ होकर मधुरम भोजनशाला, महावीर चौक, संगिनी इक्रोक, भादानी कॉम्प्लेक्स, पेट्रोल पंप होते हुए पुनः महावीर समवसरण पहुँची जहाँ अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण ने इसमें शामिल लोगों को संबोधित किया। वॉकिथन के बाद पौधरोपण का कार्यक्रम भी रखा गया।

नशामुक्ति दिवस पर सैकड़ों एनसीसी कैडेटों ने स्वीकार किये संकल्प

अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह के पाँचवें दिन 5 **अक्टूबर** को **नशामुक्ति दिवस** पर आचार्य श्री महाश्रमण ने कहा कि शरीर को टिकाये रखने के लिए हवा, पानी और भोजन अत्यावश्यक है। आदमी को सात्विक भोजन करना चाहिए, किन्तु कई बार आदमी ऐसी चीजों को खा लेता है, जो जीवन को नुकसान पहुँचाने वाली होती हैं। शराब, गुटखा, सिगरेट, बीड़ी आदि जो शरीर के लिए अहितकर होती है, उसका आसेवन करने लगता है। शाकाहार से काम चलता है तो फिर भोजन में मांसाहार क्यों शामिल किया जाये। जीवन में नशामुक्ति की बात भी है। अणुव्रत आन्दोलन का एक सूत्र है नशामुक्ति। केन्द्रीय कानून एवं संसदीय कार्य राज्यमंत्री तथा जैन विश्व भारती मान्य विश्वविद्यालय के कुलाधिपति अर्जुनराम मेघवाल भी आचार्यश्री की मंगल सन्निधि में उपस्थित हुए। आचार्यश्री ने कहा कि आज अर्जुनराम मेघवाल जी आये हैं। आप अणुव्रत से भी जुड़े हुए हैं। ये इतनी बार आ चुके हैं, मानो परिवार के सदस्य की भाँति हैं। गुरुदेव तुलसी के समय ये विद्यार्थी के रूप में थे, तब से इनका लगाव रहा है। राजनीति भी सेवा का बहुत बड़ा माध्यम है। अणुव्रत की अनेक संस्थाएं हैं, इनमें अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी अणुव्रत के कार्यों के लिए जिम्मेदार संस्था है। अणुव्रत का जितना प्रचार-प्रसार हो सके, इसका प्रयास हो।

केन्द्रीय मंत्री अर्जुनराम मेघवाल ने कहा कि नशामुक्ति के लिए अणुव्रत एक्सप्रेस में कार्य किया जा सकता है। एनसीसी जीवन में अनुशासन का बहुत महत्व होता है। आचार्यश्री तुलसी ने अपने से अपना अनुशासन करने की प्रेरणा दी। नॉनवेज छोड़कर सात्विक हो जाएं तो विचारों में कितनी उन्नति हो जाएगी।

एनसीसी की मेजर अरुंधति शाह ने कहा कि नशामुक्ति आज के समय की सबसे बड़ी समस्या है। जैन धर्म को वैज्ञानिक धर्म माना गया है। यहाँ पर मानव जीवन की विभिन्न समस्याओं का समाधान हो सकता है। आज दुनिया डेटा के जंजाल में फँस गयी है तो लोग सप्ताह में एक दिन डेटा का भी उपवास करें, ऐसा प्रयास होना चाहिए। एलिवेट के कार्य से जुड़े मुनि अभिजीतकुमार ने अपनी विचाराभिव्यक्ति दी।

आचार्यश्री ने समुपस्थित एनसीसी के कैडेटों को प्रेरणा देते हुए ड्रग्स का सेवन और ड्रिंकिंग न करने की प्रतिज्ञा करने का आह्वान किया तो एनसीसी के कैडेटों ने सहर्ष संकल्प स्वीकार किया। अणुविभा अध्यक्ष अविनाश नाहर ने देश भर में चल रहे अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह की जानकारी दी। उपाध्यक्ष राजेश सुराणा और अणुव्रत समिति सूरत के अध्यक्ष विमल लोढ़ा ने भी विचार व्यक्त किये।

अनुशासन दिवस पर दी स्वयं पर अनुशासन की प्रेरणा

अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह का छठा दिन **6 अक्टूबर अनुशासन दिवस** के रूप में मनाया गया। इस अवसर पर आचार्य श्री महाश्रमण ने कहा कि अनुशासन सभी के जीवन के लिए आवश्यक होता है। निज पर शासन, फिर अनुशासन के सूत्र को आत्मसात् करने का प्रयास होना चाहिए। अनुशासन को अपने जीवन में समुचित महत्व देने का प्रयास करना चाहिए। स्वयं पर अनुशासन करने का प्रयास करना चाहिए, फिर दूसरों पर भी अनुशासन की बात हो सकती है। विद्यार्थियों के साथ ही कोई व्यक्ति छोटा हो या बड़ा, सभी में अनुशासन होना चाहिए। आचार्यश्री ने काफी संख्या में उपस्थित होमगार्ड्स के जवानों को सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति की प्रेरणा देते हुए इनके संकल्प दिलाये। होमगार्ड्स के ऑफिसर सी. बी. बोहरा ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। बेंगलुरु ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने अपनी प्रस्तुति दी तथा प्रशिक्षिकाओं ने गीत का संगान किया।

जीवन विज्ञान दिवस पर विद्यार्थियों ने स्वीकार किये संकल्प

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण ने अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह के अंतिम दिन **7 अक्टूबर** को **जीवन विज्ञान दिवस** पर पावन प्रेरणा प्रदान करते हुए कहा कि गुरुदेव आचार्य श्री तुलसी ने अणुव्रत आन्दोलन का शुभारम्भ किया था। उसका पचहत्तरवां वर्ष भी मना लिया गया है।

आज अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह का अंतिम दिन जीवन विज्ञान दिवस के रूप में समायोजित है। यह शिक्षा जगत के लिए है। शिक्षा में ज्ञान बढ़े तो यह अच्छी बात होती ही है, इसके साथ ही शिक्षा संस्कारों से युक्त हो तो बहुत ही सुन्दर बात हो सकती है। जीवन कैसे जीना, श्वास कैसे लेना, चलना, बोलना, बैठना, व्यवहार करना आदि सभी कलात्मक रूप में हो। विद्यार्थियों में भाव और विचार अच्छे हों, इसका प्रयास हो। जीवन सादगी और संयम से युक्त हो। सद्विचार और सदाचार जीवन में आ गया तो जीवन का विज्ञान जीवन में आ सकता है।

आचार्यश्री ने समुपस्थित विद्यार्थियों को सद्भावना, नैतिकता व नशामुक्ति की प्रेरणा देते हुए इनके संकल्प भी दिलाये। विद्यार्थियों ने जीवन विज्ञान गीत का संगान किया। अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के अध्यक्ष अविनाश नाहर और भगवान महावीर यूनिवर्सिटी के प्रेसिडेंट संजय जैन ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। संजय बोथरा ने अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह के सात दिवसीय कार्यक्रम की संक्षिप्त रिपोर्ट प्रस्तुत की। अणुव्रत समिति सूरत के अध्यक्ष विमल लोढ़ा ने भी विचार रखे।

देश भर में मनाया गया अणुव्रत उद्‌बोधन सप्ताह

अणुव्रत समितियों के कार्यक्रमों से हुआ अणुव्रत दर्शन का व्यापक प्रचार-प्रसार

■■ संयोजिका डॉ. कुसुम लुनिया की रिपोर्ट ■■

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण द्वारा उद्‌घोषित तथा अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी द्वारा निर्देशित अणुव्रत उद्‌बोधन सप्ताह 1 अक्टूबर से 7 अक्टूबर तक भारत और नेपाल में सफलतापूर्वक आयोजित हुआ। इस दौरान आयोजित कार्यक्रमों के माध्यम से अणुव्रत का व्यापक प्रचार-प्रसार हुआ।

केन्द्रीय स्तर पर सूरत में अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण के सान्निध्य में हजारों श्रावकों की उपस्थिति में भव्य कार्यक्रम हुए। अणुव्रत के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनिश्री मननकुमार के मार्गदर्शन में आयोजित इन कार्यक्रमों में अणुव्रत समिति ग्रेटर सूरत का सहयोग प्राप्त हुआ।

अनेकानेक चारित्रात्माओं के सान्निध्य में विभिन्न स्थानों पर सातों दिन के सफल आयोजन हुए। कई चारित्रात्माओं ने अणुव्रत समितियों की ओर से जेलों, स्कूलों आदि में आयोजित कार्यक्रमों में भी अपना सान्निध्य प्रदान किया। विभिन्न संप्रदायों के धर्मगुरुओं, अनेकानेक संस्थाओं के प्रमुखों, राजनीतिक हस्तियों, विषयों के विशेषज्ञों व समान विचारधारा की संस्थाओं ने भी अणुव्रत उद्‌बोधन सप्ताह को सफल बनाने में योगदान दिया।

अणुविभा अध्यक्ष अविनाश नाहर ने ग्रेटर सूरत एवं जयपुर अणुव्रत समिति के कार्यक्रमों में, वरिष्ठ उपाध्यक्ष प्रताप दुगड़ ने कोलकाता व हावड़ा, उपाध्यक्ष राजेश सुराणा ने ग्रेटर सूरत, माला कातरेला ने चेन्नई, महामंत्री भीखम सुराणा व अणुव्रत उद्‌बोधन सप्ताह की राष्ट्रीय संयोजिका डॉ. कुसुम लुनिया ने दिल्ली व गाजियाबाद अणुव्रत समिति के आयोजनों में तथा अणुविभा के अन्य पदाधिकारियों ने स्थानीय आयोजनों में अपनी गरिमामयी उपस्थिति दर्ज करायी।

क्षेत्रीय स्तर पर आयोजित कार्यक्रमों में आमजन बहुत लाभान्वित हुए। नगर पालिका, मन्दिर, मस्जिद, गिरजाघर, गुरुद्वारों, स्थानकों व जैन भवनों के साथ ही जेलों, बाल सुधारगृहों, क्लब हाउसों, पार्कों, चौपालों, चौराहों और अन्य सार्वजनिक स्थानों पर सैद्धान्तिक व प्रायोगिक दोनों स्वरूपों में उत्साहपूर्वक आयोजन हुए।

❖ 1 **अक्टूबर** को सद्‌भाव और मैत्री के भाव से ओतप्रोत सांप्रदायिक सौहार्द दिवस भव्य रूप में 70 से अधिक स्थानों पर मनाया गया। **गाजियाबाद** अणुव्रत समिति द्वारा जैन स्थानक में ईसाई, सिख, हिन्दू, ब्रह्मसमाज के प्रतिनिधियों की उपस्थिति में आयोजित कार्यक्रम में स्थानकवासी सम्प्रदाय के गुरु योगीराज अरुण सागर महाराज ने कहा कि आज की संगोष्ठी सांप्रदायिक सौहार्द का सच्चा उदाहरण है। **दलखोला** समिति ने ठाकुरबाड़ी में, **इस्लामपुर** समिति ने नगरपालिका और वृद्धाश्रम में, **पेटलाबाद** ने चौक बाजार में, **बेंगलुरु** ने महारानी क्लस्टर यूनिवर्सिटी में, **मण्डी गोविंदगढ़** विश्वविद्यालय में विभिन्न धर्मगुरुओं के साथ सांप्रदायिक सौहार्द दिवस मनाया गया। इस दौरान अणुव्रत आचार संहिता के चौथे व पाँचवें नियम का अधिकाधिक प्रसार किया गया।

❖ 2 **अक्टूबर** अहिंसा दिवस पर अणुव्रत अहिंसा और विश्व शांति विषयक 104 से ज्यादा सार्थक आयोजन किये गये। **बाड़मेर** अणुव्रत समिति ने जिला कारागार में, **वापी** समिति ने अनाथालय में, **रतलाम** ने सर्किल जेल में, **भिवंडी** ने चन्द्रप्रभु मन्दिर में, **कोटा, विजयनगरम** आदि ने सड़कों पर भव्य रैलियां कीं। **ग्रेटर सूरत** समिति ने रेलवे अधिकारियों, कुलियों व सफाई कर्मचारियों के साथ सूरत रेलवे स्टेशन परिसर में स्वच्छता कार्यक्रम आयोजित किया। **भीलवाड़ा** और **उदयपुर** समिति ने सेन्ट्रल जेल में, **दालखोला** ने कैथोलिक चर्च में, **गाजियाबाद** ने क्लब हाउस में, **दिल्ली** ने किंग्सवे कैम्प में, **चेन्नई, आसीन्द, जसोल** आदि समितियों की ओर से अनेक स्थानों पर विशेष रूप से स्कूलों में आयोजन हुए। इन कार्यक्रमों में अणुव्रत आचार संहिता के पहले, दूसरे व तीसरे नियम का अधिकाधिक प्रसार हुआ।

❖ 3 **अक्टूबर** को अणुव्रत प्रेरणा दिवस पर व्यक्ति-सुधार व अणुव्रत जीवनशैली के प्रसार हेतु **उदयपुर** अणुव्रत समिति ने जेल में, **सरदारशहर** ने हरिजन सेवकों के साथ, **चेन्नई** ने पार्क में, **हिसार** ने टैक्सी यूनियन में, **पुर** ने शिव मन्दिर में, **फरीदाबाद** ने काली माँ सेवा केन्द्र में, **नवगांव** ने वृद्धाश्रम में, **आसीन्द व भीलवाड़ा** ने जिला कारागृह में, **हावड़ा** अणुव्रत समिति ने जैन वाहिनी के साथ तथा अन्यान्य क्षेत्रों में 70 कार्यशालाओं के सार्थक आयोजन हुए। इस दौरान अणुव्रत आचार संहिता के छठे व सातवें नियम का व्यापक प्रसार हुआ।

❖ 4 **अक्टूबर** को पर्यावरण शुद्धि दिवस पर शुद्ध पर्यावरण का महत्व बताने और भावी पीढ़ियों को पर्यावरण संकट के बढ़ते खतरों से बचाने की जागरुकता हेतु 72 महत्वपूर्ण

आयोजन हुए। **चिकमंगलुरु** में चित्रकला प्रतियोगिता हुई। इन कार्यक्रमों में अणुव्रत आचार संहिता के 11वें नियम का अधिकाधिक प्रसार हुआ।

❖ **5 अक्टूबर** को नशामुक्ति दिवस पर 'नशा नाश का द्वार करें इनकार' विषय पर रैलियां तथा कार्यशालाएं हुईं। नशामुक्ति से संकल्पबद्ध होने के लिए 74 कार्यक्रम हुए। लाजपोर (सूरत) सेंट्रल जेल में आयोजित कार्यक्रम में कैदियों को नशामुक्ति के बारे में जागरूक किया गया तथा नशामुक्ति का संकल्प दिलाया गया। इस अवसर पर जेल के वरिष्ठ अधिकारियों की विशेष उपस्थिति रही। **गाजियाबाद** अणुव्रत समिति की अपील के मद्देनजर एसएचओ प्रीति सिंह की पहल पर स्थानीय पुलिस बल के साथ पैसेफिक मॉल से बस अड्डा तक नशामुक्ति रैली निकाली गयी। अणुव्रत आचार संहिता के 10वें नियम - 'मैं व्यसन मुक्त जीवन जीऊँगा' का व्यापक प्रचार-प्रसार किया गया।

❖ **6 अक्टूबर** को अनुशासन दिवस पर 'अणुव्रत, अनुशासन और सफलता' विषय पर 74 से अधिक स्थानों पर कार्यक्रम आयोजित किये गये। **कोलकाता और हावड़ा** अणुव्रत समिति ने महाराजा सफारी पार्क में नये रूप में कार्यक्रम आयोजित किया। इस दौरान अणुव्रत आचार संहिता के सातवें व नौवें नियम का विशेष प्रचार-प्रसार हुआ।

❖ **7 अक्टूबर** को जीवन विज्ञान दिवस पर जीवन विज्ञान के माध्यम से नयी पीढ़ी के संतुलित विकास के उद्देश्य से स्कूलों, कॉलेजों में 107 से ज्यादा आयोजन हुए। इस दौरान 'जीवन विज्ञान से सर्वांगीण व्यक्तित्व विकास' विषयक कार्यशालाओं का आयोजन हुआ। अनेक नये विद्यालय भी जीवन विज्ञान के कार्यक्रम से जुड़े।

इस प्रकार अणुव्रत दर्शन की सकारात्मकता का अधिकाधिक प्रचार-प्रसार कर बेहतर व्यक्ति, समाज व दुनिया के निर्माण में सहभागी बनने की दिशा में अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह काल के भाल पर सशक्त हस्ताक्षर रहा।

दिल्ली समेत अनेक स्थानों पर उद्बोधन सप्ताह से पहले आयोजित प्रेस कॉन्फ्रेंस का अच्छा प्रभाव रहा। प्रिंट व इलेक्ट्रॉनिक मीडिया ने भी व्यापक कवरेज द्वारा अणुव्रत के प्रचार-प्रसार में प्रभावी भूमिका का निर्वहन किया। अणुव्रत मीडिया ने प्रतिदिन लगातार सोशल मीडिया पर खबरें प्रसारित कीं।

अणुविभा अध्यक्ष अविनाश नाहर, महामंत्री भीखम सुराणा सहित इस सप्ताह को सफल बनाने में दिन-रात जुटे सहसंयोजक गण एवं अणुव्रत परिवार के प्रत्येक सदस्य को हृदय की गहराइयों से अनन्त साधुवाद। अणुव्रत मीडिया समेत समस्त कलम के फनकारों का भी धन्यवाद। दिल्ली ऑफिस के सहयोगी मनीष सोनी, नवीन शर्मा समेत समस्त सहयोगियों का शुक्रिया।

देशभर की अणुव्रत समितियों और मंचों ने अनेकानेक कार्यक्रम आयोजित किये -

ग्रेटर सूरत
इस्लामपुर
गंगापुर
अम्बिकापुर
प्रतापगढ़
बारडोली
दिल्ली
नवगांव
छोटी खाटू
लूणकरणसर
फारबिसगंज
जींद
बेंगलुरु
हासन
फरीदाबाद
विजयनगरम
सरदारशहर
पीलीबंगा
बाड़मेर
श्रीडूंगरगढ़
नोएडा
पाली
कोलकाता
दिवेर
दिनहाटा
चूरू
आसींद
हिरियूर
सुनाम
धरान
मैलूसर
विजयनगर
भीम
किशनगढ़
झाबुआ
ब्यावर
ढाढंण

गाजियाबाद
जलगांव
बीदासर
जसोल
सिलीगुड़ी
डोंबिवली
हिसार
अरियाकोर्ट
छापर
इचलकरंजी
मंडी गोबिंदगढ़
बड़ोदरा
पुणे
वापी
राजसमन्द
भीलवाड़ा
गंगाशहर
सिरसा
फॉरबिसगंज
हावड़ा
हुबली
शाहपुरा
हांसी
देवगढ़ मदारिया
रायपुर
बीकानेर
किशनगंज
नोहर
खारूपेटिया
सवाईबड़ी
कालू
कटक
हिसार
विजयवाड़ा
पेटलावद
सोनायमांझी
कुआथल

दालखोला
जयपुर
चेन्नई
चिकमंगलुरु
धुबड़ी
आमेट
गुवाहाटी
बल्लारी
चाड़वास
भिवानी
कोटा
बोरावड़
लावा सरदारगढ़
अहमदाबाद
टोहाना
लाडनूं
अजमेर
रतलाम
विराटनगर
मुम्बई
जोधपुर
पुर
इंदौर
पालघर
हनुमानगढ़
उदयपुर
बालोतरा
कोटकपूरा
उदासर
औरंगाबाद
चाचियावास
टमकोर
सायरा
नोखा
सवदत्ति
संभाजीनगर

राजकीय उच्च माध्यमिक वि

अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह

Anuvrat Balodaya's
KIDZONE
Fun | Creativity | Learning

बच्चों के साथ नामचीन हस्तियां भी पहुँच रहीं किडजोन

■■ संयोजिका रेणु नाहटा की रिपोर्ट ■■

सूरत। अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी द्वारा आचार्य महाश्रमण चातुर्मासिक प्रवास स्थल संयम विहार में संचालित अणुव्रत बालोदय किडजोन में बच्चे खेलकूद के माध्यम से ज्ञान प्राप्त कर रहे हैं, वहीं माता-पिता चिंतामुक्त होकर अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण के दर्शन, सेवा और प्रवचन का लाभ ले रहे हैं।

किडजोन में प्रतिदिन बच्चों के लिए ड्राइंग एंड पेंटिंग एक्टिविटी, मिड ब्रेन एक्टिविटी जैसी कार्यशालाओं का आयोजन किया जा रहा है। सरस्वती विद्या मंदिर उधना के 150 छात्र-छात्राएँ अपने शिक्षकों के साथ किडजोन पहुँचे तथा गेम्स का आनंद लिया। अणुव्रत के पर्यवेक्षक मुनिश्री मननकुमार ने बच्चों को प्रेरणा पाथेय प्रदान किया। महावीर इंटरनेशनल द्वारा संचालित विद्यालय के 50 से अधिक छात्र और स्टाफ भी किडजोन देखने पहुँचे।

ओडिशा के पुरी लोकसभा क्षेत्र से सांसद संबित पात्रा, सुप्रसिद्ध उद्योगपति शासनसेवी के. एल. जैन पटावरी, सुरेश राज सुराणा सहित अनेक गणमान्य व्यक्तियों का किडजोन के अवलोकन हेतु पदार्पण हुआ। इन महानुभावों ने खेल-खेल में बच्चों के शारीरिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक विकास के लिए संचालित अणुविभा के इस उपक्रम की सराहना की। अणुविभा अध्यक्ष अविनाश नाहर, प्रबंध न्यासी तेजकरण सुराणा, महामंत्री भीखम सुराणा, निवर्तमान अध्यक्ष संचय जैन, उपाध्यक्ष राजेश सुराणा तथा अन्य पदाधिकारीगण व राष्ट्रीय कार्यकारिणी के सदस्य समय-समय पर किड जोन का विजिट कर मार्गदर्शन प्रदान करते हैं।

अणुव्रत समिति ग्रेटर सूरत के पदाधिकारी एवं कार्यकारिणी सदस्य तथा सौ से अधिक कार्यकर्ता समय-समय पर किडजोन में अपनी सेवाएँ दे रहे हैं। आचार्य श्री महाश्रमण प्रवास व्यवस्था समिति सूरत का भी पूरा सहयोग मिल रहा है।

अणुव्रत वाटिकाएं लोगों को कर रहीं पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूक

देश के अनेक स्थानों के साथ नेपाल में भी अणुव्रत वाटिका का लोकार्पण

■■ संयोजिका डॉ. नीलम जैन की रिपोर्ट ■■

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के तत्त्वावधान में चलाये जा रहे पर्यावरण जागरुकता अभियान के तहत अणुव्रत समितियां अपने-अपने क्षेत्र में अणुव्रत वाटिकाओं का निर्माण कर रही हैं। इन वाटिकाओं के माध्यम से लोगों को पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूक किया जा रहा है।

जयपुर अणुव्रत समिति द्वारा बगरू के दिलीप इंडस्ट्रीज प्राइवेट लिमिटेड और दिलीप इंडस्ट्रीज आईएनडी प्राइवेट लिमिटेड में एक साथ दो अणुव्रत वाटिकाओं का उद्घाटन किया गया। दिलीप इंडस्ट्रीज के चेयरमैन व अणुव्रत समिति उपाध्यक्ष विनोद बैद ने बताया कि अणुव्रत वाटिकाओं को धीरे-धीरे बड़े उद्यानों में परिवर्तित कर दिया जाएगा। इस अवसर पर अणुव्रत समिति की मंत्री डॉ. जयश्री सिद्धा, तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के अध्यक्ष पवन जैन, सेंट्रल जोन के अध्यक्ष संदीप श्यामसुखा, सेंट्रल जोन मेम्बरशिप कन्विनर पूर्वी जैन तथा अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

राजसमन्द अणुव्रत समिति की ओर से सनराइज सीनियर सैकण्डरी स्कूल राजनगर एवं आदर्श विद्या मन्दिर सीनियर सैकण्डरी स्कूल कांकरोली में अणुव्रत वाटिका का लोकार्पण किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए अणुविभा के उपाध्यक्ष डॉ. विमल कावड़िया ने अणुव्रत को जन-जन तक पहुँचाने का आह्वान किया। मुख्य अतिथि शिक्षाविद् डॉ. राकेश तैलंग तथा विशिष्ट अतिथि अणुव्रत सेवी मदन धोका, ख्यालीलाल मेहता, अणुविभा बालोदय शिविर की प्रभारी डॉ. सीमा कावड़िया ने भी विचार रखे। समिति अध्यक्ष अचल धर्मावत ने अतिथियों का स्वागत अभिनंदन किया। संस्था प्रधानों, शिक्षक-शिक्षिकाओं एवं विद्यार्थियों ने वाटिका में पौधरोपण कर पर्यावरण को शुद्ध बनाने का संकल्प लिया।

किशनगंज अणुव्रत समिति द्वारा अणुव्रत चेतना दिवस पर उपासक सुशील बाफना, उपासक सुमेरमल बैद ने अणुव्रत वाटिका के बोर्ड का अनावरण किया। कार्यक्रम में डॉ. एम. एल. जैन, सभा के अध्यक्ष विजयकरण दफ्तरी, श्री नेपाल बिहार जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा के अध्यक्ष चैनरूप दुगड़, महिला मंडल अध्यक्ष संतोष देवी दुगड़, अणुव्रत समिति अध्यक्ष रश्मि बैद, टीपीएफ अध्यक्ष विनीत दफ्तरी आदि की उपस्थिति रही।

नेपाल की धरान अणुव्रत समिति द्वारा पिन्डेश्वर संस्कृत माध्यमिक विद्यालय परिसर में अणुव्रत वाटिका का निर्माण किया गया है। वाटिका के उद्घाटन के अवसर पर पूर्व उपकुलपति 94 वर्षीय पुरुषोत्तम भट्टराई तथा अन्य पदाधिकारीगण उपस्थित थे। अणुविभा के संगठन मंत्री भरत चौरड़िया ने विद्यालय परिवार का धन्यवाद ज्ञापित किया। समिति अध्यक्ष मोनिका दुगड़ ने आभार ज्ञापन किया। भारत से बाहर यह पहली अणुव्रत वाटिका है।

गाजियाबाद अणुव्रत समिति की ओर से सूर्यनगर स्थित ध्रुव पार्क में अणुव्रत वाटिका का उद्घाटन किया गया। इस अवसर पर अणुविभा के महामंत्री भीखमचंद सुराणा, संगठन मंत्री डॉ. कुसुम लुनिया, सूर्यनगर निगम पार्षद कृष्ण मोहन खेमका, वन विभाग अधिकारी विकास सिंटोरिया, अणुव्रत समिति दिल्ली के निवर्तमान अध्यक्ष शान्तिलाल पटावरी, तेरापंथ सभा गाजियाबाद के अध्यक्ष सुशील सिपानी, मंत्री रमेश बैंगानी तथा अन्य गणमान्य लोग उपस्थित थे। निगम पार्षद कृष्ण मोहन खेमका ने वाटिका के लिए जगह की स्वीकृति प्रदान की तथा वन विभाग के अधिकारी विकास सिंटोरिया ने हर्बल पौधे निःशुल्क प्रदान किये। कार्यक्रम संयोजक नीतू सुराणा और वीरेंद्र जैन ने बताया कि इस अवसर पर ईको फ्रेंडली कैरी बैग का वितरण भी किया गया।

बल्लारी अणुव्रत समिति द्वारा श्री श्री कल्याण स्वामी मठ मिलर पेठ के प्रांगण में अणुव्रत वाटिका का निर्माण किया गया। इस अवसर पर अतिथियों ने वाटिका में 25 पौधे लगाये। मठाधीश श्री श्री कल्याण महास्वामी ने प्रकृति संरक्षण से जुड़े अणुविभा के इस कार्यक्रम को मानव जाति के लिए अति आवश्यक बताया। मुख्य अतिथि बल्लारी महानगर पालिका के महापौर मुल्लंगी नंदीश तथा विशेष अतिथि वन अधिकारी गिरीश व बल्लारी लोकसभा सांसद एम. तुकाराम की पत्नी समाजसेविका एम.अन्नपूर्णा ने अणुविभा के इस कार्य की सराहना की। समिति की ओर से अतिथियों को अणुव्रत दुपट्टा, शॉल एवं साहित्य प्रदान कर

सम्मानित किया गया। इस अवसर पर वाटिका के प्रायोजक मंजुला बसंत छाजेड़, समिति अध्यक्ष ए. बी. पारसमल, मंत्री प्रवीणा लुणावत एवं अणुव्रत समिति के प्रतिनिधि तथा गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

चिकमंगलुरु अणुव्रत समिति की ओर से मुनिश्री मोहजीत कुमार, मुनिश्री भव्य कुमार और मुनिश्री जयेश कुमार के सान्निध्य में अणुव्रत वाटिका के बोर्ड का अनावरण किया गया। इस अवसर पर मुनिश्री मोहजीत कुमार ने कहा कि पर्यावरण संरक्षण के साथ ही हम सभी के दिलों में भीतरी पर्यावरण को भी शुद्धि मिले। बाद में अणुव्रत समिति अध्यक्ष मंजू भंसाली ने प्राइड यूरो किड्स स्कूल में जाकर वहाँ बनायी गयी अणुव्रत वाटिका में बोर्ड लगाया।

दिनहाटा अणुव्रत समिति द्वारा मदन मोहन पारा शारदा शिशु तीर्थ स्कूल में द्वितीय अणुव्रत वाटिका का उद्घाटन किया गया। इस अवसर पर स्कूल में पर्यावरण पर आधारित चित्रकला प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया। स्कूल के प्रधान शिक्षक उत्तम राय ने अणुव्रत समिति के कार्य की सराहना की। अणुव्रत समिति अध्यक्ष धर्मेन्द्र कुमार सुराणा, सहमंत्री दीपा जैन ने स्कूल प्रबंधन के प्रति आभार व्यक्त किया। समिति द्वारा बोड़ो सोलमारी ठाकुर पंचानन हाई स्कूल में तृतीय अणुव्रत वाटिका का उद्घाटन किया गया। स्कूल के प्रधान शिक्षक सजल साहा ने अणुव्रत समिति की प्रशंसा की। अणुव्रत समिति अध्यक्ष धर्मेन्द्र कुमार सुराणा, कोषाध्यक्ष संजय पाटोदी जैन ने स्कूल प्रबंधन का आभार व्यक्त किया।

इस्लामपुर अणुव्रत समिति की ओर से चोपड़ाझार ग्रीन वैली एकेडमी में अणुव्रत वाटिका का उद्घाटन किया गया। समिति अध्यक्ष ललिता धाड़ेवा ने खद्दा पहनाकर प्रधानाचार्य रुपेन ठाकुर एवं निवेदिता राय को सम्मानित किया। संयोजक मनीष बोथरा ने आभार व्यक्त किया।

नोएडा अणुव्रत समिति ने एमिटी यूनिवर्सिटी में स्थायी बोर्ड लगाकर अणुव्रत वाटिका का निर्माण किया। पौधे भी वितरित किये गये। कार्यक्रम में समिति अध्यक्ष आरती कोचर व उपाध्यक्ष कविता लोढ़ा की उपस्थिति रही।

फरीदाबाद अणुव्रत समिति द्वारा सेक्टर 10 डीएलएफ में और **दालखोला** अणुव्रत समिति द्वारा कृदय किड्स किंडरगार्टन स्कूल में अणुव्रत वाटिका का निर्माण किया गया है।

चूरू अणुव्रत समिति द्वारा तारानगर रोड स्थित कड़वासर में अणुव्रत वाटिका का शुभारंभ किया गया। यहाँ पर्यावरण संबंधी क्रियाकलापों के साथ-साथ बच्चों के लिए खेलकूद की सुविधाएं भी उपलब्ध रहेंगी।

स्कूली बच्चों को पौधे वितरित

अणुव्रत समिति **सिलीगुड़ी** की ओर से महानन्दा नदी के किनारे महानन्दा घाट पर नदी बचाओ अभियान के तहत रैली में शामिल लोगों तथा गुरुकुल स्कूल के बच्चों को जल सेवा के साथ ही हर घर पौधा अभियान के तहत पौधे वितरित किये गये। समिति अध्यक्ष ने गुरुकुल स्कूल के प्रधानाचार्य अरुणाशु शर्मा एवं अन्य संस्थाओं के प्रमुखों का सम्मान किया।

ग्रीन वॉकेथन के दौरान सचिन और सूरत में पौधरोपण

नवी मुंबई से नाकोड़ा जी (राजस्थान) तक की 1200 किलोमीटर की पैदल पर्यावरण यात्रा ग्रीन वॉकथेन 364 किलोमीटर का सफर तय करके 12 अक्टूबर को सचिन पहुँची। यहाँ सचिन अणुव्रत समिति के तत्त्वावधान में लाजपोर सेंट्रल जेल में पौधरोपण और नशामुक्ति कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें जेलर जशुभाई एन. देसाई, कुंदनसिंह जे. घारगे, धर्मेन्द्रसिंह बी. राणा एवं टीम का सहयोग प्राप्त हुआ।

ग्रीन वॉकिथन 14 अक्टूबर को सूरत पहुँची, जहाँ महावीर समवसरण में पौधरोपण का आयोजन किया गया। वॉकेथन में शामिल लोगों ने अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाश्रमण के दर्शन का लाभ लिया। दोनों ही स्थानों पर आयोजित कार्यक्रमों में अणुविभा पदाधिकारी, अणुव्रत समितियों के अध्यक्ष तथा अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे। इससे पहले अणुव्रत समिति मुंबई, ठाणे, लोधाधाम, पालघर और वापी (उमरगांव) की समितियों ने इस पैदल यात्रा में भागीदारी निभायी और अपने-अपने क्षेत्रों में पौधरोपण अभियान को सफलतापूर्वक अंजाम दिया। इंजीनियर विराग मधु मालती और उनकी पत्नी वंदना विराग वानखंडे का ग्रीन वॉकेथॉन के तहत एक लाख पौधे लगाने का लक्ष्य है।

पर्यावरण जागरुकता अभियान का बैनर लॉन्च

कोटकपूरा। इंटरनेशनल मिलेनियम स्कूल, समालसर में फरीदकोट जिला प्रशासन द्वारा 21 सितम्बर को आयोजित 'कौमी लोक नाच' के अवसर पर पंजाब विधानसभा के अध्यक्ष सरदार कुलतार सिंह संधवा, फरीदकोट के विधायक सरदार गुरदित सिंह सेखों तथा अन्य अतिथियों ने अणुविभा के पर्यावरण जागरुकता अभियान का बैनर लॉन्च किया। डीएसपी बलबीर सिंह ने उपस्थित जनसमूह को अणुविभा के नशामुक्ति प्रकल्प 'एलीवेट' के तहत ड्रग और अन्य नशे से दूर रहने के प्रति जागरूक किया। मंच संचालक संजीव शाद ने अणुविभा के प्रकल्पों एलीवेट, डिजिटल डिटॉक्स व ईको फ्रेंडली फेस्टिवल की जानकारी देते हुए लोगों को संकल्प भी दिलवाये।

इस अवसर पर एसएचओ चमकौर सिंह, कोटकपूरा अणुव्रत समिति के अध्यक्ष राजन जैन, उदय रणदेव तथा अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। आयोजन के दौरान डिस्पोजल बर्तनों का उपयोग किये बिना भोजन वितरित करवाया गया और लोगों को जूठन नहीं छोड़ने को प्रेरित किया गया।

अणुव्रत समाचार

ईको फ्रेंडली कैरी बैग का वितरण जारी

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के तत्त्वावधान में पर्यावरण संरक्षण को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से ईको फ्रेंडली कैरी बैग के वितरण का कार्य अनवरत जारी है। अणुव्रत समितियां व अणुव्रत सेवी ईको फ्रेंडली कैरी बैग की बुकिंग को लेकर उत्साह दिखा रहे हैं। इनमें अणुव्रत समिति किशनगंज, फरीदाबाद, मंडीगोविंगढ़ तथा उदयपुर शामिल हैं।

अम्बिकापुर अणुव्रत समिति ने शासकीय कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में ईको फ्रेंडली कैरी बैग का वितरण किया। **वापी** अणुव्रत समिति द्वारा तेरापंथ भवन में आयोजित अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट में आये पदाधिकारियों, अध्यापकों तथा अभिभावकों को ईको फ्रेंडली कैरी बैग वितरित किया गया। **फारबिसगंज** अणुव्रत समिति द्वारा अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट की राज्य स्तरीय प्रतियोगिता में 10 जजों व राज्य संयोजक को ईको फ्रेंडली कैरी बैग सहित पौधे भेंट किये गये।

व्यावहारिक शिक्षा के प्रयासों का नाम है अणुव्रत बालोदय शिविर

कुडोस किड्स स्कूल, भीलवाड़ा के 54 बच्चे पहुँचे अणुविभा मुख्यालय

राजसमंद। बच्चों की कल्पना के विद्यालय की प्रतिकृति है वह वातावरण जिसकी स्वच्छता और पवित्रता उन्हें 'चिल्ड्रन'स पीस पैलेस' में खींच लाती है। शिक्षा द्वारा संस्कारों की व्यावहारिक शिक्षा के प्रयासों का नाम है अणुव्रत बालोदय शिविर।

कुडोस किड्स स्कूल, भीलवाड़ा के 54 बच्चे तीन दिवसीय बालोदय शिविर के लिए 'चिल्ड्रन'स पीस पैलेस' पहुँचे। इस दौरान बच्चों ने अपने संज्ञान और समझ के बीच के संतुलित निष्कर्ष द्वारा अपने 'आंतरिक निर्णय' को अपने करणीय कार्यों के लिए 'लाइट हाउस' के रूप में स्वीकार किया।

अणुविभा उपाध्यक्ष डॉ. विमल कावड़िया ने स्वास्थ्य संबंधी टिप्स प्रदान किये। बालोदय शिविर की राष्ट्रीय संयोजिका डॉ. सीमा कावड़िया ने बालोदय के विभिन्न आयामों की जानकारी दी। अणुविभा की प्रायोजना 'स्कूल विद ए डिफरेंस' के संयोजक डॉ. राकेश तैलंग ने बच्चों की सीखने-सिखाने की विधियों का मूल्यांकन और समालोचन किया। विभिन्न रुचिकर एक्टिविटीज द्वारा बच्चों की अभिव्यक्ति को सशक्त बनाने हेतु शिक्षा मनीषी प्रकाश तातेड़ ने शिविर के तीन दिवसीय कार्यक्रमों का समन्वयन किया। अणुविभा द्वारा प्रकाशित 'बच्चों का देश' पत्रिका के संपादक व बालकों के मानस विज्ञान के अध्येता संचय जैन ने सूक्ष्म प्रबोधन दिया।

भाव, संस्कार और बुद्धि के बीच समन्वय पर आधारित मौन भोजन, ऑनेस्टी शोप, संयमित भोजन, समूह भावना, नेतृत्व कौशल और कलात्मक क्षमताओं को कक्षा पाँच से आठ के आयु वर्ग के जिज्ञासु विद्यार्थियों को औपचारिक कक्षा कक्षों से बाहर आकर प्रकृति, पर्यावरण, संस्कृति और स्वास्थ्य की अनूठी शिक्षा देने वाले शिविर के लाभार्थी बच्चों को स्कूल की संचालिका मधुबाला यादव और चिंतनशील शिक्षिकाओं होन्या कंवर, चेतना कंवर, हरि कंवर, पारूल यादव ने निर्देशन प्रदान किया। बाल संसद में मोबाइल के गुणावगुण विषय पर बच्चों ने सार्थक चर्चाएं कीं और संसद का संचालन कर लोकतंत्रीय कार्य प्रणाली का ज्ञान प्राप्त किया। वरिष्ठ कलावंत कमल सांचीहर ने बच्चों को सृजनात्मक कला के सूत्र बताये। कुडोस विद्यालय की संचालिका मधुबाला ने शिविर को 'बाल मन के उदय होने के दिन' के रूप में परिभाषित किया। जगदीश बैरवा, देवेन्द्र आचार्य, अनुपमा कसेरा और प्रतिभा जैन ने बालोदय दीर्घाओं में बच्चों की जिज्ञासाओं का समाधान किया।

अणुव्रत की बात

मनोज त्रिवेदी

जीवन विज्ञान कार्यशाला का आयोजन

चूरू। डाइट की ओर से सोती भवन में चल रहे जिला स्तरीय लीडरशिप प्रशिक्षण शिविर में चूरू अणुव्रत समिति द्वारा 26 सितम्बर को जीवन विज्ञान कार्यशाला का आयोजन किया गया।

जूम एप के माध्यम से आयोजित कार्यशाला में जीवन विज्ञान के राष्ट्रीय प्रशिक्षक राकेश खटेड़ ने प्राचार्यों को स्वयं तथा विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र-छात्राओं की जीवनशैली को सुदृढ़ बनाने हेतु मार्गदर्शन दिया। ऑनलाइन कार्यशाला का संचालन कमल बैंगानी ने किया। कार्यशाला में उपस्थित अणुव्रत समिति अध्यक्ष रचना कोठारी ने जीवन विज्ञान के अंतर्गत विभिन्न मुद्राओं का अभ्यास करवाया। कार्यक्रम में डॉ. चंद्र प्रकाश महर्षि, दिनेश कुलहरी, ओमप्रकाश बारूपाल प्रशिक्षण शिविर प्रभारी डाइट तथा 46 प्राचार्य उपस्थित थे।

धुबड़ी में जीवन विज्ञान सेमिनार

धुबड़ी। अणुव्रत समिति एवं डॉ. पन्नालाल ओसवाल मेमोरियल समिति के संयुक्त तत्त्वावधान में हरिसभा प्रांगण में 23 सितम्बर को जीवन विज्ञान सेमिनार का आयोजन हुआ। इसमें श्री शंकरदेव शिशु विद्या निकेतन धुबड़ी, गौरीपुर, गोलकगंज,

बिलासी पाड़ा एवं चापर विद्यालय तथा चिलाराय कॉलेज गोलकगंज के 125 विद्यार्थियों एवं 10 शिक्षकों ने भाग लेकर जीवन विज्ञान की सैद्धान्तिक जानकारी प्राप्त करने के साथ प्रायोगिक अभ्यास किया।

इस अवसर पर विद्यार्थियों, शिक्षकों, अभिभावकों एवं अणुव्रत समिति के कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए मेमोरियल समिति के सदस्य सुरेन्द्र ओसवाल (जीवन विज्ञान राज्य सह संयोजक, छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश) ने जीवन विज्ञान को सर्वांगीण व्यक्तित्व विकास का उपक्रम बताया। उन्होंने कहा कि वर्तमान में हमारा ध्यान बालक के शारीरिक और बौद्धिक विकास पर ही ज्यादा है, जबकि व्यक्तित्व के सर्वाधिक महत्वपूर्ण घटक मानसिक एवं भावनात्मक विकास को लगभग अनदेखा किया जा रहा है। जीवन विज्ञान के प्रयोगों से व्यक्तित्व के चारों आयामों - शारीरिक, बौद्धिक, मानसिक एवं भावात्मक का संतुलित विकास होकर सर्वांगीण व्यक्तित्व विकास होता है। उन्होंने बताया कि यहाँ उपस्थित सभी विद्यालयों एवं जवाहर हिन्दी हाई स्कूल, धुबड़ी के पुस्तकालयों में उपयोग हेतु जीवन विज्ञान पाठ्यपुस्तकों का एक-एक सेट मेमोरियल समिति द्वारा उपलब्ध करवाया जा रहा है।

सेमिनार में जीवन विज्ञान प्रशिक्षिका निहारिका नाहटा एवं रणजीता अग्रवाल ने 'प्रार्थना सभा में जीवन विज्ञान' की गतिविधियों का प्रदर्शन करते हुए प्रायोगिक अभ्यास भी करवाया। अणुव्रत समिति की अध्यक्ष शान्तिदेवी बरड़िया ने शिक्षकों को जीवन विज्ञान की गतिविधियों को विद्यालयों में निरन्तर बनाये रखने की प्रेरणा दी।

प्रार्थना सभा में जीवन विज्ञान पर प्रशिक्षण कार्यशाला

नयी दिल्ली। अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के जीवन विज्ञान विभाग के निर्देशन में अणुव्रत समिति दिल्ली द्वारा आचार्य तुलसी सर्वोदय विद्यालय, महरौली में 'प्रार्थना सभा में जीवन

विज्ञान' पर प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया गया। इसमें विद्यालय के लगभग 4500 विद्यार्थियों एवं 40 शिक्षकों ने सैद्धान्तिक जानकारी प्राप्त करने के साथ प्रायोगिक अभ्यास भी किया। प्रशिक्षण कार्य में जीवन विज्ञान प्रशिक्षिका सुनिता तातेड़ एवं ललिता पुगलिया का महत्वपूर्ण सहयोग रहा। कार्यशाला में विद्यालय स्टाफ के साथ अणुव्रत समिति दिल्ली के अध्यक्ष मनोज बरमेचा, पूर्व अध्यक्ष शान्तिलाल पटावरी, जीवन विज्ञान संयोजक बाबूलाल दूगड़ की उपस्थिति रही।

अणुव्रत समिति हिसार ने चलाया चुनावशुद्धि अभियान

हिसार। अणुव्रत समिति द्वारा हरियाणा विधानसभा चुनाव के दौरान सुभाष मार्केट में चुनावशुद्धि अभियान चलाया गया। इस अवसर पर समिति अध्यक्ष राजेंद अग्रवाल ने कहा कि चुनाव में

हर नागरिक को अपनी भागीदारी सुनिश्चित करनी चाहिए। शत प्रतिशत मतदान ही एक मजबूत लोकतंत्र का आधार है। ऐसे उम्मीदवार को चुनना चाहिए जो देश के संविधान में आस्था रखते हुए राष्ट्र की प्रगति को सर्वोपरि रखता हो। उन्होंने दुकानदारों, ऑटो चालकों व आमजन को चुनावशुद्धि अभियान संबंधी पैम्फलेट बाँटकर शत प्रतिशत मतदान के प्रति जागरूक किया। अभियान में दर्शनलाल शर्मा, अनिल जैन, इंद्रेश पांडे, डॉ. सतेंद्र यादव, जगदीश गर्ग, जयभगवान लाडवाल, विनोद जैन, सुनील मित्तल, सुंदर सिंह तथा अन्य गणमान्य व्यक्ति शामिल हुए।

रजत जयंती विशेषांक उपलब्ध

'बच्चों का देश' राष्ट्रीय बाल पत्रिका का रजत जयंती विशेषांक अब उपलब्ध है। 260 पृष्ठ के इस विशेषांक में आप पाएंगे गत 25 वर्षों में पत्रिका में प्रकाशित श्रेष्ठ रचनाओं का संकलन, पत्रिका के 25 वर्षों के सफर की यादें और राजसमंद में 16 से 18 अगस्त 2024 को आयोजित राष्ट्रीय बाल साहित्य समागम की विस्तृत रिपोर्ट।

नीचे दिये मोबाइल नंबर पर बात करें और अपनी प्रति आज ही मँगवाएँ - 9414343100

विशेषांक के बारे में अपनी राय से हमें इस नंबर पर अवगत कराएँ - 9351552651

अणुव्रत संरक्षक

श्रीमती मंजुला भंसाली
गंगाशहर-चिकमंगलूर

श्री अमरचंद दूगड़
कोलकाता-सरदारशहर

श्री तिलोक बच्छावत
सरदारशहर-पिंपरी चिंचवड़, पुणे

अणुविभा के अर्थ संबल अभियान में आपने 1 लाख रुपये अनुदान की सहभागिता कर अणुव्रत आंदोलन को सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

अणुविभा परिवार आपका हृदय से आभारी है।

अणुव्रत अमृत विशेषांक
पाठक परख

अणुव्रत आंदोलन के गौरवशाली 75 वर्षों की सफल सम्पूर्ति पर वर्ष पर्यन्त मनाये गये 'अणुव्रत अमृत महोत्सव' के क्रम में 'अणुव्रत' पत्रिका के मार्च-अप्रैल 2024 के संयुक्तांक को 'अणुव्रत अमृत विशेषांक' के रूप में प्रकाशित किया गया था। इस विशेषांक के संदर्भ में हमें देशभर से अभिभूत कर देने वाले संवाद और सम्मतियाँ प्राप्त हुईं जिन्हें पिछले 6 माह से हम निरंतर प्रकाशित करते आ रहे हैं। आप सब के स्नेह व समर्थन के हम हृदय से आभारी हैं। यह हमें आगे बढ़ने और इस प्रतिष्ठित प्रकाशन की मूल्यवत्ता को वृद्धिंगत करते रहने को प्रेरित करता है। 'पाठक परख' की शृंखला को हम **मनोहर चमोली 'मनु'** की इस विस्तृत समीक्षा के साथ यहीं विराम दे रहे हैं। धन्यवाद। - संपादक

बेहतर समाज का साहित्यिक ग्रन्थ है अणुव्रत अमृत विशेषांक

'अणुव्रत' मासिक पत्रिका है। प्रकाशन के उनहत्तर साल हो चुके हैं। साल दो हजार चौबीस का यह अंक मार्च-अप्रैल का संयुक्तांक है। यह विशेषांक बेजोड़ है। संग्रहणीय है। प्रणम्य भी। अंक बहुरंगीय है। आकर्षक है। पठनीय भी है। किसी भी पाठक के लिए चार सौ अट्ठानवे पन्ने पढ़ना श्रमसाध्य कार्य है। किसी भी सूरत में यह एक बैठक में पढ़ा भी नहीं जा सकता। यह आँखों के सामने रखे जाने वाला अंक है। बार-बार उलटने-पलटने के लिए है। कह सकते हैं जब भी बतौर इंसान कोई पाठक निराश-हताश हो और वह इस अंक के कुछ पन्ने उलट-पलट ले, पढ़ ले तो सुकून प्राप्त कर सकेगा, यह तय है।

यह अंक बेहतरीन गुणवत्ता के साथ पाठकों के हाथ में पहुँचा है। छपाई मनमोहक है। आवरण की आयु दीर्घजीवी है। भीतर के पन्ने उम्दा कागज पर तैयार हुए हैं। जिल्दसाजी भी कसौटी पर कसी हुई है। पत्रिका अमूमन सभी मानकों पर खरी उतरी है। यही कारण है कि वजन दो किलो से कम नहीं होगा।

'अणुव्रत' पत्रिका का यह विशेषांक अणुव्रत आंदोलन के 75 वर्ष के सफर पर केन्द्रित है। इसीलिए पत्रिका के इस अंक को 'अणुव्रत अमृत विशेषांक' कहा गया है। 'अहिंसक-नैतिक चेतना का प्रवर प्रतिनिधि अणुव्रत' अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी का मुख पत्र है। अणुव्रत आंदोलन ने अपने प्रवर्तन के 75 वर्ष पूरे किये हैं। संभवतः इस गौरवमयी उपस्थिति को वृहत्तम आकार देना भी एक ध्येय रहा होगा।

सोच रहा हूँ कि इसे मनुष्यता का 'आधुनिक ग्रन्थ' कहा जाये तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। अलबत्ता मैं इसे धर्म ग्रन्थ नहीं कहूँगा। चूँकि इस अंक में साहित्य भी है। समाज भी है। यथार्थ भी है। पिछले पिचहत्तर वर्षों का अणुव्रत आंदोलन केंद्रित इतिहासपरक अंश भी है। मौजूदा पर्यावरणीय चिन्ता भी है। चिन्तन भी है। ये सब कारण इसे किसी धर्म विशेष के ध्येयार्थ से मुक्त करते हैं। इस अंक पर दृष्टि डालें तो पाठकों की सहूलियत के लिए सामग्री को नौ भागों में बाँटा गया है। इक्कीस शुभकामना संदेश पत्रिका में शामिल हैं। कई सूबों के मुख्यमंत्रियों के सन्देश यहाँ पढ़े जा सकते हैं। दूसरे भाग में अणुव्रत आंदोलन केन्द्र में है। पाठक कई साध्वी-मुनियों के विचार-अनुभव यहाँ पढ़ सकते हैं। आचार्य तुलसी, आचार्य महाप्रज्ञ, आचार्य महाश्रमण से लेकर मुनि अनुशासन कुमार के विचार पाठक पढ़ सकते हैं। कुल मिलाकर बाईस अनुभवजनित आलेख इस भाग में संकलित हैं। आचार्य तुलसी के आलेख को ही पढ़ते हुए एक दृष्टि मिलती है। पत्रिका को हाथ में लेते हुए पढ़ने का हठात् जतन सरल लगने लगता है।

लोकप्रिय, पठनीय पत्रिकाओं की अपेक्षा यह अंक लगभग चालीस गुणा वजनी है। हाथ में आते ही पहली दृष्टि में पाठक के जेहन में यह सवाल आ सकता है कि आखिर इसे पढ़ा क्यों जाये? सरसरी तौर पर पन्ने उलटने पर बार-बार रुकना पड़ता है। शीर्षक, उपशीर्षक, उद्धरण उभरे हुए हैं। नजरें थम जाने को बाध्य होती हैं। देखने से इतर पठन की ओर जाने के लिए पाठक बाध्य हो जाता है।

अंक में आचार्य तुलसी का लेख है। उसका दसवां हिस्सा पढ़ते ही महसूस होने लगता है कि इस अंक के पाठकों को हासिल क्या होगा? संकीर्ण, मुनाफाखोर, व्यक्तिगत जीवन को खास तरजीह देने वाले मनुष्य इस अंक के पात्र नहीं हैं। बेहतर समाज के लिए चिंतित और मनुष्यता को सर्वोच्च प्राथमिकता देने वाले पाठक ही इस अंक की सामग्री को पढ़ने का प्रयास कर सकेंगे। संभवतः पत्रिका का मकसद मात्र पठनीय सामग्री परोसना नहीं है। अणुव्रत आंदोलन चाहता है कि मनुष्य के बेहतर होने की दिशा में लगातार बढ़ा जाये और प्राण छोड़ने से पहले मनुष्य शेष देहों में मनुष्यता के बीज बोकर जाये।

आचार्य तुलसी के प्रेरणा पाथेय का यह अंश द्रष्टव्य हैं -

"राष्ट्रीय चरित्र के संदर्भ में तीन बातें महत्वपूर्ण हैं- राजनैतिक बुराइयां, सामाजिक कुरूढ़ियां और दुर्व्यसन। राजनीति से अलिप्त रहकर भी अणुव्रत ने राजनीति पर प्रभाव छोड़ा है। दलबदल की नीति, स्वार्थपरता और वोटों के विक्रय पर अणुव्रत ने जितना तीखा प्रहार किया है, शायद ही किसी आन्दोलन ने किया हो। संसदीय अणुव्रत मंच द्वारा आयोजित कार्यक्रम में सांसदों को जो खरी-खरी बातें सुनने को मिलीं, उनकी पलकें झुक गयीं। उस वातावरण ने वहाँ उपस्थित सभी सांसदों को अपना आत्मनिरीक्षण करने के लिए विवश कर दिया। सामाजिक कुरूढ़ियों से समाज इतना जर्जर और सत्वहीन बन जाता है कि वह युग की किसी चुनौती को झेल ही नहीं सकता। अंधविश्वासों के चौखटे में पनपने वाली न जाने ऐसी कितनी कुरूढ़ियां हैं, जो सामाजिक विकास के आगे बाधाएं बनकर खड़ी हो जाती हैं। जन्म, विवाह, मृत्यु आदि जीवन के ऐसे कौन-से प्रसंग हैं, जिनसे संबंधित कुरूढ़ियां समाज की पीड़ा नहीं हैं। आर्थिक दृष्टि से बोझिल और अर्थहीन रूढ़ परम्पराओं के खिलाफ अणुव्रत के बगावती चरण आगे बढ़े। फलतः आज भारत की धरती पर अणुव्रत से संस्कारित परिवारों में अशिक्षा, पर्दा, मृत्युभोज, मृत्यु के प्रसंग में प्रथा रूप में रोना, बाल-विवाह, वृद्ध-विवाह, विधवा स्त्री अवमानना आदि परम्पराएं चरमराकर टूट गयी हैं। दहेज और प्रदर्शन की समस्याएं आज भी ज्वलन्त हैं। अणुव्रत इस दिशा में भी सतर्क है। अणुव्रती परिवारों में दहेज का ठहराव किसी भी स्थिति में नहीं होता।"

इस अंक के लिए रचना सामग्री जुटाना किसी भागीरथ प्रयास से कम नहीं रहा होगा। सम्पादक, उपसम्पादक के साथ टाइपसेटिंग, चित्रांकन, साज-सज्जा का अनुभव पत्रिका में स्पष्ट दिखायी दे रहा है। नियमित मासिक अंक का मूल्य यूँ तो साठ रुपये है। लेकिन इस संयुक्तांक का मूल्य इन्हीं सब कारणों से दो सौ रुपये बन पड़ा है। यह मूल्य वास्तविक से काफी कम लगता भी है।

इस अंक में अट्ठाईस विचारोत्तेजक लेख भी हैं। वे विविधता से भरे हैं। पर्यावरण, मानव शरीर, ध्येय, शिक्षा, समानता, शांति, संवैधानिक मूल्य, अपराध, मानवीय कुरीतियाँ, वैज्ञानिक दृष्टिकोण और रूढ़ियाँ, बढ़ती आपाधापी और मनोरोग, सामाजिक असमानता, समरसता की आवश्यकता, प्रकृति, समाज में बढ़ते असामान्य व्यवहार आदि विषयों पर ये केंद्रित हैं।

मुनि सुखलाल के लेख का एक अंश-"ओजोन को नष्ट करने वाली दो प्रमुख चीजें हैं- नाइट्रिक ऑक्साइड तथा क्लोरीन ऑक्साइड। अधिक ऊँचाई पर उड़ने वाले सुपरसोनिक जेट विमान नाइट्रिक ऑक्साइड पैदा करते हैं। उससे ओजोन को नुकसान पहुँचता है, पर नाइट्रिक एसिड से भी ओजोन को ज्यादा खतरा है क्लोरीन ऑक्साइड से। क्लोरीन ऑक्साइड का निर्माण फ्लुओरोकार्बन नामक रसायन से होता है। फ्लुओरोकार्बन प्राकृतिक रसायन नहीं है। इसे मनुष्य ने बनाया है। यह फ्लुओरीन और कार्बन का यौगिक है। यह उच्च तापमान को झेल सकता है, अतः अत्यंत टिकाऊ है। इसीलिए अनेक उद्योगों में इसका व्यापक उपयोग होता है। ये फ्लुओरोकार्बन वायुमंडल में पहुँचकर हवा के अन्य अणुओं के साथ मिलकर सारी दुनिया में फैल जाते हैं। वैज्ञानिकों का मत है कि ये 50 से 900 वर्ष तक नष्ट नहीं होते तथा धीरे-धीरे ऊपर समताप मंडल-ओजोन तक पहुँच जाते हैं तथा यहाँ पराबैंगनी किरणों के प्रभाव से इनके बंधन टूट जाते हैं और इस प्रक्रिया में क्लोरीन मुक्त परमाणु उपलब्ध हो जाते हैं। क्लोरीन के ये मुक्त परमाणु ओजोन के अणुओं को लगातार तोड़ते चले जाते हैं। यह क्रिया लम्बे समय तक चलती रहती है। वैज्ञानिक गणनाओं के अनुसार क्लोरीन का प्रत्येक परमाणु ओजोन के एक लाख अणुओं को नष्ट करता है। इस तरह औद्योगीकरण के कारण समूची पृथ्वी पर भयंकर प्रदूषण फैल रहा है।"

कुमार प्रशांत का सम्पूर्ण लेख ही बारम्बार पढ़ने योग्य है। मननीय भी है और अनुकरणीय भी है। उन्होंने आरोन बुश्नेल और एलेक्सी नवलनी का उल्लेख करते हुए पाठकों का ध्यान मनुष्यता और पाशविकता के बीच अन्तर समझने का द्वंद्व देने का सफल प्रयास किया है। एक अंश-"अधिकाधिक संवैधानिक अधिकार अपनी मुट्ठी में कर लेने तथा अपने लिए आजीवन राष्ट्रपति का पद सुरक्षित कर लेने के साथ ही पुतिन की बर्बरता बढ़ गयी। चापलूस नौकरशाही, क्रूर व स्वार्थी पुलिस तथा चप्पे-चप्पे को सूँघते जासूसी संगठन के बल पर पुतिन ने रूस को 'साम्यवादी तानाशाही' का नया ही नमूना बना दिया। फिर भी नवलनी के समर्थकों तथा पुतिन विरोधी दूसरी ताकतों ने असहमति की आवाज दबने नहीं दी। ऐसी हर आवाज को जेल से नवलनी का समर्थन मिलता रहा। बात तेजी से तब बदली जब पुतिन ने यूक्रेन पर हमला किया। नवलनी ने इस हमले का जोरदार प्रतिवाद किया।"

इसी क्रम में रमेशचंद शर्मा का लेख 'भविष्य की आशा है जल स्वराज' भी पठनीय है। एक अंश-"प्रकृति ने जल के विभिन्न भंडार, स्रोत, साधन बनाये। मनुष्य ने जल तथा जल भंडारों को अपने कब्जे में लेकर उपयोग, प्रयोग, उपभोग, व्यापार, दोहन, शोषण प्रारंभ किया। इसके लिए नये-नये रास्ते खोजे, बनाये। पानी जो सबको सर्वसुलभ था, उसे स्वार्थ पूर्ति के लिए महँगा एवं दुर्लभ बनाया जा रहा है। कुछ स्थानों पर दूध से भी महँगा पानी बेचा जा रहा है। जल के साथ भारी, भयंकर छेड़छाड़ जारी है। सत्ता, तकनीकी का सहारा लेकर इसमें गति लायी गयी है। स्थानीय शक्तियों के साथ-साथ अब तो बहुराष्ट्रीय कंपनियां, शक्तियां, व्यापारी, राजनेता, वैज्ञानिक, उद्योगपति, नेता, ठेकेदार, अधिकारी जल के पीछे हाथ धोकर पड़े हैं। जल को प्यास बुझाने, जीवन चलाने के बजाय व्यापार, लाभ, लोभ, लालच, दोहन, शोषण का माध्यम बनाया जा रहा है। जल पर किसी भी तरह कब्जा करने की होड़ लगी है।"

पत्रिका में वर्षा भम्भाणी मिर्ज़ा का आलेख 'वैज्ञानिक युग में कुरूढ़ियों की प्रासंगिकता!' भी शामिल है। यह इस पत्रिका में बेजोड़ आलेख है। ऐसे आलेखों की नितांत आवश्यकता है। वह लिखती हैं-"समाज का बड़ा हिस्सा अपनी समस्याओं को भाग्य बताकर स्वीकारता जाता है। ये बेड़ियां उसे कई पीढ़ियों तक जकड़े रहती हैं। शोध बताते हैं कि जो देश समृद्ध हैं और जहाँ नागरिकों की सामाजिक सुरक्षा का जिम्मा सरकार का है, वे अपेक्षाकृत कम रूढ़िवादी हैं।"

इसी अंक में कथा-संसार के तहत पाँच सुप्रसिद्ध साहित्यकारों समीर उपाध्याय, कृष्ण बिहारी पाठक, सुकीर्ति भटनागर, प्रकाश मनु और सुमन बाजपेयी की रचनाएँ हैं। काव्य सुधा के तहत जय चक्रवर्ती, इकराम राजस्थानी, विष्णुकांत झा, डॉ. रामनिवास मानव, सतीश उपाध्याय, वीणा जैन, वसीम अहमद नगरामी, हरदान हर्ष, डॉ. कीर्ति काले, डॉ. विष्णु शास्त्री 'सरल' और अशोक रावत की रचनाएं शामिल हैं।

इस अंक में 'अपने अनुभव : अपने विचार' के तहत तिरपन कलमकारों, संस्कृतिकर्मियों, अनुभवी समाजसेवियों और शिक्षाविदों के लेख शामिल हैं। डॉ. सोहनलाल गांधी लिखते हैं-"आज सारा विश्व धर्मों और जातियों में विभक्त है, लेकिन हमें यह भी याद रखना चाहिए कि हम जैन, हिन्दू एवं मुस्लिम से पहले इंसान हैं। अतः एक-दूसरे के धर्म के प्रति सहिष्णुता जरूरी है। दुनिया में एक ही जाति है, वह है मनुष्य जाति। अणुव्रत रूपी ये लक्ष्मण रेखाएं हमें विभाजन से बचाती हैं।"

डॉ. निजामुद्दीन लिखते हैं-"पारिस्थितिकी का संरक्षण सबकी जिम्मेदारी है। परिग्रह की विनाश लीला सबके सामने है। बार-बार काले धन की, अकूत सम्पत्ति जमा करने की , ईडी के निरंतर छापों की , बलात्कार की बातें सबके सामने हैं। अणुव्रत आंदोलन इन सबको नकारता है। स्वस्थ समाज की संरचना में विश्वास करता है।"

अट्ठाईस पन्नों में पिचहत्तर साल के आंदोलन की अमृत यात्रा की झलकियाँ भी पूरी मुहिम को समझने के लिए पर्याप्त हैं। इस अंक में पाठक यह भी जान सकते हैं कि अणुव्रत आंदोलन सिर्फ अपनी उपलब्धियों और समाज में सामाजिक सरोकारों के लिए ही प्रतिबद्ध नहीं है। वह समग्रता में जानी-मानी लोकप्रिय एवं मानीखेज सामाजिक कार्यों को पहचान कर व्यापक पैमाने पर कामों की सराहना भी करता है।

अणुव्रत पुरस्कार, अणुव्रत गौरव, अंतरराष्ट्रीय शांति पुरस्कार, अणुव्रत लेखक पुरस्कार, जीवन विज्ञान पुरस्कार की व्यापक जानकारी भी अंक में है। अणुव्रत की आधारभूमि को आठ उप भागों में यहाँ शामिल किया गया है। पैंसठ पन्नों में 'अणुव्रत अमृत वर्ष : एक विहंगावलोकन' का पूरा परिदृश्य पाठकों के सामने रखने का सफल प्रयास किया गया है। इसके साथ-साथ अणुविभा, उसका अंतरराष्ट्रीय अभियान, प्रकाशन कार्य, महासमिति, अणुव्रत न्यास, शिक्षक संसद, संस्कार निर्माण समिति, अणुव्रत ग्राम भारती सहित अणुव्रत आंदोलन से जुड़े विज्ञापनदाताओं को भी पाठकों के सामने सहजता से प्रस्तुत किया गया है।

अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट 2024 की जानकारी भी पत्रिका में है। कक्षा तीन से आठ और कक्षा नौ से बारह के विद्यार्थियों को चित्रकला, निबंध, गायन, भाषण और कविता के क्षेत्र में सुनहरा अवसर दिये जाने का विचार सराहनीय है।

सर्वविदित है कि इस अंक का प्रकाशन खास मकसद के लिए किया गया है। बहुत ही संवेदनशील व्यक्तित्व सोसायटी का हिस्सा हैं। संभव हो सकता था कि प्राप्त विज्ञापनों को एक साथ अंत में दिया जा सकता था। यह भी कि प्रत्येक चौथे पन्ने में बॉक्स में अणुव्रत अमृत महोत्सव का हाईलाइटर अखरता है। इससे बचा जा सकता था। साज-सज्जा यूँ तो बेहतर है। हर रचना के रचनाकार का परिचय भी दिया गया है लेकिन उसे अण्डरलाइन किया गया है। वह नहीं किया जाता और उन पंक्तियों को इटैलिक या बोल्ड किया जा सकता था। प्र, तु, व्र, तृ, स्व, श्रु जैसे वर्णों से बने शब्दों को अण्डरलाइन करना आँखों को भ्रमित करता है। पत्रिका में चित्रों का भरपूर प्रयोग किया गया है। लेकिन, कहीं-कहीं कम्प्यूटर ग्राफिक्सयुक्त चित्र स्तर को कम करते हैं।

पत्रिका की सामग्री को दो कॉलम में रखा गया है। यह बहुत ही वैज्ञानिक है और पठनीयता में रोचकता बनाये रखता है। लेख की सामग्री को इस तरह से व्यवस्थित किया गया है कि पाठक को वह बोझिल न लगे। ठूंसने के प्रयास से बचा गया है। यह बेहद अनुभव से और बार-बार ले आउट में प्रयोग करने से ही संभव होता है। कुछ कार्टून भी पत्रिका में शामिल हैं। यह सराहनीय है। अलबत्ता बाल साहित्य की कमी खलती है। कुछ सामग्री बाल साहित्य के तौर पर दी जा सकती थी।

एक अंक में एक सौ बीस से अधिक लेखकों की सामग्री को व्यवस्थित करना बेहद श्रमसाध्य कार्य है। उससे पूर्व लेखकों से सम्पर्क करना, संबंधित विषय के लिए लिखवाना आज की तिथि में आसान कार्य नहीं है। पुनः सम्पादक और उप सम्पादक सहित पूरी सहयोगी टीम को शुभकामनाएँ देना एक कर्त्तव्य हो जाता है।

...और अन्त में यह भी कहना चाहूँगा कि वर्तमान समय में जब सोशल मीडिया में झूठ और भ्रम गुणित अनुपात में तीव्रता के साथ फैलाया और परोसा जा रहा है, तब छपी हुई सामग्री की और भी जिम्मेदारी बढ़ जाती है। ऐसी जिम्मेदारी भरे हर कदम के साथ कदम मिलाये जाने की महती जरूरत है।

आनंदीबेन पटेल
राज्यपाल, उत्तर प्रदेश

राज भवन
लखनऊ - 226 02
अप्रैल, 2024

प्रिय महोदय,

अणुव्रत विश्वभारती सोसाइटी द्वारा अणुव्रत आंदोलन के 75 वर्ष पूर्ण होने पर आयोजित 'अणुव्रत अमृत महोत्सव' के अवसर पर प्रकाशित पत्रिका 'अणुव्रत अमृत विशेषांक – 2024' की प्रति प्राप्त हुई, धन्यवाद।

पुस्तक में अणुव्रत आंदोलन के दौरान किये गये रचनात्मक कार्यक्रमों का सजीव चित्रण, सराहनीय है। मुझे विश्वास है कि पुस्तक पाठकों के लिये अणुव्रत दर्शन के संबंध में ज्ञानवृद्धि में उपयोगी सिद्ध होगी।

शुभकामनाओं सहित,

(आनंदीबेन पटेल)

श्री अविनाश नाहर,
अध्यक्ष,
अणुव्रत विश्व भारती सोसाइटी,
210 दीनदयाल उपाध्याय मार्ग,
नई दिल्ली–110002

दैनिक मृदुल पत्रिका | राजस्थान

संस्कृति व जीवन मूल्यों की पुनर्स्थापना के 75 वर्षों का सफर है अणुव्रत अमृत विशेषांक

अणुव्रत अमृत विशेषांक

समीक्षक डॉ. दिलीपजी धींग
(शोध प्रमुख : जैन विद्या विभाग, सुगन जैन महाविद्यालय)

भगवान महावीर ने गृहस्थ के लिए अणुव्रत का विधान किया। उन्हीं अणुव्रतों के आधार पर आचार्य तुलसी ने युगीन शैली में 1949 में अणुव्रत आन्दोलन का प्रवर्तन किया। यह आंदोलन एक जीवित और जीवंत आंदोलन है, जो पिछले 75 वर्षों से जन-जन को अहिंसा, संयम और नैतिकता के मार्ग पर अग्रसर होने की प्रेरणा दे रहा है। मार्च-2023 से मार्च-2024 तक अणुव्रत आंदोलन का अमृत वर्ष मनाया गया। इस उपलक्ष्य में देशभर में विविध आयोजन हुए। आयोजनों की श्रृंखला में अणुव्रत आंदोलन का मुखपत्र 'अणुव्रत' (मासिक) के अणुव्रत अमृत विशेषांक का प्रकाशन एक यादगार उपलब्धि है। अणुव्रत विश्व भारती द्वारा प्रकाशित 496 पृष्ठों का यह विशेषांक विषयानुसार नौ वर्गों में वर्गीकृत है। इसमें लगभग सवा सौ लेखकों, कवियों और विद्वानों के लेख, कविताएं और विचार

अच्छा साहित्य समाज निर्माण एवं स्मृतियों में ताजा रहता है डॉ रत्नू की साहित्य पर समीक्षात्मक टिप्पणियां!

जयपुर, राजस्थान | सम्पादकीय | न्यूज़ संजीव

"अणुव्रत अमृत विशेषांक" संस्कृति व जीवन मूल्यों की पुनर्स्थापना के 75 वर्ष का सफर

द्विभाषी पत्रिका 'सिपली जयपुर' के अगस्त-सितंबर, 2024 संयुक्तांक में मैंने सद्य प्रकाशित दो महत्वपूर्ण किताबों और एक पत्रिका के महाविशेषांक का परिचय दिया है.

"अणुव्रत अमृत विशेषांक" संस्कृति व जीवन मूल्यों की पुनर्स्थापना के 75 वर्ष का सफर

शब्दों की दुनिया से

"अणुव्रत जीवनशैली" विशेषांक : मनुष्य को नैतिक जीने की कला सिखाता अणुव्रत

Services offered

Domestic Courier Cargo
Full Truck Movement
PTL
Intentional

AGC International

Celebrating 33 YEARS 1989-2022

AGC

AkashGanga®

Integrity at work

ISO 9001:2008 Certified Company

AKASH GANGA COURIER LIMITED

Corporate office : 807, Block-k2, Behind Maruti Showroom,
Near Maruti Workshop, Vasant Kunj Road, Mahipalpur,
New Delhi-110037 E-mail : delhi@akashganga.info

Regional Office : Ahemdabad • Banglore • Chennai
Jaipur • Kolkata • Mumbai • Patna • Siliguiri • Surat

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी

के गौरवशाली प्रकाशन

1 जनवरी
2025
से प्रारम्भ...!

'अणुव्रत'

पत्रिका के **70** वें वर्ष में

सदस्यता अभिवृद्धि

के आकर्षक अभियान से जुड़िये...

इस मुहिम में अणुव्रत समिति और अणुव्रत मंच के साथ-साथ रुचिशील सज्जन व्यक्तिगत स्तर पर भी जुड़ सकते हैं।

- अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें -

+91 98290 52452, +91 91166 34512, +91 9414343100

ANUVRAT
RNI No. 7013/57
November, 2024

Delhi Postal Regd. No. DL(C)-01/1261/2024-26
Licence No. U(C)-215/2024-26
Licenced to post without pre-payment
Date of Publication 25/10/2024
Posted at Delhi PSO Delhi-6 on 28-29 of the Advance Month

प्रकाशक एवं मुद्रक **संचय जैन** द्वारा स्वत्वाधिकारी **अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी** की ओर से श्री साई शिवानी प्रिंटर्स, बी-198, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेज-1, नई दिल्ली-110020 के लिए एड किंग डी-55/बी, हर्ष नगर, हरि नगर, ओखला फेस-1, नई दिल्ली-110020 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002 से प्रकाशित। संपादक - **संचय जैन**